संस्कृत-भारती





प्रकाशक :

श्री रत्न जैन पुस्तकालय,

आचार्य श्री आनन्दऋषिजी म. मार्ग

अहमदनगर-४१४००१ (महाराष्ट्र)

संस्कृत-भारती

द्वितीय प्रकाशन—

१९८६

●

पन्ने १३८

●

मूल्य—

रुपये १२

●

मुद्रक—

श्री सुधर्मा मुद्रणालय

आचार्य श्री आनन्दऋषिजी महाराज मार्ग

अहमदनगर, ४१४००१ (महाराष्ट्र)

निवेदन-

संस्कृत प्राकृत की सहभाषा है। जैनागमों में प्रयुक्त प्राकृत भाषा को सुचारु रूप से समझने के लिए समानार्थी संस्कृत-शब्दरूपों का ज्ञान परमावश्यक है। इसी तथ्य को ध्यान मे रखकर जैन सिद्धान्त विशारद के विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत पुस्तक का चयन किया गया है।

यथाशक्य यह प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों की ज्ञानवृद्धि के लिए आवश्यक सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराई जाय। एतदर्थ शब्दों एवं धातुओं के रूप, उनका प्रयोग और दैनिक व्यवहार मे आने वाले शब्दों की पारिभाषिक शब्दावली (Technical Terminology) दी गई है।

स्व. पूज्यपाद आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज की सत्प्रेरणा से पुस्तक का परिष्कृत रूप प्रस्तुत कर सकना सम्भव हो सका है। इस पुस्तक के सम्पादन और प्रकाशन में आपने जो प्रेरणा और स्फूर्ति प्रदान की है उसके लिए परीक्षा बोर्ड परिवार आपका सदैव ऋणी रहेगा।

पूज्य आचार्य श्री के अन्तेवासी शिष्य श्रमण सघीय मंत्री प. रत्न मुनिश्री कुन्दनऋषिजी महाराज प्रस्तुत्य पुस्तक के प्रकाशन मे मार्गदर्शन किया है।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रथम संस्करण समाप्त हो जाने के कारण द्वितीयावृत्ति का प्रकाशन करते हुए हृदय मे प्रमोद हो रहा है।

विद्यार्थियो के लिए अनेक मगल-कामनाओं के साथ।

पं. चन्द्रभूषण मणि त्रिपाठी
परीक्षाधिकारी
श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, अहमदनगर

विषय-सूची

॥ नमः श्रीजिनेन्द्रपादपद्मेभ्य ॥

प्रथमः पाठः

सामान्य–ज्ञान

वर्ण-माला–हिन्दी की वर्णमाला ही प्रायः संस्कृत की वर्णमाला है।

वर्ण-विभाग- हिन्दी के समान ही संस्कृत में वर्णों के दो रूप है–

स्वर और व्यञ्जन ।

अच्–संस्कृत में स्वरों को अच् भी कहा जाता है ।

हल्-संस्कृत मे व्यञ्जनों को हल् भी कहा जाता है।

वर्ण का उच्चारण–संस्कृत मे प्रत्येक वर्ण का परिचय के रूप में उच्चारण करते समय उसके साथ 'कार' लगा दिया जाता है। जैसे 'अ' का परिचय कराते समय 'यह अ है' यह न कहकर 'यह अकार है' कहा जाता है। इसी प्रकार अन्य वर्णो का उच्चारण करते समय भी कहा जाता है। जैसे :-

अ	=	अकार	आ	=	आकार
इ	=	इकार	ई	=	ईकार
उ	=	उकार	ऊ	=	ऊकार
ऋ	=	ऋकार	ॠ	=	ॠकार
ए	=	एकार	ऐ	=	ऐकार
ओ	=	ओकार	औ	=	औकार
क	=	ककार	ख	=	खकार आदि।

शब्द का परिचय–जिस शब्द के अन्त में जो वर्ण होता है उसी के साथ अन्त शब्द लगाकर उस शब्द का परिचयात्मक उच्चारण किया जाया करता है। जैसे :–

यदि यह कहना हो कि '**यह राम शब्द है**' तो कहा जाएगा–यह **अकारान्त राम शब्द है**। क्योकि राम शब्द का अन्तिम वर्ण 'अ' है (र्+आ+म्+अ = राम) इसी प्रकार :–

अ अन्त वाले शब्द अकारान्त कहलाते है। राम देव,
आ अन्त वाले शब्द आकारान्त कहलाते हैं। रमा, सत्या,
इ अन्त वाले शब्द इकारान्त कहलाते है। हरि, मति, कवि।
ई अन्त वाले शब्द ईकारान्त कहलाते है। नदी, सती, स्त्री।
उ अन्त वाले शब्द उकारान्त कहलाते है। भानु, गुरु, प्रभु।
ऊ अन्त वाले शब्द ऊकारान्त कहलाते हैं। वधू, श्वश्रू।
ऋ अन्त वाले शब्द ऋकारान्त कहलाते हैं। मातृ, पितृ, भ्रातृ।
ए अन्त वाले शब्द एकारान्त कहलाते हैं। ऋते, कृते।
ऐ अन्त वाले शब्द ऐकारान्त कहलाते हैं। रै (धन)
ओ अन्त वाले शब्द ओकारान्त कहलाते हैं। गो (गौ)
औ अन्त वाले शब्द औकारान्त कहलाते हैं। ग्लौ (चन्द्र)

स्वर अन्त वाले शब्दों को अजन्त शब्द भी कहा जाता है।

हलन्त शब्द–जिन शब्दों के अन्त में कोई व्यञ्जन हो वे हलन्त शब्द कहलाते है। जैसे :-सरित्, वाच्, काम-धुक् आदि।

लिंग ज्ञान

लिंग– संस्कृत के समस्त शब्द तीन लिगों में विभक्त हैं:–

पुलिंग– राम, शिष्य, गुरु, स्वामिन्, आदि।

स्त्रीलिंग– रमा, सुता, मातृ, नदी, स्त्री आदि।

नपुंसकलिंग–धन, ज्ञान, शरीर, अग, मुख आदि।

वचन

वचन–संस्कृत में प्रत्येक संज्ञा शब्द, सर्वनाम शब्द, विशेषण शब्द और क्रिया रूपों का तीन रूपों मे प्रयोग किया जाता है:–

एक वचन–जब वस्तु या व्यक्ति एक हो या क्रिया एक द्वारा की जा रही हो।

द्विवचन–जब वस्तु या व्यक्ति दो हो या क्रिया दो के द्वारा हो रही हो।

बहुवचन-जब वस्तु या व्यक्ति तीन या तीन से अधिक हों या क्रिया तीन या तीन से अधिक व्यक्तियों के द्वारा की जा रही हो ।

अव्यय-संस्कृत मे ऐसे शब्दों को अव्यय कहा जाता है जिनका काल, वचन, लिंग आदि की दृष्टि से रूप नही बदलता । जैसे :-नक्तम् (रात मे), दिवा (दिन मे), अद्य (आज), श्वः (कल) आदि ।

धातु-क्रिया के मूल रूप को धातु कहा जाता है । जैसे-'पठति' (पढता है) यह क्रिया शब्द है और इसका मूल रूप पठ् है, अतः पठ् धातु है ।

पुरुष

पुरुष-क्रिया के साथ कर्ता के रूप में प्रयुक्त होनेवाले शब्द पुरुष कहलाते है । पुरुष तीन है :-

प्रथम पुरुष-प्रथम पुरुष को अन्य पुरुष भी कहा जाता है । कोई भी संज्ञा वाचक शब्द और सर्वनाम शब्द जब क्रिया के कर्ता के रूप में आता है तब उसे 'अन्य पुरुष' कहा जाता है । जैसे :-राम पढता है, वह पढता है, कृष्ण पढा था, जो पढ रहा है ।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्द अन्य पुरुष हैं । अन्य पुरुष के साथ प्रयुक्त होनेवाली क्रिया भी 'अन्य पुरुष-क्रिया' कहलाती है ।

मध्यम पुरुष-त्वं (तूं), युवां (तुम दोनों) और यूयं (तुम सब) ये तीनों कर्ता मध्यम पुरुष कहलाते है और इनके साथ प्रयुक्त होनेवाली क्रिया भी 'मध्यम पुरुष' क्रिया कहलाती है ।

उत्तम पुरुष-अहं (मैं), आवां (हम दोनों), वयं (हम सब) ये तीनों कर्ता उत्तम पुरुष और इनके साथ प्रयुक्त होनेवाली क्रिया भी उत्तम पुरुष क्रिया ही कही जाती है ।



द्वितीयः पाठः

अकारान्त पुंल्लिग शब्दों का प्रयोग

कारक–सस्कृत मे प्रत्येक शब्द का प्रयोग सात कारको के रूप में तथा सम्बोधन के रूप में किया जाता है। कारक सात है। यद्यपि संस्कृत में सम्बन्ध को कारक नही माना गया, किन्तु हमने सुविधा की दृष्टि से उसे कारक मान लिया है। हम आगे के अध्यायो मे प्रत्येक कारक का क्रमशः उदाहरण सहित ज्ञान प्राप्त करेंगे।

कर्ता कारक

(१) कर्ता–क्रिया को करने मे जो स्वतन्त्र हो-दूसरे शब्दों में क्रिया करनेवाले को कर्ता कहा जाता है। हिन्दी मे हम किसी भी शब्द के साथ 'ने' लगाकर उसके कर्ता होने का परिचय देते है। जैसे:–'शिष्य ने पुस्तक पढी' इस वाक्य मे 'शिष्य' कर्ता है।

कभी-कभी कर्ता के साथ 'ने' का चिन्ह नहीं भी लगाया जाता। जैसे :–'राम पुस्तक पढता है' इस वाक्य में राम कर्ता है, परन्तु उसके साथ 'ने' चिन्ह नही है।

विशेष–संस्कृत में अकारान्त पुंलिग शब्दों का कर्ता के रूप में प्रयोग करने के लिये उन्हें निम्नलिखित रूपों मे बोला और लिखा जाता है :–

(कर्ता कारक को **प्रथमा** विभक्ति भी कहा जाता है।)

प्रथमा विभक्ति	कर्ता कारक	शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
,,	,,	राम	रामः	रामौ	रामाः
,,	,,	देव	देवः	देवौ	देवाः
,,	,,	छात्र	छात्रः	छात्रौ	छात्राः
,,	,,	शिष्य	शिष्यः	शिष्यौ	शिष्याः
,,	,,	कृष्ण	कृष्णः	कृष्णौ	कृष्णाः
,,	,,	श्रावक	श्रावकः	श्रावकौ	श्रावकाः
,,	,,	सिंह	सिंहः	सिंहौ	सिंहाः
,,	,,	खग (पक्षी)	खगः	खगौ	खगाः

प्रत्यय ज्ञान

एक वचन बनाने के लिये शब्द के आगे विसर्ग (:) लगाएँ।

द्विवचन बनाने के लिए शब्द के अन्तिम अ को औ बनादें।

बहुवचन में शब्द के अन्तिम अ को आ बनाकर उसके आगे विसर्ग लगा दें।

अव्यय—

१ अद्य—आज	६ ह्यः—कल (बीता हुआ)
२ अधुना—अब	७ श्वः—कल (आगामी)
३ साम्प्रतम्—अब	८ परश्वः—परसो (आगामी)
४ इदानीम्—अब	९ प्रातः—सवेरे
५ अधुनैव—अभी ही	१० नक्तम्—रात में

अभ्यास—नीचे लिखे शब्दों के कर्ता कारक के तीनों वचनों में रूप लिखिए:—

धर्म	महावीर	पार्श्वनाथ	भक्त
वालक	वानर	इन्द्र	असुर
पूजित	आर्य	शिव	रद (दांत)
परिव्राजक	जनक	श्रेष्ठ	महाकाय
श्रावक	अनुज	पुरुष	युवक
वृद्ध	अग्रज	मृत	पण्डित
जीव	भूप	उपकारक	जीवित



तृतीयः पाठः

सर्वनाम शब्दों से कर्ता के रूप

सर्वनाम शब्द—सर्वनाम इस शब्द का सामान्य अर्थ है—सब का नाम, क्योंकि सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी भी संज्ञा शब्द के स्थान पर किया जा सकता है, इसलिये इन्हें सर्वनाम कहा जाता है।

नीचे कुछ सर्वनाम शब्द, उनके अर्थ और उनके कर्ता कारक के तीनों लिगों मे रूप दिए जाते हैं।

अस्मद्-(में) (इस शब्द के तीनों लिंगों में समान रूप बनते हैं।)
कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)-

अहं	आवां	वयं
अर्थ-(मै, मैने)	(हम, हम दोनो ने)	(हम, हम सब ने)

युष्मद्-(तू) (इस शब्द के भी तीनों लिंगों में समान रूप होते हैं।)
कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

त्वं	युवां	यूयं
अर्थ-(तू, तूने)	(तुम, तुम दोनों ने)	(तुम तुम सब ने)

विशेष-

यत्, किम् और तत् इन शब्दों की रूप रचना करते समय पुंल्लिग और स्त्रीलिंग मे अन्त्य वर्ण का लोप हो जाता है।

यत्-(जो)

पुंल्लिग	यः	यौ	ये
स्त्रीलिंग	या	ये	याः
नपुंसकलिग	यत्	ये	यानि

किम्-(कौन)

पुंल्लिग	कः	कौ	के
स्त्रीलिंग	का	के	काः
नपुंसकलिग	किम्	के	कानि

तत्-(वह)

पुंल्लिग	सः	तौ	ते
स्त्रीलिंग	सा	ते	ताः
नपुंसकलिग	तत्	ते	तानि

सर्व–(सब)

पुल्लिग	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
स्त्रीलिग	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
नपुंसकलिंग	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

अव्यय– १. यत्र–जहां
२. अत्र–यहां
३. तत्र–वहां
४. कुत्र–कहां
५. सर्वत्र–सब जगह
६. अपि–भी
७. यदा–जब
८. तदा–तब
९. कदा–कब
१०. सर्वदा–हमेशा
११, सदा–हमेशा
१२. च–और

अभ्यास–नीचे लिखे शब्दों के अर्थ, विभक्ति और वचन लिखिए–

शब्द	अर्थ	विभक्ति	वचन
रथौ	–	–	–
युवकाः	–	–	–
परिव्राजकः	–	–	–
वृद्धाः	–	–	–
यानि	–	–	–
वयं	–	–	–
आवां	–	–	–
यूयं	–	–	–
के	–	–	–

चतुर्थः पाठः

क्रिया रूपों की रचना

धातु–क्रिया के मूल रूप को धातु कहा जाता है।

लट् लकार- संस्कृत में वर्तमान काल के लिए पारिभाषिक शब्द है 'लट्' अथवा 'लट्लकार'। जब हम कहते है कि 'पठ्' धातु की लट्लकार मे रूप–रचना कीजिए– तो हमारा तात्पर्य यह होता है कि पठ् धातु की वर्तमान काल सूचक रूप रचना कीजिए।

हम प्रथम अध्याय मे तीन पुरुषों का परिचय दे चुके है। प्रत्येक लकार मे एक वचन, द्विवचन और बहुवचन के क्रम से तीनों पुरुषो मे भिन्न–भिन्न रूप बनते है। जैसे–

गम् (इसका अर्थ है जाना)

विशेष– (गम् धातु की लट्लकार में रूप रचना करते समय गम् के स्थान मे 'गच्छ्' हो जाता है।)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

कर्ता और क्रिया के मेल की रीति

प्रथम पुरुष–किसी भी सज्ञा शब्द, सर्वनाम शब्द और विशेषण शब्द के कर्ता कारक के तीनों वचनों के रूप प्रथम पुरुष के तीनों वचनों के क्रमशः कर्ता वन जाते हैं। जैसे–

रामः गच्छति	रामौ गच्छतः	रामाः गच्छन्ति
(राम जाता है)	(दो राम जाते है)	(सब राम जाते है)
छात्रः गच्छति	छात्रौ गच्छतः	छात्राः गच्छन्ति
(छात्र जाता है)	(दो छात्र जाते है)	(सब छात्र जाते हैं)

सर्वनाम–स गच्छति (वह जाता है) | तौ गच्छतः (वह दोनों जाते है) | ते गच्छन्ति (वे सब जाते है)

कः गच्छति (कौन जाता है) | कौ गच्छतः (कौन दो जाते हैं) | के गच्छन्ति (कौन सब जाते हैं)

यः गच्छति (जो जाता है) | यौ गच्छतः (जो दोनों जाते है) | ये गच्छन्ति (जो सब जाते हैं)

विशेषण–पण्डितः गच्छति (पण्डित जाता है) | पण्डितौ गच्छतः (दो पण्डित जाते है) | पण्डिताः गच्छन्ति (सब पण्डित जाते है)

रुग्णः गच्छति (रोगी जाता है) | रुग्णौ गच्छतः (दो रोगी जाते है) | रुग्णाः गच्छन्ति (सब रोगी जाते है)

मध्यम पुरुष–मध्यम पुरुष में केवल युष्मद् शब्द के कर्ता कारक के रूप ही प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे:–

त्वं गच्छसि (तू जाता है) | युवां गच्छथः (तुम दोनो जाते हो) | यूयं गच्छथ (तुम सब जाते हो)

उत्तम पुरुष–उत्तम पुरुष में केवल अस्मद् शब्द के कर्ता कारक के रूप ही क्रिया के साथ लगाये जाते है। जैसे:–

अहं गच्छामि (मैं जाता हूँ) | आवां गच्छावः (हम दोनों जाते है) | वयं गच्छामः (हम सब जाते है)

विशेष–(१) हम नीचे कुछ ऐसी धातुएँ लिख रहे हैं जिनकी रूप रचना गम् धातु के समान ही होती है।

(२) कुछ धातुओं का लट्लकार की रूप रचना करते समय रूप बदल जाता है, हमने वह बदला हुआ रूप प्रत्येक धातु के साथ कोष्ठक मे दे दिया है, अतः लट्लकार मे रूप रचना उसी के अनुसार करें।

भू (भव्)–होना | पत्–गिरना

पा (पिव्)–पीना | दृश (पश्य)–देखना

चल्–चलना	प्रच्छ (पृच्छ)–पूछना
वद्–बोलना	नी (नय्)–ले जाना
तप्–दुखी होना, तप करना	रक्ष्–रक्षा करना
स्मृ–(स्मर्)–याद करना	लप्–बोलना
हृ (हर्)–हरण करना	रट्–रटना
स्था (तिष्ठ्)–ठहरना	याच्–मांगना
सर्–सरकना	भ्रम्–घूमना
व्रज्–चलना	यज्–पूजा करना, यज्ञ करना
खाद्–खाना	भृ (भर्)–पालन करना
वप्–बोना	पठ्–पढना
वस्–रहना	भज्–सेवा करना
वम्–उल्टी करना	फल्–फलना
भण्–बोलना	पच्–पकाना
मूर्च्छ्–मूर्छित होना	निन्द्–निन्दा करना
नम्–नमस्कार करना, झुकना	त्यज्–त्यागना

अभ्यास–

१ स्था धातु के लट्लकार में रूप लिखो, साथ में कर्ता का प्रयोग करते हुए हिन्दी में अर्थ भी लिखोः–

उत्तर–

प्रथम पुरुष–श्रावकः तिष्ठति श्रावकौ तिष्ठतः श्रावकाः तिष्ठन्ति
(श्रावक ठहरता है) (दो श्रावक ठहरते हैं) (सब श्रावक ठहरते हैं)

मध्यम पुरुष-त्वं तिष्ठसि युवां तिष्ठथः यूयं तिष्ठथ
(तू ठहरता है) (तुम दोनों ठहरते हो) (तुम सब ठहरते हो)

उत्तम पुरुष–अहं तिष्ठामि आवां तिष्ठावः वयं तिष्ठामः
(मैं ठहरता हूं) (हम दोनों ठहरते है) (हम सब ठहरते हैं)

२ निम्नलिखित क्रिया रूपों के साथ कर्ता की योजना कीजिए :—

स्वादथ	—	नमामः
वसामि	—	यजति
व्रजसि	—	हरन्ति
वदन्ति	—	भवामि



पंचमः पाठः

संवादः

१ श्याम—राम ! अद्य सः कुत्र गच्छति ?
२ राम—श्याम ! सः कः ?
३ श्याम—सः श्रावकः यः अत्र तपति ।
४ राम—सः श्रावकः अधुना सर्वत्र गच्छति ।
५ श्याम—ते बालकाः अत्र पठन्ति ?
६ राम—पठन्ति ते बालकाः अत्र रटन्ति च ।
७ श्याम—वयं अपि पठामः रटामः च ।
८ राम—त्वं अपि रटसि अहं अपि रटामि ।

अर्थ—

१ श्याम—राम ! आज वह कहां जाता है ?
२ राम—श्याम ! वह कौन ?
३ श्याम—वह श्रावक जो यहां तप करता है ?
४ राम—वह श्रावक अब सब जगह जाता है ।
५ श्याम—वे बालक यहां पढ रहे हैं ?
६ राम—वे बालक पढ भी रहे हैं, रट भी रहे हैं ।
७ श्याम—हम पढते और रटते हैं ?
८ राम—तूं भी रटता है, मैं भी रटता हूं ।

अभ्यास -

(१) नीचे लिखे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) इन्द्र देखता है।

(ख) वह बड़े शरीरवाला (महाकाय) जाता है।

(ग) शिष्य पूछते हैं।

(घ) गुरु (अध्यापक) बोलता है।

(ङ) पेड़ (वृक्ष) फलते हैं।

(च) दुष्ट निन्दा करते हैं।

(छ) भक्त सेवा करता है।

(ज) बच्चा (बालक) खाता है।

(झ) तुम दोनों पूजा करते हो।

(२) नीचे लिखे संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखिए—

(क) सः श्रावकः कुत्र गच्छति ?

(ख) अहं साम्प्रतं पठामि।

(ग) त्वं अधुना पठसि।

(घ) सः सायं गच्छति।

(३) नीचे लिखी धातुओं के लट् लकार में रूप लिखिए—

(१) व्रज्। (२) वस्। (३) पत्।



षष्ठः पाठः

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों के कर्म कारक

कर्म—कर्ता द्वारा जो कार्य किया जाता है, दूसरे शब्दों में कर्ता जो कुछ करना चाहता है वह कार्य एवं उस कार्य का ज्ञान करानेवाला शब्द 'कर्म' कहलाता है।

यथा–बालक फल खाता है। इस वाक्य में 'फल' कर्म है, क्योंकि कर्ता फल को खाना चाहता है।

हिन्दी में कर्म वाचक शब्द के साथ प्रायः 'को' लगा दिया जाता है। जैसे– राम रावण को मारता है। इस वाक्य में 'रावण' कर्म है।

कभी-कभी 'को' नही लगता। जैसे–राम ने पुस्तक पढी। इस वाक्य में 'पुस्तक' कर्म है, परन्तु उसके साथ 'को' यह कर्म का चिन्ह नही है।

संस्कृत मे कर्म रचना–

सस्कृत में अकारान्त पुल्लिग शब्दो की कर्म कारक में रूप रचना निम्नलिखित रूप मे की जाती है।

द्वितीया विभक्ति	कर्म कारक	शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
,,	,,	राम–	रामं	रामौ	रामान्
			(राम को)	(दो रामों को)	(सब रामो को)
,,	,,	देव–	देवं	देवौ	देवान्
,,	,,	छात्र–	छात्रं	छात्रौ	छात्रान्
,,	,,	श्रावक–	श्रावकं	श्रावकौ	श्रावकान्
,,	,,	तापस–	तापसं	तापसौ	तापसान्
,,	,,	इन्द्र–	इन्द्रं	इन्द्रौ	इन्द्रान्
,,	,,	वृद्ध–	वृद्धं	वृद्धौ	वृद्धान्
,,	,,	जीव–	जीवं	जीवौ	जीवान्
,,	,,	खग–	खगं	खगौ	खगान्

अव्यय–

१ प्रातः–सवेरे
२ नक्त–रात में
३ पूर्वाह्णे–दोपहर से पहले
४ मध्याह्ने–दोपहर मे
५ अपराह्णे–दोपहर बाद
६ प्रत्यहं–प्रतिदिन
७ सायं–शाम को
८ किम्–क्या
९ कथं–कैसे
१० किमर्थम्–किस लिये
११ नहि, न, नैव–नही
१२ एवं–ही

अभ्यास—

१ निम्नलिखित शब्दों के कर्ता और कर्म कारक के रूप लिखो:

	कर्ता	कर्म
मोदक (लड्डू)	मोदकः मोदकौ मोदकाः	मोदकं मोदकौ मोदकान्
दिवस (दिन)	दिवसः दिवसौ दिवसाः	दिवसं दिवसौ दिवसान्
अश्व (घोडा)	अश्वः अश्वौ अश्वाः	अश्वं अश्वौ अश्वान्
गर्दभ (गधा)	गर्दभः गर्दभौ गर्दभाः	गर्दभं गर्दभौ गर्दभान्
वृषभ (बैल)	वृषभः वृषभौ वृषभाः	वृषभं वृषभौ वृषभान्
शशक (खरगोश)	शशकः शशकौ शशकाः	शशकं शशकौ शशकान्
मृग (हिरन)	मृगः मृगौ मृगाः	मृगं मृगौ मृगान्
व्याघ्र (बाघ)	व्याघ्रः व्याघ्रौ व्याघ्राः	व्याघ्रं व्याघ्रौ व्याघ्रान्
अज (बकरा)	अजः अजौ अजाः	अजं अजौ अजान्
मेष (मेडा)	मेषः मेषौ मेषाः	मेषं मेषौ मेषान्
श्रृगाल (गीदड)	श्रृगालः श्रृगालौ श्रृगालाः	श्रृगालं श्रृगालौ श्रृगालान्
वृक (भेडिया)	वृकः वृकौ वृकाः	वृकं वृकौ वृकान्
कुक्कुर (कुत्ता)	कुक्कुरः कुक्कुरौ कुक्कुराः	कुक्कुरं कुक्कुरौ कुक्कुरान्
विडाल (बिल्ला)	विडालः विडालौ विडालाः	विडालं विडालौ विडालान्
मूषक (चूहा)	मूषकः मूषकौ मूषकाः	मूषकं मूषकौ मूषकान्

२ नीचे अभ्यास के लिये अनुवाद वाक्यों को ध्यान से देखिए—

	कर्ता	कर्म	क्रिया	
(क)	अध्यापक	शिष्य को	पूछता है।	— अध्यापकः शिष्यं पृच्छति।
(ख)	बच्चे	लड्डू	खाते है।	— बालकाः मोदकान् खादन्ति।
(ग)	हम	भोजन	खाते है।	— वयं भोजनं खादामः।
(घ)	तू	गाव को	जाता है।	— त्वं ग्रामं गच्छसि।
(ङ)	हिरन	जंगल (वन) को	जाता है।	— मृगः वनं गच्छति।

३ नीचे लिखे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो--

१ मैं पुस्तक वहां ले जाता हूं।
२ वह प्रातः जल पीता है।
३ भक्त ईश्वर को नमस्कार करता है।
४ कौन घर को (गृहं) जाता है।
५ भिखारी (याचकः) धन मांगता है।
६ किसान (कृषकः) बीज बोते हैं।
७ हम वहां रहते है।
८ तू कहाँ जाता है।
९ वह वहां कब होता है।
१० कौन कहा जाती है।

४ नीचे लिखे संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

१ छात्रः प्रत्यहं विद्यालयं गच्छति।
२ कृषकाः प्रत्यहं क्षेत्रं (खेत को) गच्छन्ति
३ श्रावकाः तापसान् नमन्ति।
४ श्रेष्ठः बालकः सत्यं वदति।
५ दुष्टाः सज्जनान् निन्दन्ति।
६ किं त्वं अपि सज्जनान् निन्दसि।
७ यूयं पाठ कथं न पठथ।
८ तापसाः भोजनम् अपि त्यजन्ति।
९ अहं साम्प्रतं कुत्र अपि न गच्छामि।

प्रत्यय-ज्ञान (द्विवचन)

१ द्वितीया का एकवचन बनाने के लिए शब्द के अन्तिम 'अ' अक्षर पर अनुस्वार लगा दीजिए। यथा- रामं, कृष्णं, महावीरं, श्रावकं।

२. द्वितीया का द्विवचन बनाने के लिए शब्द के अन्तिम 'अ' को 'औ' बना दीजिए। यथा-कृष्णौ, महावीरौ।

३. तृतीया के बहुवचन के लिए अन्तिम 'अ' दीर्घकर दीजिए और अन्त में 'न्' अधिक लगा दीजिए। यथा– रामान्, कृष्णान्, गणधरान् आदि।

विशेष- प्रश्न तीन चार का उत्तर मिलाकर देखिए, क्या आपने अनुवाद ठीक किया है–

३. १. अहं पुस्तकं तत्र नयामि। २. सः प्रातः जलं पिबति।
३. भक्तः ईश्वरं नमति। ४. कः गृहं गच्छति।
५. याचकः धनं याचति। ६. कृषकाः बीजं वपन्ति।
७. वयं तत्र वसामः। ८. त्वं कुत्र गच्छसि।
९. सः तत्र कदा भवति। १०. का कुत्र गच्छति।

४. १ विद्यार्थी प्रतिदिन स्कूल जाता है।
२. किसान रोज खेत पर जाते है।
३. श्रावक तपस्वियों को नमस्कार करते है।
४. अच्छा बालक सत्य बोलता है।
५. दुष्ट सज्जनो की निन्दा करते है।
६ क्या तू भी सज्जनों की निन्दा करता है।
७. तुम लोग पाठ क्यों नही पढते हो।
८. तपस्वी भोजन भी छोड देते है।
९. में इस समय कही भी नही जाता हूँ।



सप्तमः पाठः

(अकारान्त पुल्लिग शब्द)

करण कारक

करण कारक– करण कारक को तृतीया विभक्ति भी कहते है। क्रिया जिस साधन के द्वारा सम्पन्न हो रही हो उसे करण या करण-कारक कहा जाता है। नीचे लिखे हिन्दी वाक्यों मे रेखाकित शब्द क्रिया के साधन होने से करण है। (हिन्दी में करण कारक को सूचित करने के लिए शब्द के साथ 'से' अथवा 'के द्वारा' लगाया जाता है।) जैसे

	कर्ता	करण	कर्म	क्रिया
(१)	राम	बाण से	रावण को	मारता है।
(२)	छात्र	कलम से	लेख	लिखता है।
(३)	वह	नेत्रों से	चित्र को	देखता है।

संस्कृत में अकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप इस प्रकार बनते हैं–

करण कारक शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
राम	रामेण	रामाभ्यां	रामैः
	(राम से)	(दो रामों से)	(बहुत रामों से)
बाण	बाणेन	बाणाभ्यां	बाणैः
	(वाण से)	(दो बाणों से)	(बहुत वाणों से)

इसी प्रकार नीचे लिखे शव्दो के करणकारक के रूप बनते हैं–

विशेष नियम–(क) तृतीया विभक्ति के एकवचन के अन्तिम '**न**'

तव '**ण**' हो जाता है, जब '**न**' से पूर्व 'र्' अथवा 'ष्' हों। जैसेः–
ईश्वरेण, पुरुषेण।

(ख) यदि र् और **न** के बीच मे अथवा **ष** और **न** के बीच में कोई स्वर हो अथवा कवर्ग पवर्ग का कोई अक्षर हो तथा ह, **य, व** हों तो भी **न** को **ण** हो जाता है। अतः रामेण मे (र्+आ+म्+ए+न) **र** और **न** के बीच दो स्वर और **म** होते हुए भी **न** का **ण** हो गया है।

(ग) किन्तु रत्नेन में (र्+अ+त्+न्+ए+न) के मध्य में त् न् होने से **न** को **ण** नहीं हुआ।

ईश्वरेण	**ईश्वराभ्यां**	**ईश्वरैः**	**असुरेण**	**असुराभ्यां**	**असुरैः**
पुरुषेण	**पुरुषाभ्यां**	**पुरुषैः**	**सिंहेन**	**सिंहाभ्यां**	**सिंहैः**
बालकेन	**बालकाभ्यां**	**बालकैः**	**हस्तेन**	**हस्ताभ्यां**	**हस्तैः**
सुरेण	**सुराभ्यां**	**सुरैः**	**पादेन**	**पादाभ्यां**	**पादैः**
इन्द्रेण	**इन्द्राभ्यां**	**इन्द्रैः**	**देवेन**	**देवाभ्यां**	**देवैः**

अव्यय–

अन्यत्र–दूसरी जगह, दूसरी ओर	तथाहि–जैसे कि
इतस्ततः–इधर–उधर	तूष्णीम्–चुप
इह–यहां	प्रत्युत–बल्कि
एकदा–एक बार	सततम्–निरन्तर
कदापि न–कभी नहीं	सततम्–निरन्तर
तर्हि–तो, तब तो	कुत्रचित्–कही
तु–तो	अजस्रम्–लगातार
नूनम्–निश्चय ही	सह–साथ
कुतः–कहां से	इत्येव–यही

प्रत्यय ज्ञान करण कारक

१ एक वचन के लिये अन्त के 'अ' को 'ए' बनादे और अन्त मे 'न' या 'ण' लगादे। जैसे:- **रामेण, देवेन।**

२ द्विवचन के लिए शब्द के अन्तिम 'अ' को दीर्घ करदे और साथ में **भ्याम्** लगादे। यथा:–**रामाभ्याम्।**

३ बहुवचन के लिए शब्द के अन्तिम 'अ' को 'ऐ' की मात्रा (ै) के रूप में बदलकर अन्त मे विसर्ग लगादे। यथा:–**रामैः देवैः।**

अभ्यास–

१ नीचे लिखे शब्दों के करण कारक के रूप लिखिए:–

तापसः, आर्यः, युवकः, जीवितः, परिव्राजकः।

२ राम शब्द के कर्ता, कर्म और करण कारक में रूप लिखिए:–

कर्ता	–	रामः	रामौ	रामाः
कर्म	–	रामम्	रामौ	रामान्
करण	–	रामेण	रामाभ्यां	रामैः

३ नीचे लिखे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए:-

१ पिता पुत्रों का निश्चय ही पालन करता है।

२ जो आज त्याग करती है, वह कल अमृत पीती है।

३ शिष्य गुरु से पूछता है।

४ तू वहां नही देखता, दूसरी तरफ देखता है।

प्रश्न ३ का उत्तर मिलाइए, क्या आपने अनुवाद ठीक किया है:-

१ जनक: पुत्रान् नूनं भरति।

२ या अद्य त्यजति सा श्वः अमृतं पिबति।

३ शिष्य: अध्यापकं पृच्छति।

४ त्वं तत्र नहि पश्यसि, अन्यत्र पश्यसि।



अष्टमः पाठः

श्रमण–श्रावकौ

एकः श्रमणः तत्र वसति। सः प्रत्यहं श्रीमहावीरं नमति तपति च। एकदा सः रुग्णः भवति स्म। इदानीं सः किमपि न खादति, उष्णं (गरम) जलं पिबति। दिवा नक्तं च 'ॐ नमो अरिहंताणं' इत्येवं जपति सततम्।

एकदा तत्र एकः श्रावकः आगच्छतिस्म। श्रावकः श्रमणं पृच्छतिस्म च–

'श्रमण वर्य! त्वं किं सततं जपसि। श्रमणः वदतिस्म–अहम् 'ॐ नमो अरिहंताणं' इति मन्त्रेण श्री महावीरं स्मरामि।

श्रावकः- इदानीं त्वं रुग्णः तर्हि त्व किं खादसि?

श्रमणः–अहं किं अपि न खादामि श्रावक!

श्रावकः–'तर्हि कथं जीवसि?'

श्रमणः- प्रत्यहं उष्णं जलं पिबामि, तेन एव जीवामि।

श्रावकः–किं उष्णेन जलेन अपि मनुष्यः जीवति?

श्रमणः–जलं एव जीवनं, जलेन जीवन्ति जीवाः।

रूप को प्रकट करने के लिए हिन्दी में शब्द के साथ–'**के लिए**' अथवा '**को**' लगा दिए जाते है। जैसे–**माता बच्चे को लड्डू देती है**। इस वाक्य से ज्ञात हो रहा है कि लड्डू बच्चे को दिये जा रहे है, अतः **बच्चे को**' यह सम्प्रदान कारक का रूप है।

'**वीर विजय के लिये लडते हैं**' इस वाक्य से ज्ञात हो रहा है कि लडना क्रिया विजय के उद्देश्य से की जा रही है, अतः **विजय के लिए** यह सम्प्रदान रूप है।

अपादान– जिस वस्तु या जीव से कोई वस्तु या जीव अलग हो, उसे अपादान कहा जाता है। पञ्चमी विभक्ति ही अपादान कहलाती है। हिन्दी में इसका प्रत्यय '**से**' होता है। जैसे–

'**वृक्ष से पत्ता गिरता है**' इस वाक्य में वृक्ष अपादान है, क्योकि उससे पत्ता अलग हो रहा है।

विशेष–नीचे लिखे अर्थो मे भी अपादान का प्रयोग होता है–

जिससे घृणा की जाय (वह '**पाप से**' घृणा करता है)।
जिससे हटा जाय (वह अपने '**कर्तव्य से**' हट रहा है)।
जिससे डरा जाय ('**चोर से**' बच्चा डरता है)।
जिससे रक्षा की जाय (मेरी '**पाप से**' रक्षा करो)।
जिससे पढा जाय (राम '**अध्यापक से**' पढता है)।
जिससे कोई वस्तु निकलती है ('**हिमालय से**' गंगा निकलती है)।
जिससे दूरी दिखाई जाय ('**प्रयाग से**' चित्रकूट कुछ दूर है)।
जिससे लज्जा की जाय (वधू '**ससुर से**' लजाती है)।

संस्कृत मे अकारान्त पुल्लिग शब्दो की सम्प्रदान और अपादान कारको मे रूप रचना इस प्रकार की जाती है:–

राम	–सम्प्रदान–**रामाय**	**रामाभ्यां**	**रामेभ्यः**
	(राम के लिये)	(दो रामो के लिए)	(सब रामो के लिये)
	अपादान–**रामात्**	**रामाभ्यां**	**रामेभ्यः**
	(राम से)	(दो रामों से)	(सब रामों से)
महावीर	–सम्प्रदान–**महावीराय**	**महावीराभ्यां**	**महावीरेभ्यः**
	अपादान–**महावीरात्**	**महावीराभ्यां**	**महावीरेभ्यः**

अश्व:	–सम्प्रदान–अश्वाय	अश्वाभ्यां	अश्वेभ्य:
	अपादान–अश्वात	अश्वाभ्यां	अश्वेभ्य:
इन्द्र–	सम्प्रदान–इन्द्राय	इन्द्राभ्यां	इन्द्रेभ्य:
	अपादान–इन्द्रात्	इन्द्राभ्यां	इन्द्रेभ्य:
असुर–	अम्प्रदान–असुराय	असुराभ्यां	असुरेभ्य:
	अपादान–असुरात्	असुराभ्यां	असुरेभ्य:
पुरुष–	सम्प्रदान–पुरुषाय	पुरुषाभ्यां	पुरुषेभ्य:
	अपादान–पुरुषात्	पुरुषाभ्यां	पुरुषेभ्य:

विशेष–सम्प्रदान और अपादान कारकों मे केवल एक वचन के रूप भिन्न होते है। द्विवचन और बहुवचन मे रूप समान रहते हैं।

प्रत्यय ज्ञान–सम्प्रदान

१ एकवचन के लिये शब्द के अन्तिम 'अ' को दीर्घ करके अन्त मे 'य' लगा दीजिए। यथा:–**रामाय, कृष्णाय, गणधराय, श्रावकाय**।

२ द्विवचन के लिये शब्द के अन्तिम 'अ' को दीर्घ करदे, अन्त मे भ्याम् लगा दीजिए। यथा:–**रामाभ्याम**।

३ बहुवचन के लिये शब्द के अन्तिम 'अ' को 'ए' (े) के रूपमें बदल कर अन्त मे **भ्य:** लगा दीजिए। यथा:–**रामेभ्य: देवेभ्य:** अश्वेभ्य:।

अपादान

१ एकवचन के लिए शब्द के अन्तिम 'अ' को दीर्घ कीजिए और अन्त मे 'त्' या 'द्' लगा दीजिए। यथा:–**रामात्** या रामाद, **तापसात्** या **तापसाद्**।

२ द्विवचन और बहुवचन सम्प्रदान कारक के समान ही बनाएं।

अभ्यास–(१) निम्नलिखित शब्दों के सम्प्रदान और अपादान कारक में रूप लिखो:–जीव, धर्म।

उत्तर-	जीव–जीवाय	जीवाभ्यां	जीवेभ्यः
	जीवाद्	जीवाभ्यां	जीवेभ्यः
	धर्म–धर्माय	धर्माभ्यां	धर्मेभ्यः
	धर्माद्	धर्माभ्यां	धर्मेभ्यः

(२) निम्नलिखित विभक्ति सहित शब्दों मे बताइए कौन सा कारक है तथा कौन सा वचन है:–

देवाय, श्रमणात्, महावीरेण, चरणाभ्यां, युवकेभ्यः, श्रेष्ठौ, वानरान्, मूषकेभ्यः ।

(३) अश्व शब्द के कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान कारकों के तीनों वचनों में रूप लिखिए–

उत्तर–

अश्व

कर्ता–	अश्वः	अश्वौ	अश्वाः
कर्म–	अश्वं	अश्वौ	अश्वान्
करण–	अश्वेन	अश्वाभ्यां	अश्वैः
सम्प्रदान–	अश्वाय	अश्वाभ्यां	अश्वेभ्यः
अपादान–	अश्वात्	अश्वाभ्यां	अश्वेभ्यः

(४) हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

१ वह घोडे से रोज गिरता है ।
२ वह धर्म–मार्ग से दूर जाती है ।
३ ऋषभदेव घर से वन में जाते है ।
४ तपस्वी मुख से बोलता है ।
५ छात्र गुरु से पुस्तक मांगता है ।
६ विद्यार्थी पाठ याद करता है ।

प्रश्न चार के उत्तर का मिलान कीजिए क्या आपने शुद्ध अनुवाद किया है ।

१ सः अश्वात् प्रत्यहं पतति ।
२ सा धर्ममार्गात् दूरं गच्छति ।
३ ऋषभदेवः गृहात् वनं गच्छति ।
४ तापसः मुखेन वदति ।
५ छात्रः अध्यापकात् पुस्तकं याचति ।
६ छात्रः पाठं स्मरति ।

दशमः पाठः

लङ्लकार (भूतकाल)

संस्कृत में भूतकाल के लिये पारिभाषिक शब्द है लङ् अथवा लङ्लकार। जब हम कहते है कि 'गम् धातु की लङ्लकार में रूप रचना करो' तो हमारा तात्पर्य यह होता है कि गम् धातु की भूतकाल सूचक रूप रचना कीजिए।

गम् (जाना) लङ्लकार

(गम् धातु को लङ्लकार मे रूप-रचना करते समय गम् को गच्छ हो जाता हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष–	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
	(वह गया था)	(वे दो गये थे)	(वे सब गये थे)
मध्यम पुरुष–	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत्
	(तूं गया था)	(तुम दोनों गये थे)	(तुम सब गये थे)
उत्तम पुरुष–	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम
	(मैं गया था)	(हम दोनों गये थे)	(हम सब गये थे)

ध्यान देने योग्य नियम–

(क) लङ्लकार में धातु की रूप रचना करते समय धातु से पूर्व 'अ' अवश्य लगा दिया जाता है।

(ख) केवल मध्यम पुरुष के एकवचन के अन्त में विसर्ग लगाई जाती है।

(ग) प्रथम पुरुष के प्रत्येक रूप में अन्तिम वर्ण हल् है।
मध्यम पुरुष के द्विवचन में अन्तिम वर्ण हल् है।
उत्तम पुरुष के एकवचन में अन्तिम वर्ण हल् है।

(घ) जिन धातुओं के आदि में व्यंजन हो उनके आदि में 'अ' अ हो रहता हैं, जिन धातुओं के आरम्भ में स्वर हो उनका रूप भिन्न हो जाता है, जिसका ज्ञान आगे के पाठों में कराया जाएगा।

विशेष–भूतकाल के तीन रूप हैं–

परोक्ष भूत– ऐसा भूतकाल जो बहुत प्राचीनकाल से सम्बन्ध रखता हो जिसे हमारी आंखों ने न देखा हो। जैसे– राम वन में गए– **रामः वनं जगाम।**

(संस्कृत मे ऐसे भूतकाल के लिये लिङ् लकार का प्रयोग होता है)

अनद्यतन भूत– ऐसा भूतकाल जो कल अथवा कल से पूर्व काल से सम्बन्ध रखता हो और जिसे हमारी आँखों ने देखा हो।

(संस्कृत में ऐसे भूतकाल के लिये लङ् लकार का प्रयोग होता है।)

सामान्य भूत–ऐसा भूतकाल जो कुछ ही समय पूर्व घटित क्रिया से सम्बन्ध रखता हो।

(संस्कृत मे ऐसे भूतकाल के लिये लुङ् लकार का प्रयोग होता है।)

विशेष–संस्कृत के विद्वानों ने व्यवहार में यह विभाग स्वीकार नहीं किया, अतः लङ् लकार का प्रयोग किसी भी भूतकाल के लिए किया जा सकता है।

इसी प्रकार कुछ अन्य धातुओं के रूप इस प्रकार हैं।

तप् –	प्रथम पुरुष	अतपत्	अतपताम्	अतपन्
दुखी होना	मध्यम पुरुष	अतपः	अतपतम्	अतपत
या तप करना	उत्तम पुरुष	अतपम्	अतपाव	अतपाम
या तपना				
स्मृ (स्मर्) –	प्रथम पुरुष –	अस्मरत्	अस्मरताम् –	अस्मरन्
याद करना	मध्यम पुरुष–	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
	उत्तम पुरुष–	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम
स्था (तिष्ठ्)–	प्रथम पुरुष–	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
ठहरना	मध्यम पुरुष–	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
	उत्तम पुरुष–	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम
वद् –	प्रथम पुरुष–	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
बोलना	मध्यम पुरुष–	अवदः	अवदतम्	अवदत
	उत्तम पुरुष–	अवदम्	अवदाव	अवदाम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओ की लङ् लकार मे रूप रचना कीजिए–

भू (भव्)–	होना	अभवत्–	हुआ या हुआ था ।
पा (पिव्)–	पीना	अपिवत्	पिया या पिया था ।
चल्–	चलना	अचलत्–	चला या चला था ।
पत्–	गिरना	अपतत्–	गिरा या गिरा था ।
दृश् (पश्य्)–	देखना	अपश्यत्–	देखा या देखा था ।
प्रच्छ (पृच्छ्)–	पूछना	अपृच्छत्–	पूछा या पुछा था ।
नी (नय्)–	ले जाना	अनयत् –	ले गया या ले गया था ।
हृञ् (हर्)–	हरण करना	अहरत्–	हर ले गया या उठाले गया।
व्रज्–	चलना	अव्रजत्–	चला गया या चला गया था ।
नम्	नमस्कार करना या झुकना	अनमत्–	झुका या झुका था ।
त्यज्–	त्यागना, छोडना	अत्यजत–	छोड दिया या छोड दिया था ।
रक्ष्–	रक्षा करना	अरक्षत्–	रक्षा की या रक्षा की थी ।



एकादशः पाठः

नास्ति सत्यात् परोधर्मः

(सत्य से बडा कोई धर्म नही)

एकदा अहं जैनस्थानकं अगच्छम् । तत्र अपश्यम् यत् एकः श्रावकः पूज्यं श्रमणं नमति । अहं अपि श्रमणम् अनमं अपृच्छं च–

'श्रमणश्रेष्ठ ! श्रावकं किं उपदिशसि ? श्रमणः अवदत्–अहं अवदम् यद्धि–

सत्यं एव तपः । न सत्य ... । यः सत्यं वदति सः स्वर्गं गच्छति । नृपः हरिश्चन्द्रः स ... नः स्वर्गं अगच्छत् । स्वर्गात् आगच्छति सः ... ः सत्यं रक्षति सः धर्मशीलः । धर्मशीलः धर्मं ... रक्षति धर्मः तं ...

अहं श्रावक: च श्रमणं अनमाव, गृहं च अगच्छाव ।

अभ्यास–

(क) इस पाठ का हिन्दी मे अनुवाद कीजिए ।

(ख) निम्नलिखित शब्दों के लकार, पुरुष और वचन बताइए–

रक्षति, अरक्षत्, भवति, अभवत् नमति, अनमम् ।



द्वादश: पाठ:

सम्बन्ध और अधिकरण कारक

सम्बन्ध कारक–

संस्कृत में सम्बन्ध की गणना कारकों मे नही की जाती, परन्तु हमने सुविधा की दृष्टि से इसकी कारको मे गणना कर ली है। सम्बन्ध कारक ही षष्ठी विभक्ति है। हम हिन्दी मे सम्बन्ध कारक को सूचित करने के लिए शब्द के साथ का, की, के अथवा ना, नी, ने अथवा रा, री, रे लगा लिया करते है।

जैसे– **राम** का घर, **अपनी** पुस्तक, **हमारी** दुनिया।

इन वाक्यो मे मोटे अक्षरो में लिखे शब्द सम्बन्ध कारक है।

कभी–कभी सम्बन्ध के अर्थ में हम 'से' का भी प्रयोग करते हैं– गुणों से अनभिज्ञ (गुणों को न जानने वाला)।

अधिकरण कारक–

अधिकरण कारण को सप्तमी विभक्ति कहा जाता है। हिन्दी मे अधिकरण कारक को सूचित करने के लिए शब्द के साथ 'में' अथवा 'पर' लगा दिये जाते हैं।

जैसे– मैं **ग्राम** में रहता हूं. **वृक्ष** पर पक्षी बैठा है।

जब किसी कार्य के हो जाने पर दूसरा कार्य होता है तब जो कार्य हो चुका होता है, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

जैसे– राम के जाने पर मैं भी जाऊंगा।

अकारान्त पुल्लिग शब्दों की सम्बन्ध कारक और अधिकरण कारक मे रूप–रचना इस प्रकार होती है:–

	सम्बन्ध			अधिकरण		
राम–	रामस्य	रामयो:	रामाणाम्	रामे	रामयो:	रामेषु
श्रमण–	श्रमणस्य	श्रमणयो:	श्रमणानाम्	श्रमणे	श्रमणयो:	श्रमणेषु
धर्म–	धर्मस्य	धर्मयो:	धर्माणाम्	धर्मे	धर्मयो:	धर्मेषु
तापस–	तापसस्य	तापसयो:	तापसानाम्	तापसे	तापसयो:	तापसेषु
ग्राम–	ग्रामस्य	ग्रामयो:	ग्रामाणाम्	ग्रामे	ग्रामयो:	ग्रामेषु
सिह–	सिंहस्य	सिंहयो:	सिंहानाम्	सिंहे	सिंहयो:	सिंहेषु
आश्रम–	आश्रमस्य	आश्रमयो:	आश्रमाणाम्	आश्रमे	आश्रमयो:	आश्रमेषु

प्रत्यय ज्ञान

सम्बन्ध कारक–

(१) सम्बन्ध कारक के एक वचन मे शब्द के अन्त मे **'स्य'** लगा दिया जाता है। यथा–**रामस्य, देवस्य**।

(२) सम्बन्ध कारक के द्विवचन में शब्द के अन्त मे **'यो'** लगा दिया जाता है। यथा–**रामयो: देवयो:**।

(३) सम्बन्ध कारक बहुवचन मे शब्द के अन्त में **'नाम'** या **'णाम्'** लगा दिया जाता है। यथा–**देवानाम् रामाणाम्**।

अधिकरण कारक–

(१) अधिकरण कारक के एकवचन में शब्द के अन्तिम 'अ' को 'ए' (े) बना दिया जाता है। यथा–**रामे, श्रमणे**।

(२) अधिकरण के द्विवचन में शब्द के अन्त में **'यो:'** लगा दिया जाता है। यथा–**रामयो:**।

(३) अधिकरण के बहुवचन में शब्द के अन्त में **'षु'** लगा दिया जाता है। यथा–**रामेषु, देवेषु**।

सम्बोधन

सम्बोधन–जिस व्यक्ति या वस्तु को लक्ष्य करके बोला जाता है उसे सम्बोधन कहा जाता है। जैसे–हे राम ! तुम जाओ।

कभी-कभी 'हे' का प्रयोग नहीं भी किया जाता है। जैसे–श्याम ! तुम पढो।

संस्कृत मे सम्बोधन को सूचित करने के लिये शब्दों से पूर्व–हे, भोः, अये, अयि आदि शब्दो का प्रयोग किया जाता है।

विशेष–अकारान्त पुल्लिग शब्दो के सम्बोधन रूप बनाने के लिये–प्रथमा विभक्ति के ही रूप रखे जाते है, किन्तु एकवचन में शब्द के आगे रहनेवाली विसर्गो का लोप हो जाता है अर्थात् उन्हें हटा दिया जाता है। जैसे–

राम–	हे राम	हे रामौ	हे रामाः
श्रावक–	भोः श्रावक	भोः श्रावकौ	भोः श्रावकाः
श्रमण–	हे श्रमण	हे श्रमणौ	हे श्रमणाः
गौतम–	भोः गौतम	भोः गौतमौ	भोः गौतमाः
गणधर–	हे गणधर	हे गणधरौ	हे गणधराः
देव–	हे देव	हे देवौ	हे देवाः
छात्र–	हे छात्र	हे छात्रौ	हे छात्राः

अभ्यास–

(क) अकारान्त गणधर शब्द के सभी कारको में रूप लिखिए:–

उत्तर–

कर्ता–	गणधरः	गणधरौ	गणधराः
कर्म–	गणधरम्	गणधरौ	गणधरान्
करण–	गणधरेण	गणधराभ्यां	गणधरैः
सम्प्रदान–	गणधराय	गणधराभ्यां	गणधरेभ्यः
अपादान–	गणधरात्	गणधराभ्यां	गणधरेभ्यः
सम्बन्ध–	गणधरस्य	गणधरयोः	गणधराणाम्
अधिकरण–	गणधरे	गणधरयोः	गणधरेषु
सम्बोधन–	हे गणधर	हे गणधरौ	हे गणधराः

त्रयोदशः पाठः

लृट् (भविष्यत् काल)

किसी भी क्रिया के भविष्यत्काल के प्रयोग की सूचना के लिये हम हिन्दी में **गा, गी, गे** का प्रयोग करते है । संस्कृत मे भविष्यत् काल के लिये पारिभाषिक शब्द है लृट् लकार । जब हम कहते हैं कि 'भू' धातु की लृट् लकार में रूप रचना करो तो हमारा तात्पर्य यही होता है कि भू धातु की भतिष्यत् काल सूचक रूप रचना कीजिए ।

भू–होना (लृट् लकार)

प्रथम पुरुष–	भविष्यति (वह होगा)	भविष्यतः (वे दो होंगे)	भविष्यन्ति (वे सब होंगे)
मध्यम पुरुष–	भविष्यसि (तूं होगा)	भविष्यथः (तुम दोनों होंवोगे)	भविष्यथ (तुम सब होवोंगे)
उत्तम पुरुष–	भविष्यामि (मैं होऊँगा)	भविष्यावः (हम दोनों होगे)	भविष्यामः (हम सब होंगे)

गम्–जाना (लृट् लकार)

(लृट् लकार में गम् को गच्छ् नहीं होता)

प्रथम पुरुष–	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष–	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष–	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

चल् (चलना)

प्रथम पुरुष–	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष–	चलिष्यसि	चलिष्यथः	चलिष्यथ
उत्तम पुरुष–	चलिष्यामि	चलिष्यावः	चलिष्यामः

वद् (बोलना)

प्रथम पुरुष–	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
मध्यम पुरुष–	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उत्तम पुरुष–	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

पत् (गिरना)

प्रथम पुरुष–	पतिष्यति	पतिष्यतः	पतिष्यन्ति
मध्यम पुरुष–	पतिष्यसि	पतिष्यथः	पतिष्यथ
उत्तम पुरुष–	पतिष्यामि	पतिष्यावः	पतिष्यामः

विशेष– नीचे लिखी धातुओं के रुप भी इसी प्रकार बनेंगे।

सर्–सरकना	मूर्छ्–मूर्छित होना	भ्रम्–भ्रमण करना
व्रज्–जाना	रक्ष्–रक्षा करना	याच् मांगना
वम्–उल्टी करना	लप्–बोलना	भर–पालन करना
भण्–बोलना	रट्–रटना	खाद्–खाना
फल्–फलना	निन्द्–निन्दा करना	

विशेष नीचे लिखी धातुओं के लृट् लकार में रूप रचना मे अन्तर है, अतः इन्हें ध्यान से पढिये–

पा–(पीना)	प्र०–	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
	म०–	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
	उ०–	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः
स्था–(ठहरना)	प्र०–	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
	म०–	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
	उ०–	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

विशेष- नीचे लिखी धातुओं के रूपो में पुनः कुछ भिन्नता है, इन्हें भी ध्यान से पढिये–

दृश्-(देखना)	प्र०- द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
	म०- द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
	उ०- द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः
नी-(लेजाना)	प्र०- नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
	म०- नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
	उ०- नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः
वस्-(रहना)	प्र०- वत्स्यति	वत्स्यतः	वत्स्यन्ति
	म०- वत्स्यसि	वत्स्यथः	वत्स्यथ
	उ०- वत्स्यामि	वत्स्यावः	वत्स्यामः
त्यज्-(त्याग करना)	प्र०- त्यक्ष्यति	त्यक्ष्यतः	त्यक्ष्यन्ति
	म०- त्यक्ष्यसि	त्यक्ष्यथः	त्यक्ष्यथ
	उ०- त्यक्ष्यामि	त्यक्ष्यावः	त्यक्ष्यामः
यज्-(पूजा करना)	प्र०- यक्ष्यति	यक्ष्यतः	यक्ष्यन्ति
	म०- यक्ष्यसि	यक्ष्यथः	यक्ष्यथ
	उ०- यक्ष्यामि	यक्ष्यावः	यक्ष्यामः
पच्-(पकाना)	प्र०- पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
	म०- पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
	उ०- पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

अभ्यास-

(क) हिन्दी से संस्कृत बनाइए:-

(१) क्या तूं शास्त्र पढेगा ?

(२) हम सायंकाल घर पर पहुंच जाएंगे (आ+गम्)

(३) क्या तूं आज विद्यालय में आएगा ?

(४) मैं भी वहीं होऊँगा।

(५) मै दवाईखाने से (औषधालयात्) दवाई लाऊंगा ।
(आ+नी)

(६) वह मांस नहीं खाएगा ।

उत्तर मिलाइए—

(१) किं त्वं शास्त्र पठिष्यति ?

(२) वयं सायं गृहं आगमिष्यामः ।

(३) किं त्वं अद्य विद्यालयं आगमिष्यसि ?

(४) अहं अपि तत्र भविष्यामि ।

(५) अहं औषधालयात् औषधि आनेष्यामि ।

(६) सः नहि मांसं खादिष्यति ।



चतुर्दशः पाठः

लोट् लकार और विधि लिङ् लकार

लोट् जोर विधि लिङ् लकारों का प्रयोग प्रायः समान अर्थ में ही होता है, फिर भी हम दोनों लकारों के विशेष प्रयोग प्रदर्शित कर रहे हैं, उन्हीं के अनुसार इनका प्रयोग करना चाहिए—

(क) जब अनुमति देनी हो— जैसे— आप यहां आइए ।
लोट् और लिङ दोनो का प्रयोग किया जा सकता है ।

(ख) जब निमन्त्रण देना हो— जैसे— आज आप यही भोजन कीजिए ।
लोट् और लिङ् दोनों का प्रयोग किया जा सकता है ।

(ग) जब आशीर्वाद देना हो— जैसे—जाओ, विजयी बनों ।
लोट् और लिङ् दोनों का प्रयोग किया जा सकता है ।

(घ) जब उपदेश के रूप में आदेश देना हो—जैसे सदा सत्य बोलो ।
लोट् और लिङ् दोनों में प्रयोग किया जा सकता है ।

केवल लिङ् का प्रयोग

(क) जब सम्भावना प्रकट करनी हो–जैसे– शायद आज मेरे पिताजी आएँ।

(ख) जब प्रश्न करना हो– जैसे– मैं बैठूँ या जाऊँ।

(ग) जब सौगन्ध खानी हो- जैसे- जो झूठ बोले उसके बेटे मरें।

(घ) जब अनुरोध करना हो–जैसे–आप कृपया यहीं बैठें अन्यत्र नही।

(ङ) इच्छानुसार कार्य करने की आज्ञा- जैसे- चाहो तो पढो, चाहो तो खेलो।

कुछ आवश्यक धातुओं की
लोट् और विधि लिङ् में रूप–रचना

		लोट्			लिङ्		
भू– होना	प्र०–	भवतु	भवतां	भवन्तु	भवेत्	भवेतां	भवेयुः
	म०–	भव	भवतं	भवत	भवेः	भवेतं	भवेत
	उ०–	भवानि	भवाव	भवाम	भवेयं	भवेव	भवेम
गम्–	प्र०–	गच्छतु	गच्छतां	गच्छन्तु	गच्छेत्	गच्छेतां	गच्छेयुः
	म०–	गच्छ	गच्छतं	गच्छत	गच्छेः	गच्छेतं	गच्छेत
	उ०–	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम	गच्छेयं	गच्छेव	गच्छेम
पा (पिव्)	प्र०–	पिवतु	पिवतां	पिवन्तु	पिवेत्	पिवेतां	पिवेयुः
पीना	म०–	पिव	पिवतं	पिवत	पिवेः	पिवेतं	पिवेत
	उ०–	पिवानि	पिवाव	पिवाम	पिवेयं	पिवेव	पिवेम
स्था–	प्र०–	तिष्ठतु	तिष्ठतां	तिष्ठन्तु	तिष्ठेत्	तिष्ठेतां	तिष्ठेयुः
(तिष्ठ)	म०–	तिष्ठ	तिष्ठतं	तिष्ठत	तिष्ठेः	तिष्ठेतं	तिष्ठेत
ठहरना	उ०–	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम	तिष्ठेयं	तिष्ठेव	तिष्ठेम

पूर्व प्रदर्शित धातुओं का दोनो लकारों में एक-एक रूप दिया जा रहा है, शेष रूपों का अभ्यास ऊपर लिखी धातुओं के रूपों के समान स्वयं कीजिए-

चल्-	चलतु,	चलेत्	वप्-	वपतु,	वपेत्
वद्-	वदतु,	वदेत्	वस्-	वसतु,	वसेत्
पत्-	पततु,	पतेत्	वम्-	वमतु,	वमेत्
दृश् (पश्य)-	पश्यतु	पश्येत्	भण्-	भणतु,	भणेत्
प्रच्छ-	पृच्छतु,	पृच्छेत्	मूर्च्छ्-	मूर्च्छतु	मूर्च्छेत्
नी (नय)-	नयतु,	नयेत्	नम-	नमतु,	नमेत
तप्-	तपतु,	तपेत्	त्यज्-	त्यजतु,	त्यजेत्
स्मृ (स्मर्)-	स्मरतु	स्मरेत्	रक्ष्-	रक्षतु,	रक्षेत्
हृञ् (हर्)-	हरतु,	हरेत्	लप्-	लपतु,	लपेत्
सर्-	सरतु,	सरेत्	रट्-	रटतु,	रटेत्
व्रज्-	व्रजतु	व्रजेत्	याच-	याचतु,	याचेत्
पठ्-	पठतु,	पठेत्	भ्रम्-	भ्रमतु	भ्रमेत्
भज्-	भजतु,	भजेत्	यज्-	यजतु,	यजेत्
फल्-	फलतु	फलेत्	भृ (भर्)-	भरतु,	भरेत्
पच्-	पचतु,	पचेत्	चर्-	चरतु,	चरेत्
निन्द-	निन्दतु,	निन्देत	क्रन्द-	क्रन्दतु	क्रन्देत्

अभ्यास-

उत् उपसर्ग पूर्व लगाकार स्था धातु के लट्, लङ्, लृट्, लोट् और विधिलिङ् इन पाँच लकारों में रूप लिखिए-

उत् + तिष्ठति = उत्तिष्ठति (खडे होना)

लट्-	प्र०-	उत्तिष्ठति	उत्तिष्ठतः	उत्तिष्ठन्ति
	म०-	उत्तिष्ठसि	उत्तिष्ठथः	उत्तिष्ठथ
	उ०-	उत्तिष्ठामि	उत्तिष्ठावः	उत्तिष्ठामः

उत् + उत्तिष्ठत् = उततिष्ठत्

लङ्-	प्र०-	उदतिष्ठत्	उदतिष्ठतां	उदतिष्ठन्
	म०-	उदतिष्ठः	उदतिष्ठतं	उदतिष्ठत
	उ०-	उदतिष्ठम्	उदतिष्ठाव	उदतिष्ठाम

उत् + स्थास्यति = उत्स्थास्यति

लृट्-	प्र०-	उत्स्थास्यति	उत्स्थास्यतः	उत्स्थास्यन्ति
	म०-	उत्स्थास्यसि	उत्स्थास्यथः	उत्स्थास्यथ
	उ०-	उत्स्थास्यामि	उत्स्थास्यावः	उत्स्थायस्माः

उत् + तिष्ठतु = उत्तिष्ठतु

लोट्-	प्र०-	उत्तिष्ठतु	उत्तिष्ठतां	उत्तिष्ठन्तु
	म०-	उत्तिष्ठ	उत्तिष्ठतं	उत्तिष्ठत
	उ०-	उत्तिष्ठानि	उत्तिष्ठाव	उत्तिष्ठाम

उत् + तिष्ठेत् = उत्तिष्ठेत्

विधि लिङ-	प्र०-	उत्तिष्ठेत्	उत्तिष्ठेतां	उत्तिष्ठेयुः
	म०-	उत्तिष्ठेः	उत्तिष्ठेतं	उत्तिष्ठेत
	उ०-	उत्तिष्ठेयं	उत्तिष्ठेव	उत्तिष्ठेम

अव्यय-	वाक्य
इतस्ततः-इधर-उधर-	इतस्ततः भ्रमति गोवत्सः (वछडा)
वृथा-व्यर्थ-	न वृथा शपथं कुर्यात् ।
यावत्-जब तक-	निधनं न भवेत् यावत् ।
तावत्-तब तक-	तावत् स्मरतु ईश्वरम् ।
किंचित्-कुछ-	नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित् ।



पंचदशः पाठः

सूक्तयः

सुन्दर बातें जो जीवन मे हर समय मनुष्य को ज्ञान और सावधानी का पाठ पढाती रहती है ।

धर्म

१ धर्मः सर्वस्य धारकः–धर्म सबको धारण करनेवाला है ।

२ न लिङ्गं धर्मकारणम्–लिङ्ग अर्थात् वेशभूषा ही धर्म का रूप नही ।

३ अहिंसा परमो धर्मः–अहिसा ही बडा धर्म है ।

४ धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा–धर्म सम्पूर्ण ससार का आधार है ।

५ लोके धर्मिष्ठं प्रजाः उपसर्पन्तिः–ससार मे धर्मात्मा के पास ही लोग जाते है ।

६ धर्मेण पापम् नुदति–धर्म से पाप नष्ट होते है ।

७ धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितम्–धर्म मे ही सब कुछ प्रतिष्ठित है ।

८ तस्मात् धर्मं परमं वदन्ति–इस लिये धर्म को ही सबसे बडा कहा जाता है ।

९ न क्षीणं जीवनं यावत्–जब तक जीवन नष्ट नही होता
तावत् धर्मं समाचरे–तब तक धर्म का आचरण करलो ।

१० रागे द्वेषे च यः लीनः–जो राग द्वेष मे लीन है
सः धर्मात्मा कथं भवेत्–वह धर्मात्मा कैसे हो सकता है ?

११ नयति स्वर्गं हि धर्मः–धर्म ही स्वर्ग मे ले जाता है ।

अभ्यास–

१ नीचे लिखे श्लोकों का अर्थ कीजिए:–

(क) क्रोधात् भवति संमोहः, संमोहात् स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशात् बुद्धिनाशो, बुद्धि नाशात्प्रणश्यति ।

(ख) विद्या ददाति विनय, विनयात् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मः ततः सुखम् ।

(ग) त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव–देव ॥

(घ) नमः श्री अरिहन्तेभ्यः, सिद्धेभ्यश्च नमो नमः,
नमः आचार्य वर्येभ्यः, उपाध्यायेभ्यः नमो नमः ।
नमः साधुवृन्दाय, तपोनिष्ठाय ज्ञानिने,
इदं मन्त्रं जपेन्नित्यं सर्व–पाप–प्रणशनम ॥

२ नीचे लिखे शब्दों के लिंग, विभक्ति और रूप लिखिए:–
सर्वस्य, लोके, धर्मेण, धर्मे, धर्मिष्टम्, धारकः ।

३ नीचे लिखे क्रिया–शब्दो के धातु, लकार और वचन का उल्लेख कीजिए:–

उपसर्पन्ति, वदन्ति, भवेत्, नयति ।

४ स्मृ धातु के लट् लकार और विधिलिङ के रूपों का उल्लेख कीजिए ।



षोडशः पाठः

गण–पाठ

क्रिया के मूल रूप को धातु कहा जाता है। महर्षि पाणिनि के काल तक संस्कृतभाषी जितने प्रकार की क्रियाएँ बोला करते थे, उनके प्रायः दस रूप थे । इसी आधार पर पाणिनि ने सम्पूर्ण धातुओं को दस गणो मे अर्थात् दस समूहों में बांट दिया था । उन्हीं धातु–समूहों को संस्कृत व्याकरण की भाषा में दस गण कहा जाता है ।

महर्षि पाणिनि ने प्रत्येक गण के आदि में जो धातु रखी उसी के नाम पर उस गण का नाम भी रख दिया । जैसे:–पहले गण के आदि में पहली धातु 'भू' है इसलिये इस गण का नाम भ्वादिगण रखा गया है । दसों गणों के नाम इस प्रकार हैं:–

१	भ्वादिगण	पहली धातु	भू (होना)
२	अदादिगण	पहली धातु	अद् (खाना)
३	जुहोत्यादिगण	पहली धातु	जुह् (हवन करना)
४	दिवादिगण	पहली धातु	दिव् (चमकना)
५	स्वादिगण	पहली धातु	सु (रस निकालना)
६	तुदादिगण	पहली धातु	तुद् (पिडित करना)
७	रुधादिगण	पहली धातु	रुध् (रोकना या घेरना)
८	तनादिगण	पहली धातु	तन् (फैलाना)
९	क्रयादिगण	पहली धातु	क्री (खरीदना)
१०	चुरादिगण	पहली धातु	चुर् (चुराना)

विशेष–पिछले पाठों में दी गई धातुएँ और नीचे लिखी धातुएँ भ्वादि गण की धातुएँ है।

कुछ अन्य आवश्यक धातुएँ

नीचे प्रत्येक लकार का एक–एक रूप दिया जा रहा है उसीके अनुसार अन्य रूपों का अभ्यास कीजिए:–

धातु	अर्थ	लट्	लङ्	लृट्	लोट्	लिङ्
जि (जय्)	(जीतना)–	जयति	अजयत्	जेष्यति	जयतु	जयेत्
ज्वल्	(जलना)–	ज्वलति	अज्वलत्	ज्वलिष्यति	ज्वलतु	ज्वलेत्
दह्	(जलाना)–	दहति	अदहत्	धक्ष्यति	दहतु	दहेत्
काङ्क्ष्	(इच्छा करना)–	कांक्षति	अकांक्षत्	कांक्षिष्यति	कांक्षतु	कांक्षेत
खन्	(खोदना)–	खनति	अखनत्	खनिष्यति	खनतु	खनेत्
ध्यै	(ध्यान करना)–	ध्यायति	अध्यायत्	ध्यास्यति	ध्यायतु	ध्यायेत्
ध्वन्	(शब्द करना)–	ध्वनति	अध्वनत्	ध्वनिष्यति	ध्वनतु	ध्वनेत्
नर्द्	(गर्जना)–	नर्दति	अनर्दत्	नर्दिष्यति	नर्दतु	नर्देत्

नश् (नश्य्) नष्ट होना–नश्यति अनश्यत् नंस्यति नश्यतु नश्येत्

नृत् (नृत्य) (नाचना)–नृत्यति अनृत्यत नर्तिष्यति नृत्यतु नृत्येत्

तृ (तर्) (तैरना)– तरति अतरत् तरिष्यति तरतु तरेत्

भिद् (भिंद्) (तोडना)–भिन्दति अभिन्दत् भिन्दिष्यति भिन्दतु भिन्देत्

मथ् (मथना)– मथति अमथत् मथिष्यति मथतु मथेत्

दा (यच्छ्) (देना)– यच्छति अयच्छत् दास्यति यच्छतु यच्छेत्

राज् (चमकना)– राजति अराजत् राजिष्यति राजतु राजेत्

शंस् (प्रशंसा करना)– शंसति अशंसत् शंसिष्यति शंसतु शंसेत्

अर्च (पूजा करना)– अर्चति आर्चत् अर्चिष्यति अर्चतु अर्चेत्

कूज् (गूंजना)– कूजति अकूजत् कूजिष्यति कूजतु कूजेत्

गुंज् (गूंजना)– गुंजति अगुंजत् गुंजिष्यति गुंजतु गुंजेत्

घ्रा (जिघ्र्) (सूँघना)–जिघ्रति अजिघ्रत् घ्रास्यति जिघ्रतु जिघ्रेत्

विशेष–

१ जि धातु से पूर्व वि उपसर्ग लगाने से सुन्दर प्रयोग होता है।

२ ज्वल् धातु से पूर्व प्र उपसर्ग लगाने से सुन्दर प्रयोग होता है।

३ नश् धातु से पूर्व प्र उपसर्ग लगाने से सुन्दर प्रयोग होता है।
परन्तु प्र उपसर्ग लगाने पर धातु का 'न' 'ण' हो जाता है।
प्रणश्यति, प्राणश्यत् प्रणंस्यति, प्रणश्यतु, प्रणश्येत्।

४ दा धातु से पूर्व प्र लगाने से प्रयोग सुन्दर होता है।
प्रयच्छति, प्रायच्छत्, प्रदास्यति, प्रयच्छतु, प्रयच्छेत्।

अभ्यास–

१ निम्नलिखित हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) भौरे (भ्रमराः) फूलो पर गूंज रहे है।

(ख) मैं नासिका से सूंघता हूं।

(ग) हम छात्रों को पुस्तकें देते हैं।

(घ) शेर वन में गर्ज रहा है।

(ङ) अग्नि (पावकः) जलती है।

२ संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) नृपः सिंहासने राजते।

(ख) तापसः भगवन्तं ध्यायेयु।

(ग) विषयान् न कांक्षेत् संयमशीलः।

(घ) जयतु भगवान् महावीरः।

सप्तदशः पाठः

सुभाषितानि

(सुन्दर वचन)

वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा तृप्तस्य भोजनम्।
वृथा दानं समर्थस्य वृथा दीपो दिवा यथा ॥१॥

प्रदोषे[1] दीपकः चन्द्रः प्रभाते दीपकः रविः।
त्रैलोक्ये दीपकः धर्मः सुपुत्रः कुलदीपकः ॥२॥

भवन्ति कानने[2] वृक्षाः फलैः पुष्पैः सुभूषिताः।
आम्रवृक्षं बिना चित्तं कोकिलस्य न तुष्यति[3] ॥३॥

पुस्तकस्था[4] तु या विद्या, पर हस्तं गतं धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने[5], न सा विद्या न तद्धनम् ॥४॥

सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः।
सर्पः शाम्यति[6] मन्त्रेण दुर्जनः नैव शाम्यति ॥५॥

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता,
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः,
'स्वकर्मसूत्रग्रथितो[7]' हि लोकः ॥६॥

१ प्रदोषे–सायंकाले (सायंकाल में)

२ कानने–वने (वन मे)

३ तुष्यति–सन्तुष्टः भवति (सन्तुष्ट होता है)

४ पुस्तकस्था–पुस्तके विद्यमाना (पुस्तक मे विद्यमान)

५ कार्यकालेसमुत्पन्ने- (समय आने पर, काम पडने पर)

६ शाम्यति–शान्तः भवति (शान्त हो जाता है)।

७ स्वकर्मसूत्रग्रथितः–(अपने कर्मो के बन्धन मे बंधा हुआ)

अष्टादशः पाठः

अस् (होना) अदादिगणः

यह धातु दूसरे गण अदादिगण की धातु है. अतः इसके रूप भ्वादि गण की धातुओं से कुछ भिन्न हो जाते है। नीचे पांचो लकारों में अस् धातु के रूप दिए जा रहे है। यह अत्यावश्यक धातु, अतः इसके रूप अच्छी तरह याद कीजिए।

लट्

प्र०	अस्ति	स्तः	सन्ति
म०	असि	स्थः	स्थ
उ०	अस्मि	स्वः	स्मः

विशेष–द्विवचन और बहुवचन में अस् धातु के अ का लोप हो जाता है।

लङ्

प्र०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म०	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ०	आसम्	आस्व	आस्म

लृट्

(अस् धातु के लृट् लकार में रूप भू धातु के समान ही होते है।)

प्र०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्

प्र०	अस्तु (स्तात्)	स्ताम्	सन्तु
म०	एधि (स्तात्)	स्तम्	स्त
उ०	असानि	असाव	असाम

विशेष-मध्यम पुरुष के एकवचन मे एधि रूप को विशेष ध्यान से कण्ठस्थ कीजिए।

विधि लिङ्

प्र०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म०	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ०	स्याम्	स्याव	स्याम

उपसर्ग

हम आठवें पाठ मे कुछ उपसर्ग पढ चुके हैं और बता चुके हैं कि उपसर्ग धातुओं, धातुओ से बनने वाले शब्दों और विशेषणों से पूर्व लगाकर अर्थ का परिवर्तन कर देते है। हम इस अध्याय मे सम्पूर्ण उपसर्गों का परिचय करा रहे हैं, उपसर्ग बाईस है-

प्र- अधिक अच्छी तरह प्र+नमति=प्रणमति (अच्छी तरह प्रणाम करता है)

परा- उलटा परा+भवति=पराभवति (पराजित होता है)

अप- बुरा, दूर अप+हरति=अपहरति (दूर हटाता है)
अप+लपति=अपलपति (बुरे वचन कहता है)

सम्- अच्छी तरह सम्+लपति=संलपति (अच्छी तरह बात करता है)

अनु-पीछे अनु+गच्छति=अनुगच्छति (पीछे चलता है)

अव-नीचे, दूर अव+तरति=अवतरति (नीचे उतरता है)

निस्-बाहर होना, रहित निस्+सारः=निःसार (सार रहित)

निर्–वाहर होना	निर् + गच्छति = निर्गच्छति (वाहर जाता है)
दुस्–कठिनता से	दुस् + साध्यः = दुस्साध्यः (कठिनता से होनेवाला)
दुर्–बुरा	दुर् + व्यवहार = दुर्व्यवहारः (बुरा व्यवहार)
वि–विशेष, अलग होना	वि + भाति = विभाति (विशेष प्रकाशित होता है)
	वि + धवा = विधवा (अलग हो चुका है पति जिससे)
आङ्–(ङ् का लोप हो जाता है) पास होना	आ + गच्छति = आगच्छति (आता है)
नि–नीचे	नि + पतति = निपतति (नीचे गिरता है)
अधि–ऊपर	अधि + रोहति = अधिरोहति (उपर चढता है)
अपि–छा जाना	अपि + नद्ध = अपिनद्धः (ढंका हुआ)
अति-अत्यन्त, सीमा लांघना	अति + क्रमति = अतिक्रमति (सीमा से वाहर जाता है)
	अति + गहनम् = अतिगहनम् (अत्यन्त गम्भीर)
सु–सुन्दर, सुगम अच्छी तरह	सु + मुखम् = सुमुखम् (सुंदर मुख वाला)
	सु + करः = सुकरः (सुगमता से करने योग्य)
उत्–ऊपर की ओर	उत् + कर्षति = उत्कर्षति (ऊपर खींचता है)

विशेष-

१ आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के द्विवचन रूप समान होते है ।

२ प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन रूप भी समान होते है ।

३ तृतीया चतुर्थी और पंचमी के द्विवचन रूप समान होते है ।

४ चतुर्थी और पंचमी के बहुवचन रूप समान होते है ।

५ पंचमी और षष्ठी के एकवचन समान रूप वाले होते हैं ।

६ षष्ठी और सप्तमी के द्विवचन रूप समान होते है ।

अभ्यास-

नीचे लिखे शब्दों के रूपो का अभ्यास कीजिए:-

प्रतिज्ञा-प्रण	पत्रिका-पत्र	भावना-भाव
दीक्षा-व्रत	क्षुधा-भूख	जिह्वा-जीभ
इच्छा-कामना	वाटिका-वगीची	त्वचा-चमडी
कामना-चाह	सन्ध्या-सायंकाल	लता-वेल
निद्रा-सोना	अवस्था-हालत, आयु	त्रिशला-महावीर की माता

नीचे लिखे सस्कृत वाक्यों का हिन्दी मे अनुवाद कीजिए-

(१) अस्ति दिल्ली-नगरम् भारत वर्षस्य प्रमुखं नगरम् ।

(२) तत्र अनेकशः जनाः निवसन्ति ।

(३) तस्य वैराग्यशीलस्य यदा दीक्षा अभवत् तदा सः बालकः आसीत् ।

(४) तौ बालकौ तत्र एव पठेताम् वयं अत्र पठिष्यामः ।।

(५) सत्यभामा कृष्णस्य भार्या आसीत् ।

गत पाठ के वाक्य-

(१) भारतवर्षस्य पूर्वोत्तरप्रदेशे एकं विशालं नगरं अस्ति ।

(२) मेघाः समुद्रात् जलं आनयन्ति ।

(३) तत्र वने एकः आश्रमः अस्ति ।

(४) तत्र एकः तापसः निवसति ।

(५) त्वं कथं इतस्ततः भ्रमसि ।

(६) सः घटान् भेत्स्यति ।

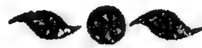
(७) भ्रमराः वाटिकासु गुंजन्ति ।

(८) कृषकाः वृषभान् क्षेत्रे नयन्ति ।

(९) अहं ईश्वरं ध्यायामि नमामि च ।

१०) तत्र देवताः निवसन्ति ।

११) त्रिशला महावीरस्य माता आसीत् ।



विंशः पाठः

इकारान्त पुंलिग शब्द

विशेष–मुनि, कपि, ऋषि आदि शब्द इकारान्त पुंलिग शब्द कहलाते है। इनकी रूप–रचना निम्नलिखित रूप में होती है।

मुनि (तपस्वी)

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	कर्ता–	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वि०	कर्म–	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृ०	करण	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
च०	सम्प्रदान–	मुनये	,,	मुनिभ्यः
पं०	अपादान–	मुनेः	,,	,,
ष०	सम्बन्ध–	,,	मुन्योः	मुनीनाम्
स०	अधिकरण	मुनौ	,,	मुनिषु
सं०	सम्बोधन–	हे मुने	हे मुनी	हे मुनयः

४ संख्यावाचक शब्द जिनके पूर्व में हो और 'रात्र' शब्द जिनके अन्त में ऐसे शब्द भी नपुंसक लिंग होते हैं–

द्विरात्रम्– दो रात तक

त्रिरात्रम्–तीन रात तक

चतुरत्रिम्–चार रात तक

पञ्चरात्रम्–पांच रात तक

५ जिन शब्दों के अन्त में–

अस् हो–	तेजस्–तेज,	यशस्–यश
इष् हो–	सर्पिष्–घी,	हविष्–हव्य पदार्थ
उष् हो–	वपुष्–शरीर	धनुष–धनुष
अन् हो–	चर्मन्–चमडी,	नामन्–नाम

अकारान्त नपुंसक लिंग शब्द

विशेष–१ अकारान्त नपुंसक लिंग शब्दो में केवल प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों के रूप अकारान्त पुल्लिग शब्दों से भिन्न होते हैं। शेष समान होते हैं।

२ प्रथमा और द्वितीया के रूप समान ही होते हैं।

ज्ञान– (अकारान्त नपुंसक लिंग)

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	कर्ता–	ज्ञानं	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वि०	कर्म –	,,	,,	,,
तृ०	करण–	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्यां	ज्ञानैः
च०	सम्प्रदान–	ज्ञानाय	,,	ज्ञानेभ्यः
पं०	अपादान–	ज्ञानात्	,,	,,
ष०	सम्बन्ध–	ज्ञानस्य	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्
स०	अधिकरण–	ज्ञाने	ज्ञानयोः	ज्ञानेषु
सं०	सम्बोधन–	हे ज्ञान	हे ज्ञाने	हे ज्ञानानि

अभ्यास–

(क) निम्नलिखित शब्दों की रूप रचना कीजिए:–

वनम्–	जंगल	बलम्–	शक्ति	हलम्–	हल
अरण्यम्–	जंगल	मांसम्–	मांस	ताम्रम्–	तांबा
पर्णम्–	पत्ता	उष्णम्–	गरम	शुभम्–	शुभ
फलम्–	फल	वृन्दम्–	समूह	अशुभम्–	अशुभ
जलम्–	पानी	रुधिरम्–	खून	कमलम्–	कमल
उदकम्–	पानी	द्रविणम्–	धन	शतम्–	सौ
मुखम्–	मुह	लोहम्–	लोहा	सहस्रम्–	हजार
नेत्रम्–	आँख	स्तेयम्–	चोरी	शीतम्–	ठंडा
सुखम्–	सुख	सख्यम्–	मित्रता	जीवितम्–	जीवन
दुखम्-	दु.ख	लाघवम्–	छोटा पन	गीतम्–	गीत
लवणम्–	नमक	गौरवम्–	बडप्पन	हसितम्–	हसना
व्यंजनम्–	खाद्य पदार्थ	पात्रम्–	बर्तन	हास्यम्–	हंसना
सूत्रम्–	धागा	छत्रम्–	छाता	पत्रम्–	पत्र, चिठ्ठी
चरित्रम्–	चरित्र	पवित्रम्–	पवित्र	धनम्–	दौलत

(ख) हिन्दी में अनुवाद कीजिए:–

१ नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रं इह अस्ति ।

२ वृक्षेषु फलानि उद्भवन्ति ।

३ गौरव सदा सर्वै: रक्षणीयम् ।

४ लवणेन बिना किं व्यञ्जनम् ।

५ न सन्ति वने वने सिंहा: ।

६ जलेन कमलं कमलेन जलं शोभते ।



द्वाविंशः पाठः

पूर्वकालिक क्रिया

जब हम एक काम करके दूसरा काम करते है तो पहले काम को करने की सूचना देनेवाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे—मारकर, खाकर, पीकर, पढकर, जाकर आदि।

नियमः—१ पूर्वकालिक क्रिया बनाने के लिये धातु के आगे त्वा (जो वस्तुतः क्त्वा प्रत्यय है) लगा देते है।

२ यदि धातु के पूर्व कोई उपसर्ग लगा दिया जाए तब यदि धातु के अन्त में दीर्घ स्वर हो तो य और ह्रस्व स्वर हो तो त्य लगा दिया जाता है।

हम नीचे आवश्यक पूर्वकालिक क्रियाएँ दे रहे है।

कण्ठस्थ कर लीजिए:—

त्वा	य
भूत्वा-होकर	संभूय-अच्छी तरह होकर
पठित्वा-पढकर	संपठ्य-पढकर
गत्वा-जाकर	आगत्य-आकर
नीत्वा-ले जाकर	आनीय-लाकर
पृष्ट्वा-पूछकर	प्रपृच्छ्य-पूछकर
स्थात्वा-ठहर कर	उत्थाय-उठकर
दत्वा-देकर	आदाय-लेकर
इत्वा-जाकर	अधीत्य-पढकर
उक्त्वा-कहकर	प्रोच्य-कहकर
ग्रहीत्वा-लेकर	संगृह्य-लेकर
भुक्त्वा-खाकर	संभुज्य-खाकर
पीत्वा-पीकर	संपीय-पीकर
नुत्वा-स्तुति करके	प्रस्तुत्य-स्तुति करके

श्रुत्वा–सुनकर	संश्रुत्य–सुनकर
कृत्वा–करके	प्रकृत्य–करके
चित्वा–चुनकर	निश्चित्य–निश्चय करके
जित्वा–जीत कर	विजित्य–जीत कर
रब्ध्वा–आरंभ करके	आरभ्य–आरम्भ करके
धृत्वा–पकड कर	विधृत्य–पकड कर
नत्वा–नमस्कार करके	प्रणम्य–प्रणाम करके
नष्ट्वा–नष्ट होकर	संनश्य–नष्ट होकर
जनित्वा–पैदा करके	संजन्य–पैदा करके
बुद्ध्वा–जानकर	अवबुध्य–जानकर
लब्ध्वा–प्राप्त करके	संलभ्य–प्राप्त करके
हत्वा–मारकर	निहत्य–मारकर
मत्वा–मानकर	अवमत्य–मानकर
ध्यात्वा–ध्यान करके	आहूय–बुलाकर
सुप्त्वा–सोकर	विज्ञाय–जानकर
जागरित्वा–जागकर	संचिन्त्य–विचार कर
उषित्वा–रहकर	अनुकृत्य–अनुकरण करके
दृष्ट्वा-देखकर	संपश्य–देखकर
छित्वा–तोडकर	संछित्य–तोडकर

अभ्यास–

हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

१ प्रातः आरभ्य सायं यावत् अत्र एव तिष्ठ ।

२ दरिद्राणां मनोरथाः चित्ते उत्थाय तत्र एव विनश्यन्ति ।

३ प्रातः उत्थाय सामायिकं कृत्वा हाटम् गच्छ ।

४ हरिं ध्यात्वा कार्याणि समाचर ।

५ नक्तं सुप्त्वा प्रातः उत्तिष्ठ ।

६ दिवा जागरित्वा सर्वाणि कार्याणि समाचरतु ।

७ वने मुनिं दृष्ट्वा श्रावकः अनमत् ।

८ स्थानके श्रमणं संपृच्छ्य श्रावकः अपृच्छत् ।

९ अहं मासद्वयं दिल्ली नगरे उषित्वा पुनः अत्र आगमिष्यामि ।

१० त्वं मुनेः ज्ञानं लब्ध्वा संसारसागरात् संतर ।

११ ज्ञानं बुद्ध्वा तरेत् शीघ्रम् ।

१२ छात्राः व्याकरणं संबुध्य पठेयुः ।

१३ जीवान् हत्वा सुखं विन्देत, अस्ति कः ईदृशः नरः ।

१४ अरीन् निहत्य सुखं लभेत् ।

१५ संसारं अनित्यं ज्ञात्वा शीघ्रं त्यजति पण्डितः ।

१६ पुण्यं कृत्वा लभेत् सुखम् ।

१७ अनुकृत्य मुनिचरितानि पुण्यं कार्यं समाचरेत् ।

१८ पुत्रं आहूय पिता अवदत् ।

१९ ज्ञात्वा तत्व विचरन्ति सुखेन मुनयः ।

२० विज्ञाय तत्वं त्यज भोगान् अशेषान् ।

२१ गच्छ स्वर्गं यथा शीघ्रं छित्वा कर्मबन्धनम् ।

२२ संचिन्त्य कार्यं समाचर ।

(ख) संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

१ यहाँ आकर तुम सब पढो ।

२ गुरुजी को प्रणाम करके आओ ।

३ आज्ञा प्राप्त करके जाना चाहिए ।

४ वहाँ रहकर पढना ।

५ गुरु से ज्ञान लेकर भोगों का त्याग करो ।

त्रयोविंशः पाठः

भगवान् श्री महावीरः

भारतवर्षस्य पूर्वोत्तरभागे पुरा आसीत् कुण्डग्राम । कुण्डग्रामस्य भूपतेः सिद्धार्थस्य गृहे द्वितीयः पुत्रः वर्धमानः अभवत् । वर्धमानस्य माता त्रिशला धर्मशीला संयमवती च आसीत् । वर्धमानस्य जन्मना कुले ग्रामे देशे च सर्वेषां वृद्धिः अभवत् ।

वर्द्धमान बाल्यकाले एव तपोनिष्ठः संयमशीलः संसारात् उदासीनः सत्यभाषकः च आसीत् । वर्धमानस्य ज्येष्ठः भ्राता नन्दिवर्धनः आसीत् । आसीत् तस्य भगिनी च सुदर्शना ।

यदा वर्धमानः युवकः अभवत् तदा तस्य विवाहोऽप्यभवत् । वर्धमानस्य पत्नी यशोदा आसीत् । वर्धमानस्य चित्तं गृहकार्येभ्यः विरक्तः आसीत् अतः पत्नीस्नेहात् सः उदासीनः एव आसीत् ।

वर्धमानस्य माता त्रिशला, जनकः सिद्धार्थः च यदा मारणान्तिक-संलेषणया मृत्युं अगच्छताम् तदा अग्रजस्य नन्दिवधनस्य आज्ञया वर्धमानः प्रव्रज्यां गृहीत्वा जनरहितान् प्रदेशान् गत्वा तपः अतपत् ।

वर्धमानः द्वादशवर्षं यावत् तपः तप्त्वा सर्वान् कषायान् च जित्वा शुद्धः बुद्धः जितेन्द्रियः सर्वज्ञः सहनशीलः च अभवत् । कामं क्रोधं लोभं मोहं अहंकारं च जित्वा सः 'महावीरः' इति नाम्ना प्रसिद्धः अभवत ।

श्री महावीरस्य प्रमुखाः शिष्याः गणधरनाम्ना प्रसिद्धाः आसन्, ते एव श्री महावीरस्य उपदेशान् श्रुत्वा आगमशास्त्राणि विरचयन्तिस्म श्री महावीरस्य धर्मः एवं जैन धर्मः । जैनधर्मस्य प्रमुखाः शिक्षाः आगमेषु संग्रहीताः सन्ति । जैनधर्मस्य प्रमुख सिद्धान्तः अस्ति अहिंसा धर्मस्य मूलम् सर्वजीवेषु दयाभावः एव अहिंसा । परिग्रहः एव पापमूलम् । सत्यं धर्मस्य बलम् । ब्रह्मचर्येण जीवःमृत्युं अपि जयति । चौर्य पापस्य मूलम् । मोक्षप्राप्तिः एव जीवनस्य ध्येयम । इति ।

अभ्यास– (१) इस कथा का हिन्दी रूप प्रस्तुत कीजिए ।



चतुर्विंशः पाठः

नामन् (नाम) नकारान्त नपुंसक लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० कर्ता	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वि० कर्म–	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
तृ० करण–	नाम्ना	नामभ्यां	नामभिः
च० सम्प्रदान–	नाम्ने	नामभ्यां	नामभ्यः
पं० अपादान–	नाम्नः	,,	,,
ष० सम्बन्ध–	,,	नाम्नोः	नाम्नाम्
स० अधिकरण–	नाम्नि	,,	नामसु

सं० सम्बोधन– हे नाम, हे नामन्, हे नाम्नी, हे नामनी, हे नामानि

इसी प्रकार– प्रेमन् (प्यार) दामन् (रस्सी) धामन् (घर) व्योमन् (आकाश) सामन् (सामवेद) के रूपो की रचना कीजिए।

व्याकरण ज्ञान

व्यंजन मिलन– १ जब किसी भी हल् व्यंजन के सामने कोई स्वर होता है तो वह व्यंजन सामने के स्वर मे मिल जाता है। जैसे– तेषाम्+ अपि= तेषामपि

सन्धि–विसर्ग-नियम

यदि विसर्ग के बाद वर्गों के प्रथम (क च ट त प) या द्वितीय (ख छ ठ थ फ) अक्षर हो अथवा (श ष स) हों तो विसर्गों को 'स्' हो जाता है। जैसे–

मनुष्याः+ तिष्ठन्ति = मनुष्यास्तिष्ठन्ति

विष्णुः+ त्रायते= विष्णुस्त्रायते

विशेष–यदि उपर्युक्त नियम के अनुसार विसर्ग को स् हो जाय और उसके सामने च वर्ग अथवा श् आ जाय तो इस स् को श् हो जाता है।

जैसे:- कः + चित   कस् + चित् = कश्चित्

रामः+चलति   रामस् + चलति=रामश्चलति

(ख) यदि उपर्युक्त नियम के अनुसार विसर्ग को स् हो जाय और उस स् के सामने ट वर्ग अथवा ष् आ जाय तो स् को ष् हो जाता है।

जैसे:- रामः + टीकते   रामस् + टीकते = रामष्टीकते

हरिः + षण्ठः   हरिस् + षण्ठः = हरिष्षठः

अभ्यास–

१ हिन्दी मे अनुवाद कीजिए:-

क) सूर्य. स्थिरस्तिष्ठति विश्वस्य मध्ये।

ख) चन्द्रेण साकं[1] भ्रमति इह पृथ्वी।

ग) धर्ममोहेन मूढ ! मां आपद्गतं[2] किं हससि।

घ) जलयन्त्रचक्रे[3] संलग्नान् घटान् पश्य, रिक्ताः भरिताः भवन्ति, भरिताः रिक्ताः भवन्ति।

ङ) एवमेव (एवम्+एव) श्रीसम्पन्नाः दरिद्राः भवन्ति दरिद्राश्च (दरिद्राः+च) श्रीसम्पन्नाः भवन्ति।

च) माता इव रक्षति विद्या।

छ) जनकः इव रक्षति ज्ञानम्।

ज) उदकेन बिना जीवाः न जीवन्ति।

झ) भक्तः कृष्णं धूपेन दीपेन पुष्पैश्च अर्चति।

ञ) रमा अनृत्यत् रंगशालायां[4], अहं अपश्यम्।

ट) वने नर्दन्ति सिंहाः।

ठ) कृष्णस्य माता कांक्षति, कृष्णः स्तेनः[5] न भवेत्।

२ संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

१ यह विजय कुमार नाम से प्रसिद्ध था।

२ विजय कुमार जन्म से ब्रह्मचारी था।

३ विजय कुमार की श्रमण चरणों में अत्यन्त श्रद्धा थी।

४ वह चार मास रह कर चला गया।

५ तुम गुरु जी से पूछकर जा सकते हो।

६ तुम प्रभु को नमस्कार करके कार्य करो।

७ तुम्हारी माता चाहती है कि तुम अच्छे बनो।

८ किसी के साथ दुश्मनी अच्छी नहीं होती।

९ तुम पढकर क्या करोगे।

१० मैं पढकर ज्ञान प्राप्त करूँगा।

१ सार्कं-साथ (इस शब्द के योग में तृतीया विभक्ति ही रखी जाती है।)

२ आपद्गतम्—विपत्ति मे फंसे हुए का।

३ जलयन्त्रचक्रे-रहट में लगे हुए।

४ रंगशालायां—नाच घर में।

५ स्तेनः—चोर।

पंचविंशः पाठः

सर्वनाम शब्द

महर्षि पाणिनि ने सर्व शब्द को आदि मे रख ३५ शब्दों के समूह की गणना की थी, इसलिये उन ३५ शब्दों को सर्वादि या सर्व-नाम कहा जाता है। इन ३५ शब्दों मे से प्रायः नीचे लिखे शब्द ही अधिकतर प्रयोग मे आते है।

सर्व (सब) **तत्** (वह) **यत्** (जो) **किम्** (कौन) **इदम्** (यह) **एतत्** (यह) **युष्मद्** (तू) **अस्मद्** (मैं) **अदस्** (वह) **अन्यत्** (दूसरा) **भवत्** (आप) **उभ** (दोनों)।

विशेष–जब सर्वनाम शब्द अकेला आता है तब वह संज्ञा के स्थान मे प्रयुक्त होता है। यथाः–सः आगच्छति। ते कुर्वन्ति आदि।

जब सर्वनाम शब्द किसी सज्ञा-वाचक शब्द के साथ आते है तो वे विशेषण के समान होते है। ऐसी दशा में उनका लिंग वचन आदि विशेष्य के अनुसार रखना पडता है।

जैसे:–यः रामः ह्यः आगच्छत् सः रामः श्वः अपि आगमिष्यति।
तेन रामेण सह लक्ष्मणः अपि वन अगच्छत्।

नीचे प्रसिद्ध सर्वनाम शब्दो के रूप दिये जा रहे है–

सर्व शब्द

	पुल्लिग			स्त्रीलिग		
कर्ता–	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
कर्म–	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
करण–	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
सम्प्रदान	सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः	सर्वस्यै	,,	सर्वाभ्यः
अपादान–	सर्वस्मात्	,,	,,	सर्वस्याः	,,	,,
सम्बन्ध–	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	,,	सर्वयोः	सर्वासाम्
अधिकरण–	सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु	सर्वस्याम्	,,	सर्वासु

सर्व (नपुंसक लिंग)

कर्ता–	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
कर्म–	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

(शेष कारकों में पुल्लिग के समान)

विशेष–सर्वनाम शब्दों के सम्बोधन रूप नहीं होते।

अभ्यास–

(क) नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी अनुवाद कीजिए:–

(क) सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ।

(ख) सर्वस्मै रोचते दुग्धं, सर्वस्मै रोचते घृतम् ।

(ग) भद्रं सर्वस्य पश्यत ।

(घ) सर्वाः पीडाः प्रसह्य अपि न दुखं अनुभवन्ति मुनयः ।

(ङ) सर्वेषामेव दानानां विद्यादान विशिष्यते ।

(च) सर्वेषां धनिकानां, धनरहितानां च अस्ति युष्माकं चरणेषु श्रद्धा ।

(छ) वयं सर्वे तत्र आगत्य पठिष्यामः शास्त्राणि ।

(ख) संस्कृत मे अनुवाद कीजिए:–

(क) बुरा काम मत करो ।

(ख) मैं तुम्हारा हित चाहता हूं, इसलिये पढकर जाओ ।

(ग) तपस्वी तप करके, विद्यार्थी पढ करके और गृहस्थ दान करके पवित्र होता है ।

(घ) मैं तेरे साथ शीघ्र ही स्थानक में चलूगा ।

(ङ) तू और मै साथ–साथ पाठ बोलेगे ।

षड्विंशः पाठः

अस्मद् (मैं या हम)

(इस शब्द के रूप तीनों लिङ्गो में एक जैसे ही होते हैं)

प्र०	कर्ता–	अहं	आवाम्	वयम्
द्वि०	कर्म–	मां, मा	,,	अस्मान्
तृ०	करण–	मया	आवाभ्यां	अस्माभिः
च०	सम्प्रदान	मह्यम्, मे	,,	अस्मभ्यम्
पं०	अपादान	मत्	,,	अस्मत्
ष०	सम्बन्ध–	मम, मे	आवयोः	अस्माकम्
स०	अधिकरण–	मयि	,,	अस्मासु

(इस शब्द का सम्बोधन नही होता)

विशेष-अस्मद् शब्द से बने हुए विशेषण शब्द भी याद कीजिए-

पु०- मदीयः-मेरा अस्मदीयः- हमारा

स्त्री०- मदीया-मेरी अस्मदीया- हमारा

न०- मदीयम्-मेरा अस्मदीयम्- हमारा

विशेष-मदीय और अस्मदीय शब्दो के रूप राम के समान ।

मदीया और अस्मदीया शब्दों के रूप रमा के समान ।

मदीयं और अस्मदीयं शब्दों के रूप ज्ञान के समान ।

अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

१ अहं शिष्याय ज्ञानं यच्छामि ।

२ आवां गच्छावः मुनेः दर्शनाय ।

३ मां श्रावकं ज्ञात्वा मुनिः प्रसन्नः अभवत् ।

४ अस्मान् दृष्ट्वा सिंहः अगर्जत् ।

५ मया सह बालकाः अपि आसन् था।

६ अस्माभिः साकं ते अपि अगच्छन् ।

७ मह्यं ज्ञानं प्रयच्छ अहमिति अवदम् ।

८ मम गृहं नातिदूरमस्ति ।

९ अस्माकं धर्मः जैननाम्ना प्रसिद्धः ।

१० मयि सन्ति अवगुणाः गुणाश्च ।

११ मदीया बुद्धिः पवित्रा अस्ति ।

१२ यत् अस्मदीयं नहि तत्परेषाम् ।

युष्मद् (तू या तुम)

कर्ता-	त्वम्	युवाम्	यूयम्
कर्म-	त्वां, त्वा	,,	युष्मान्

करण–	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
सम्प्रदान–	तुभ्यम्, ते	,,	युष्मभ्यम्
अपादान–	त्वत्	,,	युष्मत्
सम्बन्ध–	तव, ते	युवयोः	युष्माकम्
अधिकरण–	त्वयि	,,	युष्मासु

(इस शब्द का भी सम्बोधन नही होता)

विशेष– युष्मद् शब्द से बने विशेषण वाचक शब्द भी कण्ठस्थ कीजिए।

पु०–	त्वदीयः–तेरा	युष्मदीयः–तुम्हारा
स्त्री०–	त्वदीया–तेरी	युष्मदीया–तुम्हारा
न०–	त्वदीयम्–तेरा	युष्मदीयम्–तुम्हारा

विशेष–पुल्लिग शब्दों के रूप राम के समान। स्त्रीलिंग शब्दों के रूप रमा के समान और नपुंसक लिंग शब्दों के रूप ज्ञान के समान ही होंगे।

अभ्यास

(१) हिन्दी मे अनुवाद कीजिए–

(क) त्वमद्यैव गृहं गच्छ।

(ख) त्वां तत्र दृष्ट्वा सः अन्यत्र अगच्छत्।

(ग) युष्माभिः सह देवः अपि गच्छेत्।

(घ) तुभ्यं पुस्तकं प्रदाय अहं स्वगृहं गच्छामि।

(ङ) त्वत् दुरं अस्ति मे (मम) चित्तम्।

(च) तव पुस्तकं कुत्र अस्ति।

(छ) युष्माकं गृहं अपि तत्रैव अस्ति।

(ज) त्वयि दोषं दृष्ट्वा तव जनकः न अत्र आगच्छत्।

(छ) कुत्र अस्ति त्वदीया लेखनी।

(ञ) त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।

(२) नीचे लिखे शब्दों के कारक और वचन बताते हुए उनके अर्थ लिखिए–

ज्ञानानि, नाम्नाम्, युष्माभिः, अस्माकम्, त्वया, सर्वासाम्, सर्वेषाम्, सर्वस्याः, सर्वस्याम् ।

(३) व्योमन् शब्द की सभी कारकों में रूप-रचना कीजिए ।

(४) सन्धि कीजिए –

रामश्चिनोति, महावीरश्च कश्चित्, देवैश्च ।

सप्तविंशः पाठः

कृ–करना (तनादिगण)

लट् (वर्तमान)

प्र०–	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म०–	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ०–	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लङ् (भूतकाल)

प्र०–	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म०–	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ०–	अकुरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट् (भविष्य)

प्र०–	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म०–	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ०–	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लोट् (आज्ञा आदि)

प्र०–	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म०–	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ०–	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् (आज्ञा आदि)

प्र०–	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म०–	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ०–	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

विशेष–कृ धातु से पूर्व उपसर्ग लगाने से इस धातु के विशेष अर्थ प्रकट होते है । नीचे उपसर्ग सहित कृ धातु के अर्थ और प्रत्येक लकार का एक–एकरूप दिया जा रहा है–अभ्यास कीजिए ?

		लट्	लङ्	लृट्	लोट्	विधिलिङ्
अनु -।- कृ–	(अनुकरण करना)	अनुकरोति	अन्वकरोत्	अनुकरिष्यति	अनुकरोतु	अनुकुर्यात्
अधि -।- कृ–	(अधिकार करना)	अधिकरोति	अध्यकरोत्	अधिकरिष्यति	अधिकरोतु	अधिकुर्यात्
अप -।- कृ–	(बुराई करना)	अपकरोति	अपाकरोत्	अपकरिष्यति	प्रतिकरोतु	अपकुर्यात्
प्रति -।- कृ–	(प्रतिकार करना)	प्रतिकरोति	प्रत्यकरोत्	प्रतिकरिष्यति	अपकरोतु	प्रतिकुर्यात्
वि - - कृ–	(विकार पैदा करना)	विकरोति	व्यकरोत्	विकरिष्यति	विकरोतु	विकुर्यात्
परिष् ।- कृ-	(सजाना, सँवारना)	परिष्करोति	परिषकरोत्	परिष्करिष्यति	परिष्करोतु	परिष्कुर्यात्
अलं -।- कृ–	(शोभा बढाना)	अलङ्ककरोति	अलमकरोत्	अलङ्करिष्यति	अलङ्करोतु	अलङ्कुर्यात
आविष् -।- कृ–	(नई वस्तु उत्पन्न करना)	आविष्करोति	आविषकरोत्	आविष्करिष्यति	आविष्करोतु	आविष्कुर्यात्
निर्- -आ-।-कृ–	(हटाना)	निराकरोति	निराकरोत्	निराकरिष्यति	निराकरोतु	निराकुर्यात्
सत् -।- कृ-	(सत्कार करना)	सत्करोति	सदकरोत्	सत्करिष्यति	सत्करोतु	सत्कुर्यात्

ऊपर प्रत्येक लकार का एक–एक रूप प्रदर्शित किया गया है, शेष रूपो का अभ्यास कीजिए ।

पूर्वकालिक क्रियाएँ–कृत्वा, प्रकृत्य, आविष्कृत्य, प्रतिकृत्य, सत्कृत्य, पुरस्कृत्य, तिरस्कृत्य, नमस्कृत्य, सत्कृत्य आदि ।

इसी प्रकार–तिरस् -।- कृ=तिरस्करोति (तिरस्कार करता है), **नमस् -।- कृ=नमस्करोति** (नमस्कार करता है),

पुरस् -।- कृ=पुरस्करोति (पुरस्कृत करता है), अङ्गी- -कृ=अङ्गीकरोति (स्वीकार करता है),

सफली-।-कृ=सफलीकरोति (सफल करता है), **सनाथी -।- कृ=सनाथीकरोति** (सनाथ बनाता है),

आदि रूपो का भी अभ्यास कर लेना चाहिए ।

विशेष—धातु से पूर्व प्रयुक्त होकर अर्थ में परिवर्तन करनेवाले शब्दों को हम उपसर्ग कहते है जैसा कि हम सप्तदश पाठ में पढ चुके हैं परन्तु—

गति शब्द—तिरस्, परिष्, आविष्, सत्, पुरस् आदि शब्द भी कृ आदि धातुओं से पूर्व युक्त होकर अर्थ मे परिवर्तन कर देते है। इन शब्दो को 'गति' कहा जाता है।

अभ्यास—१ सस्कृत मे अनुवाद कीजिए:—

(क) तू पढकर क्या वहां गया था ?

(ख) मै पिता जी से पूछकर काम करता हूं।

(ग) तेरे लिये मै पुस्तक लाया हू।

(घ) क्या तू भोजन खाकर वहां जाएगा ? अथवा नही ?

(ङ) वह मुझे लेकर वहां जाएगा।

(च) तू वहां आएगा तब देखेगा कि मै क्या करता हू।

(छ) तुम्हारा काम मै करूगा, मेरा काम तुम करना।

२ संस्कृत से हिन्दी मे अनुवाद कीजिए:—

१) वयं पूर्वजानां चारित्रं अनुकुर्याम।

२) यः पुण्यं करोति सः स्वर्गंमधिकरिष्यति।

३) सर्वे सैनिकाः अरिमपकुर्युः।

४) तिरस्कुर्वन्तु अशेषान् भोगान् मुनयः।

५) आचार्यमुपाध्यायञ्च नमस्कुरु।

६) प्रतिकरोति मृत्युं तावत् यावत् अस्ति जीवनम्।

७) क्रोधः विकरोति सर्वान्।

८) परिष्करोति मानसं तपः ।

९) अलङ्काराणि न अलंकुर्वन्ति शरीरम्, शरीरं अलङ्करोति अर्जितं यशः ।

१०) आविष्कुर्वन्ति वैज्ञानिकाः प्रत्यहं नवीनानि जीवनसाधनानि ।

११) निराकरोतु आगतं दुःखं तपसा ।

१२) सत्कुर्वन्ति शिष्याः आचार्यम् ।

१३) पुरस्कृत्य छात्रान् तेषां उत्साहं संवर्धय ।

अष्टाविंशः पाठः

यत् (जो)

	पुल्लिंग			स्त्रीलिंग		
कर्ता—	यः	यौ	ये	या	ये	याः
कर्म—	यम्	,,	यान्	याम्	,,	,,
करण—	येन	याभ्याम्	यैः	यया	याभ्याम्	याभिः
सम्प्रदान—	यस्मै	,,	येभ्यः	यस्यै	,,	याभ्यः
अपादान—	यस्मात्	,,	,,	यस्याः	,,	,,
सम्बन्ध—	यस्य	ययोः	येषाम्	,,	ययोः	यासाम्
अधिकरण—	यस्मिन्	,,	येषु	यस्याम्	,,	यासु

यत् (नपुंसक लिंग

कर्ता—	यत्	ये	यानि
कर्म—	यत्	ये	यानि

(शेष कारकों में पुल्लिंग के समान रूप होंगे)

तत् (वह)

	पुल्लिंग			स्त्रीलिंग		
कर्ता—	सः	तौ	ते	सा	ते	ताः
कर्म—	तम्	,,	तान्	तां	,,	,,

करण–	तेन	ताभ्याम्	तैः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
सम्प्रदान	तस्मै	,,	तेभ्यः	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
अपादान–	तस्मात्	,,	,,	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
सम्बन्ध–	तस्य	तयोः	तेषाम्	,,	तयोः	तासाम्
अधिकरण–	तस्मिन्	,,	तेषु	तस्याम्	,,	तासु

तत् (नपुंसक लिंग

कर्ता–	तत्	ते	तानि
कर्म–	,,	,,	,,

(शेष कारकों में पुल्लिग के समान रूप रचना कीजिए)

विशेषण (शब्द)

यत्–यदीयः (पुल्लिग) जिसका यदीया (स्त्रीलिग) जिसकी

तत्–तदीयः (पुल्लिंग) उसका तदीया (स्त्रीलिंग) उसकी

अभ्यास

१ (क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) बुद्धिः यस्य बलं तस्य ।

(ख) यस्य येन सह सख्यं तस्य सः एव सखा ।

(ग) यस्मै यथा रोचते तथा कुरु ।

(घ) कुर्यात् कुर्यात् सदा कुर्यात् धर्मस्य आचरणं शुभम् ।

(ङ) सत्यं वदेत् प्रियं वदेत्, न अप्रियं वदेत् कदाचन ।

(च) तस्मै मुनये नमः ।

(छ) यदीया बुद्धिः तदीयं बलम् ।

(ज) यादृशं भोजन भुङ्क्ते (खाता है) बुद्धिः भवति तादृशी ।

(झ) यस्मात् स्थानात् त्वं आगच्छसि, अहं साम्प्रतं तत्रैव गच्छामि ।

(ञ) तानि फलानि आनय ।

(ट) यस्य वै यादृशं कर्म, तस्य वै तादृशं सुखम् ।

(ठ) यस्यै यत् रोचते, तस्यै तदेव प्रयच्छ ।

नवविंश: पाठ:

किम् (कौन)

	पुल्लिग			स्त्रीलिंग		
कर्ता–	क.	कौ	के	का	के	काः
कर्म–	कम्	,,	कान्	काम्	,,	,,
करण–	केन	काभ्याम्	कैः	कया	काभ्याम्	काभिः
सम्प्रदान–	कस्मै	,,	केभ्यः	कस्यै	,,	काभ्यः
अपादान–	कस्मात्	,,	,,	कस्याः	,,	,,
सम्बन्ध–	कस्य	कयोः	केषाम्	,,	कयोः	कासाम्
अधिकरण–	कस्मिन्	,,	केषु	कस्याम्	,,	कासु

किम् नपुंसक (लिंग)

कर्ता–	किम्	के	कानि
कर्म–	,,	,,	,,

(शेष कारकों मे पुल्लिग के समान ही रूप–रचना कीजिए।)

इदम् (यह)

	पुल्लिग			स्त्रीलिंग		
कर्ता–	अयम्	इमौ	इमे	इयम्	इमे	इमाः
कर्म–	इयम्	,,	इमान्	इमाम्	,,	,,
करण–	अनेन	आभ्याम्	एभिः	अनया	आभ्याम्	आभिः
सम्प्र०–	अस्मै	,,	एभ्यः	अस्यै	,,	आभ्यः
अपा०–	अस्मात्	,,	,,	अस्याः	,,	,,
सम्ब०–	अस्य	अनयोः	एषाम्	,,	अनयोः	आसाम्
अधि०–	अस्मिन्	,,	एषु	अस्याम्	,,	आसु

इदम् (नपुंसकलिंग)

कर्ता—	इदम्	इमे	इमानि
कर्म—	,,	,,	,,

(शेष कारकों में पुल्लिग के समान रूप–रचना कीजिए)

विशेषण शब्द–

पु०	स्त्री०	नपुं०
कीदृशः	कीदृशी	कीदृशम्

अभ्यास -

(क) हिन्दी से संस्कृत मे अनुवाद कीजिए:–

१ जिसके पास बुद्धि है उसी के पास बल है।
२ जिसकी जिसके साथ मित्रता है उसका वही मित्र है।
३ जिसको जैसा अच्छा लगे वैसा करो।
४ करो, करो सदा करो, धर्म का शुभ आचरण।
५ सच बोलो, प्रिय बोलो, अप्रिय कभी मत बोलो।
६ उस मुनि के लिये नमस्कार है।
७ जिसकी बुद्धि उसका बल।
८ जैसा भोजन करता है वैसी ही बुद्धि हो जाती है।
९ जिस स्थान से तू आ रहा है, मैं वही जा रहा हू।

(ब) संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

१ इदं पुस्तकं कस्य अस्ति।
२ कस्मै इदम् धनं प्रदास्यामि।
३ केषां बालकानां इयम् पाठशाला।
४ कस्मात् वृक्षात् इदं पत्रं अपतत्।
५ कस्मात् कारणात् तव हृदये अस्ति ग्लानिः।
६ न जानामि सः कुत्र अगच्छत्।
७ वयं तस्मात् नगरात् अत्र आगत्य निवसामः।
८ ते अन्योन्यं वदन्ति।

त्रिंशः पाठः

एतत् (यह)

	पुल्लिंग			स्त्रीलिंग		
कर्ता–	एषः	एतौ	एते	एषा	एते	एताः
कर्म–	एतम्	एतौ	एतान्	एताम्	,,	,,
करण–	एतेन	एताभ्यां	एतैः	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
सम्प्र०–	एतस्मै	एताभ्यां	एतेभ्यः	एतस्यै	,,	एताभ्यः
अपा०–	एतस्मात्	,,	,,	एतस्याः	,,	,,
सम्ब०–	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	,,	एतयोः	एतासाम्
अधि०–	एतस्मिन्	,,	एतेषु	एतस्याम्	,,	एतासु

एतत् (नपुंसक लिंग)

कर्ता–	एतत्	एते	एतानि
कर्म–	,,	,,	,,

(शेष कारकों मे पुल्लिग के समान ही रूप बनेंगे)

भवत् (आप)

	पुल्लिग			स्त्रीलिग		
कर्ता–	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	भवती	भवत्यौ	भवत्यः
कर्म–	भवन्तम्	,,	भवतः	भवतीम्	,,	भवतीः
करण–	भवता	भवद्भ्यां	भवद्भिः	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः
सम्प्र०–	भवते	,,	भवद्भ्यः	भवत्यै	,,	भवतीभ्यः
अपा०–	भवतः	,,	,,	भवत्याः	,,	,,
सम्ब०–	,,	भवतोः	भवताम्	,,	भवत्योः	भवतिनाम्
अधि०–	भवति	,,	भवत्सु	भवत्यां	,,	भवतीषु
संबो०–	हे भवन्	हे भवन्तौ	हे भवन्तः	हे भवति	हे भवत्यौ	हे भवत्यः

भवत् नपुंसक लिंग

कर्ता–	भवत्	भवति	भवन्ति
कर्म–	,,	,,	,,

(शेष कारकों में पुल्लिग के समान ही रूप होंगे)

अभ्यास–

(अ) हिन्दी से संस्कृत मे अनुवाद कीजिए–

१ यह पुस्तक किसकी है।
२ यह धन किसको दूंगा।
३ किन बच्चो का यह स्कूल है।
४ किस पेड से यह पत्ता गिरा है।
५ किस कारण से तुम्हारे हृदय में नफरत है।
६ मै नहीं जानता वह कहाँ गया है।
७ हम उस नगर से यहां आकर रहते हैं।
८ वे एक दूसरे से (अन्योन्यं) कहते हैं।

(ब) संस्कृत से हिन्दी मे अनुवाद कीजिए–

१ कुत्र गच्छन्ति भवन्तः ?
२ भवद्भिः सह के तत्र अगच्छन्।
३ एतस्मात् कारणात् अहं तत्र न गच्छामि।
४ एतस्मिन् एव नगरे भगवान् महावीरः अभवत्।
५ एतेषां कुत्र निवासः अस्ति।
६ आभ्यां नेत्राभ्यां पश्यामि।
७ एषु जनेषु न अस्ति धर्मस्य वासः।
८ मया प्रेरिताः ते नगरं गच्छेयुः।



एकत्रिंशः पाठः

संख्या वाचक–विशेषण

एक–शब्द (अकारान्त पुंल्लिग)

१ एक शब्द का संख्यावाचक के रूप में प्रयोग होने पर इसके एकवचन में ही रूप बनते हैं।

२ यदि एक शब्द का अर्थ–पहला, मुख्य, साधारण, केवल और थोडा–इनमें से कोई भी अर्थ हो तो एक शब्द के सभी विभक्तियों मे सर्वशब्द के समान रूपों की रचना होती है।

एक = एक	पुल्लिग	स्त्रीलिग	नपुंसक लिग
कर्ता–	एक:	एका	एकम
कर्म–	एकम्	एकाम्	एकम्
करण–	एकेन	एकया	एकेन
सम्प्रदान–	एकस्मै	एकस्मै	एकस्मै
अपादान–	एकस्मात्	एकस्या:	एकस्मात्
सम्बन्ध–	एकस्य	एकस्या:	एकस्य
अधिकरण–	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि = दो–द्वि शब्द की केवल द्विवचन में ही रूप–रचना की जाती हैं, क्योंकि दो दो ही है एक या बहुत नहीं।

	पुल्लिग	स्त्रीलिग	नपुंसकलिग
कर्ता–	द्वौ	द्वे	द्वे
कर्म–	द्वौ	द्वे	द्वे
करण–	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
सम्प्रदान–	,,	,,	,,
अपादान–	,,	,,	,,
सम्बन्ध–	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:
अधिकरण–	,,	,,	,,

त्रि = तीन–त्रि शब्द की केवल बहुवचन में ही रूप–रचना होगी, क्योंकि तीन–तीन ही रहते है एक दो नहीं हो सकते।

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिग
कर्ता–	त्रय:	तिस्र:	त्रीणि
कर्म–	त्रीन्	,,	,,

करण–	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
सम्प्रदान–	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
अपादान–	,,	,,	,,
सम्बन्ध–	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
अधिकरण	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चतुर् = चार–चतुर् शब्द की रूप-रचना भी केवल बहुवचन में होती है।

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिग
कर्ता–	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
कर्म–	चतुरः	चतस्रः	,,
करण–	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
सम्प्रदान–	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
अपादान–	,,	,,	,,
सम्बन्ध–	चतुर्णाम्	चतसृणां	चतुर्णाम्
अधिकरण–	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु
सम्बोधन–	हे चत्वारः	हे चतस्रः	हे चत्वारि

विशेष–स्त्रीलिग मे त्रि शब्द के स्थान मे तिसृ और चतुर् शब्द के स्थान मे चतसृ आदेश हो जाते हैं।

पञ्चन् (पांच) षट् (छः), सप्तन् (सात), अष्टन् (आठ) नवन् (नौ), दशन् (दस)।

इन शब्दों के रूप सभी लिंगों में समान और केवल बहुवचन होते है।

	पञ्चन्	षट् (षड्)	सप्तन्
कर्ता–	पञ्च	षट्	सप्त
कर्म–	पञ्च	षट्	सप्त
करण–	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः
सम्प्रदान–	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः

अपादान–	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
सम्बन्ध–	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्
अधिकरण–	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु

	अष्टन्	नवन्	दशन्
कर्ता	अष्टौ, अष्ट	नव	दश
कर्म–	अष्टौ, अष्ट	नव	दश
करण–	अष्टाभिः,अष्टभिः	नवभिः	दशभिः
सम्प्रदान–	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
अपादान–	,, ,,	,,	,,
सम्बन्ध–	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
अधिकरण–	अष्टासु, अष्टसु	नवसु	दशसु
सम्बोधन–	हे अष्टौ हे अष्ट	हे नव	हे दश

संख्या वाचक अन्य शब्द

एकादशन्– ११	द्वादशन् १२
त्रयोदशन्–१३	चतुर्दशन्–१४
पञ्चदशन् १५	षोडशन् १६
सप्तदशन्–१७	अष्टदशन्–१८

नवदशन्–१९ अथवा एकोनविंशतिः ।

विशेष–इन शब्दों की रूप–रचना पञ्चन् शब्द के समान होती है ।

अभ्यास–

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए:–

१ तत्र एकः श्रावकः एका श्राविका च आसीत् ।

२ द्वौ श्रमणौ स्थानकं गच्छतः, तत्र आचार्यं नंस्यतः ।

३ त्रीणी फलानि गृहीत्वा बालकः स्वगृहं व्रजिष्यति ।

४ तस्य चतस्रः भार्या आसन् तासां च चत्वारः पुत्राः अभवन् ।

५ पंचभिः श्रावकैः साकं वयं अद्यैव मुनेः दर्शनार्थं गमिष्यामः ।

६ षण्णां बालकानां विद्यालये अनुपस्थितिः अस्ति ।

७ अत्र पठन्ति सप्त बालकाः, सप्त बालिकाश्च प्राकृतां भाषाम् ।

८ अष्टौ बालकाः परीक्षायां उत्तीर्णाः अभवन् ।

९ नवभ्यः दिनेभ्यः अत्र मुनीनां उपदेशः भवति ।

१० अत्र सन्ति दश श्रमणाः तपोनिष्ठाः शास्त्रज्ञाश्च ।

(ख) संस्कृत मे अनुवाद कीजिए–

(१) पांच प्रतिज्ञाओ का पालन करो ।

(२) गुरु ने आदेश दिया कि झूठ मत बोलो ।

(३) सात बालिकाओं की आज परीक्षा होगी ।

(४) आठ मुनि साथ साथ जा रहे है ।

(५) पांच फल पुण्यवानों को प्राप्त होते है ।

(६) छः लडकियाँ मेरे पास पढती है ।



द्वात्रिंशः पाठः

इकारान्त स्त्रीलिंग

मति (बुद्धि)

कर्ता–	मतिः	मती	मतयः
कर्म–	मतिम्	मती	मतीः
करण–	मत्या	मतिभ्यां	मतिभिः
सम्प्रदान–	मत्यै, मतये	मतिभ्यां	मतिभ्यः
अपादान–	मत्याः, मतेः	मतिभ्यां	मतिभ्यः
सम्बन्ध–	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
अधिकरण–	मत्यां, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन–	हे मते	हे मती	हे मतयः

इसी प्रकार–स्मृति, शुद्धि, रुचि, प्रीति, शान्ति, रात्रि, बुद्धि, जाति, नीति, धूलि, श्रुति, आदि शब्दो की रूप–रचना का अभ्यास कीजिए ।

सन्धि–ज्ञान

यण् सन्धि–(१) यदि इ या ई के आगे आनेवाले शब्द का प्रथम अक्षर इ या ई से भिन्न कोई भी अन्य स्वर हो तो इ और ई को य् हो जाता है ।

जैसे–यदि+अपि–य द् य् अपि=यद्यपि

इति+अभवत्–इ त् य् अभवत्=इत्यभवत् (यह हुआ)

सुधी+आदेशः–सु ध् य् आदेशः=सुध्यादेशः (बुद्धिमान का आदेश)

इति+आदि–इ त् य् आदिः=इत्यादिः (वगैरह)

मुनि+आगमनम्–मु न् य् आगमनम्=मुन्यागमनम् (मुनी जी का आगमन)

(२) यदि उ या ऊ के आगे आनेवाले शब्द का प्रथम अक्षर उ या ऊ से भिन्न कोई भी अन्य स्वर हो तो उ और ऊ को व् हो जाता है ।

जैसे–मधु+अरि–म ध् व् अरिः=मध्वरिः (मधु राक्षस के शत्रु विष्णु)

गुरु+आज्ञा–गु र व् आज्ञा=गुर्वाज्ञा (गुरु की आज्ञा)

साधु+आदेशः साध् व् आदेशः = साध्वादेशः (साधु का आदेश)

अनु+अगच्छत्–अन् व् अगच्छत = अन्वगच्छत् (पीछे चला)

(३) यदि ऋ के आगे आनेवाले शब्द का प्रथम अक्षर ऋ से भिन्न कोई भी स्वर हो तो ऋ को र् हो जाता है ।

जैसे–मातृ+आगमनम्–मात् र् आगमनम् = मात्रागमनम् (माता का आगमन)

पितृ+उपकारः–पि त् र् उपकारः = पित्रुपकारः (पिता का उपकार)

भ्रातृ+ओषधिः–भ्रा त् र् ओषधिः = भ्रात्रोषधिः (भाई की ओषधि)

अभ्यास–

१ नीचे लिखे संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए:–

१) बुद्ध्या युक्त. मनुष्य: कर्मबन्धं त्यजति ।

२) यादृशी यस्य रुचि: तस्मै तादृशं भोजनं यच्छेत् ।

३) भूपति: छाया इव तां अन्वगच्छत् ।

४) पित्रादेशेन राम: वनं अगच्छत् ।

५) शान्त्यागार: मुनिश्रेष्ठ: सर्वज्ञश्च आसीत् ऋषभदेव: ।

६) मत्यनुरूपं कार्यमाचरन्ति सर्वे मनुष्या: ।

७) वध्वागमनं श्रुत्वा प्रसन्ना अभवत् तस्य माता ।

२ सन्धिच्छेद कीजिए:–

अन्वगच्छत्, पित्रादेशेन, शान्त्यागार: मत्यनुरूपम् वध्वागमनम् ।

त्रयस्त्रिंश: पाठ:

दिश् (देना या कहना)

विशेष– इस धातु से पूर्व उप उपसर्ग लगने से इसका अर्थ उपदेश देना हो जाता है ।

	लट्			लङ्		
प्र०–	दिशति	दिशत:	दिशन्ति	अदिशत्	अदिशताम्	अदिशन्
म०–	दिशसि	दिशथ:	दिशथ	अदिश:	अदिशतम्	अदिशत
उ०–	दिशामि	दिशाव:	दिशाम:	अदिशम्	अदिशाव	अदिशाम

	लृट्			लोट्		
प्र०–	देक्ष्यति	देक्ष्यत:	देक्ष्यन्ति	दिशतु	दिशताम्	दिशन्तु
म०–	देक्ष्यसि	देक्ष्यथ:	देक्ष्यथ	दिश	दिशतम्	दिशत
उ०–	देक्ष्यामि	देक्ष्याव:	देक्ष्याम:	दिशानि	दिशाव	दिशाम

विधिलिङ्

प्र०—	दिशेत्	दिशेताम्	दिशेयुः
म —	दिशेः	दिशेतम्	दिशेत
उ०—	दिशेयम्	दिशेव	दिशेम

उप—उपसर्ग लगाने पर

उपदिशति (लट्), उपादिशत् (लङ्) उपदेक्ष्यति (लृट्)
उपदिशतु (लोट्) उपदिशेत् (विधिलिङ्)

सन्धि—ज्ञान

दीर्घ सन्धि— (१) जब पूर्व शब्द के अन्त में अ या आ हो और आगे आने वाले शब्द का प्रथम अक्षर भी अ या आ ही हो तो पूर्व और पर दोनों वर्णों को मिलाकर आ हो जाता है।

जैसे—काम +अरिः—काम् आ रिः = कामारिः (कामदेव का शत्रु शंकर)

महा+अमात्यः—मह् आ मात्यः = महामात्यः (बड़ा मन्त्री)

देश+अटनम्—देश् आ टनम् = देशाटनम् (देशो मे भ्रमण)

देव+अनुकरणम्—देव् आ नुकरणम् = देवानुकरणम् (देवता का अनुकरण)

(२) यदि पूर्व शब्द के अन्त में उ या ऊ हो और उसके सामने आने वाले शब्द का अक्षर भी उ या ऊ हो तो दोनो को ऊ हो जाता है।

जैसे— भानु+उदयः—भान् ऊ दयः = भानूदयः (सूर्य का उदय)

प्रभु+उत्तमः—प्रभ् ऊ त्तमः = प्रभूत्तमः (श्रेष्ठ प्रभु)

सिन्धु+ऊर्मिः—सिन्ध् ऊ र्मिः = सिन्धूर्मिः (समुद्र की लहर)

लघु+उपायः— लघ् ऊ पायः = लघूपायः (छोटा उपाय)

(३) जब पूर्व शब्द के अन्त में ऋ हो और यदि आगे आनेवाले शब्द के आरम्भ में भी ऋ हो तो दोनों को ॠ हो जाती है।

जैसे–भ्रातृ+ऋद्धिः–भ्रात् ऋ द्धिः = भ्रातृद्धिः (भ्राता का वैभव)

पितृ+ऋणम्–पित् ऋ णम् = पितृणम् (पिता का ऋण)

दातृ+ऋद्धिः–दात् ऋ द्धिः = दातृद्धिः (दाता की समृद्धि)

कारक का विशेष ज्ञान

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं इन शब्दों के योग मे सदा चतुर्थी विभक्ति का ही प्रयोग किया जाता है। यथाः–

प्रजाभ्यः स्वस्ति, (प्रजा का कल्याण हो)

इन्द्राय स्वाहा (इन्द्र के लिए यह आहुति)

नमः आचार्याय, (आचार्यजी के लिये नमस्कार)

पितृभ्यः स्वधा (पित्तरों के लिये वस्तु है)

संयमः कषायेभ्यः अलम्

(संयम सम्पूर्ण कषायो के नाश के लिये पर्याप्त है।)

विशेष– परन्तु **नमस्** शब्द जब कृ धातु के साथ लगकर प्रयुक्त होता है, तब इसके योग में द्वितीया विभक्ति का ही प्रयोग होता है

यथा–**आचार्य नमस्करोति साधुः।**

अभ्यास–

१ हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करो–

(१) बुद्धि से युक्त मनुष्य कर्मो के बन्धन त्याग देता है।

(२) जिसकी जैसी रुचि हो उसको वैसा ही भोजन देना चाहिए।

(३) राजा छाया के समान उसके पीछे चल रहा था।

(४) पिता की आज्ञा से राम वन में गए।

(५) श्री ऋषभदेव शान्ति के भण्डार, मुनियों में श्रेष्ठ और सर्वज्ञ थे।

(६) सब लोग बुद्धि के अनुसार काम करते हैं।

(७) वधू के आगमन को सुनकर उसकी माता अत्यन्त प्रसन्न थी।

२ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(१) मुनयः श्रावकान् उपदिशन्ति–यत् संयमहीनाः एव दुखिनः भवन्ति।

(२) मातृणात् पितृणाच्च यः उऋणः भवति स एव पुत्रः ।

(३) उपदिशेत् जनकः सन्ततिं–यत् हि सः पूज्यान् नमस्कुर्यात् ।

(४) आचार्याय नमः उपाध्यायाय नमः, नमः सर्वेभ्यः श्रमणेभ्यः ।

(५) स्वस्ति प्रजाभ्यः अस्तु, यच्छतु देवः सर्वेभ्यः कल्याणं ।



चतुस्त्रिंशः पाठः

श्री रामः

आसीत् त्रेतायुगे कोशलदेशस्य राजधानी अयोध्या । तस्याः भूपतिः दशरथः प्रजावत्सलो धार्मिकश्चासीत् । आसन् तस्य नृपतेः तिस्रः भार्याः । तासु कौशल्याजनयत् पुत्रं रामं, सुमित्रायाः पुत्रौ लक्ष्मणः शत्रुघ्नश्चाभवताम् कैकेय्याः पुत्रोऽ–भवत्भरतः । चतुर्णां भ्रातृणां अन्योऽन्यमासीत्प्रगाढः स्नेहः ।

मिथिलायाः नरपतेः जनकस्य चतस्रः कन्याः आसन्–सीता, उर्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्तिश्च । जनकः इति घोषणां कृतवान् यः शंकरस्य चापं खण्डयिष्यति तस्मै सीतां प्रदास्यामि। रामः गुरुणा विश्वामित्रेण सह जनकपुरीं गत्वा शंकरचापम–खण्डयत् अतः जनकः रामाय सीतामयच्छत् । इत्थं सीतया सह रामस्य विवाहोऽभवत् ।

रघुवंशस्य गुरोः वसिष्ठस्याज्ञया उर्मिलायाः लक्ष्मणेन माण्डव्या भरतेन, श्रुतकीर्त्याश्च शत्रुघ्नेन सह विवाहोऽभवत् ।

भरतजनन्याः कैकय्याः आसीत् एकादासी मन्थरा, या कुटिला द्वेषपरायणा चासीत् । तस्याः प्रेरणया कैकेयी नृपते दशरथात् द्वौ वरौ अयाचत्– "रामः आचतुर्दशवर्षं वने निव–

सेत् भरतश्च कोशलस्य अधिपतिः भवेत् ।' सत्यशीलः दशरथः प्रतिज्ञातौ द्वौ वरौ भार्यायै दत्त्वा मरणं प्राप्तः ।

रामस्य वनगमनं श्रुत्वा सीता लक्ष्मणश्च राममन्वकुरु-ताम् अतः तौ अपि रामेण सह वनं अगच्छताम् ।

आसीत् भरतः भ्रातृभक्तः, अतः सः रामं पुनः अयो-ध्यायां आनेतुं चित्रकूटमव्रजत् किन्तु जनकस्याज्ञापालनशीलः रामः न प्रत्यागच्छत् ।

ततोऽगच्छत् रामः पंचवटीं तत्रैव भार्ययानुजेन सह न्यवसत् । तत्रैकदा लंकाधिपतेः रावणस्य भगिनी शूर्पणखा समागता । तस्याः दुश्चरितानि दृष्ट्वा रामस्याज्ञया लक्ष्मणः तस्याः नासिकामकृन्तत् रुदन्ती सा खरदूषणस्यान्तिकमगच्छत् । रामः युद्धाय आगतौ खरदूषणौ अहन् ।

तयोः मरणं दृष्ट्वा शूर्पणखा लंकाधिपतेः रावणस्यान्तिकं अव्रजत् । रावणः मुनेः छद्मवेशं धृत्वा सीतामहरत् ।

अनुजेन लक्ष्मणेन सह भार्यामन्विष्यमाणः रामः ऋष्यमूकं पर्वतं आगतः, तत्र च वानराणामधीशं बालिनं हत्वा तस्यानुजेन सुग्रीवेण सह मैत्रीमकरोत् । सुग्रीवस्य सेनानायको हनुमान् रामस्याज्ञया समुद्रमुल्लंघ्य लंकायां प्रविष्टः तत्र चाशोकवाटिकायां राक्षसीभिः आवृतां सीताम-पश्यत्, ततः रावणस्य पुत्रं अक्षं हत्वा लंकां च संदह्य रामस्यान्तिकं समागच्छत् ।

श्री रामः लक्ष्मणेन सुग्रीवेण वानरसैन्येन च सह समुद्रतटमागतः । तत्र च नलनीलाख्यौ वानरौ रामनामाङ्कितैः शिलाखण्डैः समुद्रस्य उपरि सेतुमकुरुताम् । तेन सेतुना सेनया सहितः रामः समुद्रस्य परं तीरं प्राप्तः ।

रावणस्य धार्मिकः अनुजः विभीषणः रामस्य शरणमगृह्णात् तस्य सहयोगेन रावणं तस्यानुजं कुम्भकर्णं पुत्रं मेघनादञ्च निहत्य सीतां गृहीत्वा चतुर्दशसु वर्षेषु व्यतीतेषु अयोध्यामागच्छत् ।

रामस्य राज्याभिषेकः संजातः। सर्वे नागरिकाः ग्रामीणाश्च हर्षान्विताः अभवन्। दीपमालिकाभिः गृहाणि अलंकुर्वन् प्रजाः।

रामराज्ये सर्वाः प्रजाः दुखमुक्ताः अभवन् सुखं चान्वभवन्।

अभ्यास–

१) कः आसीत् रामः का चासीत् तस्य भार्या।

२) निम्नलिखित शब्दों में सन्धिछेद कीजिए.–

धार्मिकश्चासीत, वसिष्ठस्याज्ञया, रावणस्यान्तिकं।

३) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों मे प्रयोग कीजिए:–

इत्थम्, चापम्, आचतुर्दशवर्षम्, आनेतुम्, अन्तिकम्, अकृन्तत्, आगतौ, धृत्वा, उल्लंघ्य।



पंचत्रिंशः पाठः

श्रु धातु (स्वादि) सुनना

	लट्			लङ्	
प्र०–शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म०–शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ	अशृणो	अशृणुतम्	अशृणुत
उ०–शृणोमि	शृणुवः	शृणुमः	अशृण्वम्	अशृणुव	अशृणुम
	शृण्वः	शृण्मः		अशृण्व	अशृण्म

	लृट्			लोट्	
प्र०–श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति	शृणोतु	शृणुतां	शृण्वन्तु
म०–श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उ०–श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

विधिलिङ्

प्र०–	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
म०–	शृणुयाः	शृणुयातम	शृणुयात
उ०–	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

विशेष–लट्, लङ् लोट् और विधिलिङ् मे श्रु को शृ हो जाता है और लृट् लकार मे श्रु को श्रो हो जाता है।

सन्धि–ज्ञान

गुण सन्धि–(१) जब पूर्व शब्द के अन्त मे अ या आ हो और आगे आने वाले शब्द के आरम्भ में इ या ई हो तो अ और इ को मिलकर ए हो जाता है।

यथाः–महा+इच्छा–मह् ए इच्छा=महेच्छा (बडी इच्छा)

योग+ईश्वरः–योग् ए श्वरः=योगेश्वरः (योग पर अधिकार रखनेवाला)

देव+इन्द्रः–देव् ए न्द्रः=देवेन्द्रः (देवताओ का इन्द्र)

तथा+इति–तथ् ए ति=तथेति (इस प्रकार)

असुर+इन्द्रः–असुर् ए न्द्र=असुरेन्द्रः (असुरों का इन्द्र)

(२) जब पूर्व शब्द के अन्त में अ या आ हो और आगे आनेवाले शब्द के आरम्भ मे उ या ऊ हो तो दोनों को मिलाकर ओ हो जाता है।

यथाः– सत्य+उपासकः–सत्य् ओ पासकः = सत्योपासकः (सत्य की उपासना करनेवाला)

देव+उत्पत्तिः–देव् ओ त्पत्तिः = देवोत्पत्तिः (देव की उत्पत्ति)

संयम+उचितं–सयम् ओ चितं = संयमोचितम् (संयम के लिये उचित)

समय+उचितः–समय् ओ चितः = समयोचितः (समय के अनुसार)

माया+उद्भवः–माय् ओ द्भवः = मायोद्भवः (माया से उत्पन्न)

(ख) संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१ शृण्वन्तूपदेशं शिष्याः गुरोः ।

२ देवलोकेष्वेव महर्द्धिकाः देवाः सन्ति ।

३ अस्त्युपायः संयमस्य ब्रह्मचर्यपालनम् अपरिग्रहश्च ।

४ भूलोकं उपर्युपरि सन्त्यनेके देवलोकाः अधोऽधः नारकीयानां लोकाश्च ।

५ श्रृणुयात् धर्माख्यानं श्री महावीरस्य सदैव ।

६ श्रुत्वा तत्त्वं हि धर्माचरणं समाचरेत्

७ श्रवणीयं श्रावणीयञ्च अस्ति पुण्यचरितं श्री नेमिनाथस्य ।

卐 ✕ 卐

षट्त्रिंशः पाठः

सूक्तयः

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य साधोः विपरीतमेतत्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ।।१।।

मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।
आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति सः पश्यति ।।२।।

वाणी रसवती यस्य, यस्य श्रमवती क्रिया ।
लक्ष्मीः दानवती यस्य, सफल तस्य जीवनम् ।।३।।

विदेशेषु धनं विद्या, व्यसनेषु धनं मतिः ।
परलोके धनं धर्मं, शीलं सर्वत्र वै धनम् ।।४।।

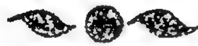
शैले शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र, चन्दनं न वने वने ।।५।।

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम् ।।६।।

सुखार्थिनः कुतो विद्या, कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ।
सुखार्थी तु त्यजेत्विद्यां, विद्यार्थी तु त्यजेत्सुखम् ।।७।।
नहि वैरेण वैराणि, शाम्यन्तीह कदाचन ।
अवैरेण हि शाम्यन्ति, एषः धर्मः सनातनः ।।८।।
भूमेः गरीयसी माता, स्वर्गादुच्चतरः पिता ।
जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी ।।९।।
अष्टादश पुराणेषु, व्यासस्य वचनं द्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय, पापय पर पीडनम् ।।१०।।

अभ्यास–

ऊपर लिखे श्लोको का हिन्दी मे अनुवाद कीजिए ।



सप्तत्रिंशः पाठः

ग्रह्–ग्रहण करना (क्र्याद्गिण)

लट्			लङ्		
गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति	अगृह्णीत	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ	अगृह्णः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः	अगृह्णम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

लृट्			लोट्		
ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति	गृह्णातु	गृह्णीतां	गृह्णन्तु
ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथ	ग्रहीष्यथ	गृहाण	गृह्णीत	गृह्णीत
ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

विधिलिङ्

गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

पूर्वकालिक क्रिया–गृहीत्वा, संगृह्य (ग्रहण करके)
विशेषण– ग्रहणीयम् (ग्रहण करने योग्य)

विशेष– इस धातु से पूर्व सम् उपसर्ग लगाने पर इस धातु का अर्थ संग्रह करना हो जाता है। यथा–संग्रहीष्यति = इकट्ठा करेगा।

सन्धि–ज्ञान

वृद्धि-सन्धि– (१) जब पूर्व शब्द के अन्त मे अ या आ हो और सामने के शब्द का प्रथम अक्षर ए या ऐ हो तो दोनो को मिलकार ऐ हो जाता है।

यथा– तथा+एव– तथ् ऐ व = तथैव
महा+ऐश्वर्य–मह् ऐ श्वर्यः = महैश्वर्यः
मया+एतत्– मय् ऐ तत् – मयैतत्

(२) जब पूर्व शब्द के अन्त में अ या आ हो और उसके सामने के शब्द का प्रथम अक्षर ओ या औ हो तो दोनों के स्थान मे औ हो जाता है।

यथा–दन्त+ओष्ठम् दन्त् औष्ठम् = दन्तौष्ठम् (दांत और होठ)

जल+ओघः–जल् औ घः = जलौघः (जल का प्रवाह)

रोग+औषधिः–रोग औ षधिः = रोगौषधिः (रोग की दवाई)

कार्य+औचित्यम्–कार्य् औ चित्यम् = कार्यौचित्यम् (कार्य का उचित होना)

विश्व+ओतप्रोतम्–विश्व् औ तप्रोतम् = विश्वौतप्रोतम् (विश्व में ओतप्रोत)

अभ्यास

हिन्दी से संस्कृत मे अनुवाद कीजिए–

(१) शिष्य गुरु का उपदेश सुनें।
(२) देवलोकों में ही महा समृद्धि वाले देव होते है।
(३) संयम का साधन है ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

(४) भूलोक के ऊपर-ऊपर अनेक देवलोक है और नीचे-नीचे नारकीयों के लोक है ।

(५) पवित्र चरित्र वाले श्री महावीर के धर्माख्यान को सुनिए ।

(६) धर्म के तत्व को सुनकर धर्म का आचरण करे ।

(७) श्री नेमिनाथजी का पवित्र चरित्र सुनने योग्य है ।

(२) संस्कृत से हिन्दी मे अनुवाद कीजिए-

(१) गृह्णन्तु मुनीनां पावनं परलोक-मार्ग-दर्शकं पवित्रमुपदेशम् ।

(२) सर्वेषां कार्याणामौचित्यं ज्ञात्वा कर्माणि कुर्युः ।

(३) तिरस्कुर्वन्ति सर्वे हिंसाशीलमसत्यशीलञ्च ।

(४) ज्ञात्वैव धर्मतत्व धर्मविषयं वदेत ।

(५) उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ।

(६) षण्णां मुनीनामस्त्यद्यैव विहारः देहलीनगरात् अन्यत् नगरं प्रति ।

(३) सन्धिच्छेद करो ।

ज्ञात्वैव, अस्त्यद्यैव, स्यन्तीह ।



अष्टात्रिंशः पाठः

ईकारान्त स्त्रीलिंग

नदी शब्दः

कर्ता-	नदी	नद्यौ	नद्यः
कर्म-	नदीम्	,,	नदीः
करण-	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
सम्प्रदान-	नद्यै	,,	नदीभ्यः
अपादान-	नद्याः	,,	,,
सम्बन्ध-	,,	नद्योः	नदीनाम्

अधिकरण–	नद्यां	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन–	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

इसी प्रकार– पृथ्वी, देवी, देवकी, पांचाली, गायत्री, कैकेयी, कौमुदी, (चांदनी) राजीमती, साध्वी, रोहिणी आदि शब्दों की रूप–रचना नदी के समान ही होगी।

विशेष–अवी (रजस्वला स्त्री), तन्त्री (वीणा), तरी (नौका), लक्ष्मी, ह्री (लज्जा), धी (बुद्धि), श्री (लक्ष्मी) इन शब्दों के प्रथमा के एकवचन के आगे विसर्ग अवश्य रहती है। अतः लक्ष्मी नहीं लक्ष्मीः रूप होगा। शेष रूप नदी शब्द के ही समान होंगे ?

सन्धि–ज्ञान

विसर्ग–सन्धि (१) ह्रस्व अ के सामने विसर्ग हो और उसके सामने आने वाले शब्द के आरम्भ में ह्रस्व अ हो य् व् र् ल् हों,

अवी, तन्त्री, तरी, लक्ष्मी, ह्री, धी, श्रीणामुणादिषु।

सप्तानामपि शब्दानां सुलोपो न कदाचन।

ह हो अथवा वर्गों के तीसरे (ग् ज् ड् द् ब्) चौथे (घ् झ् ढ् ध् भ्) हों अथवा पचम वर्ण (ङ् ञ् ण् न् म्) हो तो विसर्ग को 'उ' हो जाता है।

२) ऐसी दशा में ह्रस्व अ और उ को मिलाकर पाठ ३५ के अनुसार ओ गुण हो जाता है।

३) यदि विभक्ति सहित शब्द (पदान्त) से ओ या ए का सामने ह्रस्व अ आजाता है तो उसको पूर्व रूप (पूर्व रूप का चिन्ह है ऽ) हो जाता है।

यथा–रामः+अवदत्–राम उ अवदत् (विसर्ग को उ)
रामो+अवदत् (अ और उ को गुण ओ)
रामोऽवदत् (पूर्व रूप)।
देवः+हसति–देव उ हसति=देवो हसति।
रामः+नमति–राम उ नमति=रामो नमति।
कुतः+विद्या–कुत उ विद्या=कुतो विद्या।
कुशलः+अस्ति–कुशल उ अस्ति=कुशलोअस्ति, कुशलोऽस्ति।

अभ्यास–

१) निम्नलिखित शब्दों के द्वितीया तृतीया और पंचमी विभक्तियों के रूप लिखिए।

श्री लक्ष्मी, अवी, तरी।

२) निम्नलिखित शब्दो के कारक और वचन लिखिए–

तन्त्र्या, कौमुद्योः, रोहिण्या, देवकीः।

✕ ❁ ✕

नवत्रिंशः पाठः

देवी राजीमती

पुराकिल् द्वापरे युगे आसीत् मथुराधिपो भूपतिः उग्रसेनः। तस्य च सुलक्षणी दिव्य–सौन्दर्य–सम्पन्नैका कन्याभवत्। तेन तस्याः नाम राजीमती इति कृतम्।

तस्मिन्नेव काले शौर्यपुरस्य नगरस्य सर्हद्धिको भूपतिः समुद्रविजयः आसीत्। तस्य आसीत् साध्वी धर्मशीला भार्या शिवा। अनयोः एकः धार्मिकः सत्यनिष्ठः सुपुरुषलक्षणैः युक्तः पुत्रोऽभवत्। तस्य नाम अरिष्टनेमिः इति कृतं ताभ्याम्। नेमिकुमारः इति तस्यैव द्वितीयं नाम।

यदारिष्टनेमिः यौवन–सम्पन्नः जातः तदा वासुदेवस्य कृष्णस्यनुमत्या तस्य राजीमत्याश्च विवाहः निश्चितोऽभवत्। यदारिष्टनेमिः वासुदेवेन श्रीकृष्णेन, बलभद्रेण बन्धु–बान्धवैः राजपुरुषैश्च सह रथमारुह्य विवाहार्थं श्वसुरगृहमगच्छत् तदा मार्गे निरीहनेत्रान् पशुशालासु बद्धान् अनेकान् पशून्, पिंजरेषु अवरुद्धान् विविधविधान् खगान् च दृष्ट्वा रथचालकमपृच्छत्।

'कस्मात् एते पशवः खगाश्च अत्र बद्धाः सन्ति ?"

रथचालकोऽवदत्–'एते पशवः खगाश्च तव विवाहोत्सवे आगतानामतिथिनां भक्षणार्थं समानीताः सन्ति, एषां मासमेव यूयं खादिष्यथ।'

दयाशीलः कुमारोऽचिन्तयत्–'अहो कष्टम्! मदर्थं एषां दोषरहितानां जीवानां वधो भविष्यति कोऽपराधः एषां वराकानां।' इति संचित्यारिष्टनेमिः गृहं प्रत्यागच्छत्, तत्रागत्येत्यचिन्तयच्च–

'किमस्त्यस्य संसारस्य रीतिः, जीवो जीवमेव खादत्यत्र, उदर-पूर्तिः एव सर्वेषां लक्ष्यम् असारे अस्मिन्संसारे कोऽस्ति सारः ? अतोऽसारं संसारं परित्यक्ष्यामि प्रव्रज्याञ्च ग्रहीष्यामि ।'

कुमारः रत्नखचितां शिविकामारुह्य रैवतकं पर्वतमागच्छत, तत्र च श्रीकृष्णबलभद्रादीनां पुरतः पञ्चमुष्टीलोचं कृत्वा प्रव्रज्यामगृह्णात् ।

श्रीकृष्णः सर्वैः परिजनैः सह— 'संयमिन् ! संयममार्गे दृढो भव ! ज्ञानदर्शनचारित्रेषु साफल्यं लभस्व ! मोक्षमधिगच्छ' इत्थं भूतां मङ्गल-कामनां कृत्वा द्वारिकामगच्छत् ।

देवी राजीमती यदा कुमारस्य प्रव्रज्या-ग्रहण-समाचारमशृणोत तदा सा भृशं दुःखिताऽभवत् स्वचित्तेऽचिन्तयच्च 'राजकुमारः मां राज्य-वैभवं च परित्यज्य तपसि लीनः, धिक् मा यदहं भोगेषु अनुरक्तास्मि ।' ततः सापि केशलुंचनं कृत्वा साध्वी अभवत् । तया सह अनेकाः सख्यः दास्यश्च साध्व्योऽभवन् । राजीमती दृढव्रता संयमपरायणा च भूत्वा ज्ञानदर्शनचारित्रप्राप्त्यै यत्नशीलाभवत् ।

एकदा सा मार्गमगच्छत तदा भृशं वर्षाभवत्, तया वर्षया तस्याः वस्त्राण्याप्लावितान्यभवन् । आप्लावितवस्त्रा राजीमती एकस्यां पर्वत-गुहायां प्राविशत् । तत्रासीत्तपसिलीनः समुद्रविजयस्य भूपतेः पुत्रो रथ-नेमिः किन्त्वन्धकारवशात्सा तं नापश्यत्, अतः तया जलेन आप्ला-वितानि वस्त्राणि तथा प्रसारितानि यथा शुष्कानि भवेयः तेन च सा एकान्तं मत्वा निर्वस्त्राऽभवत ।

निर्वस्त्रां तां युवतीं साध्वीं दृष्ट्वा रथनेमेश्चित्ते सुप्ता वासना जागृता । राजीमती च सहसा तं संपश्य शरीरं हस्ताभ्यां संगोप्य वेप-माना तत्रैवातिष्ठत् ।

वेपमानां राजीमतीं विलोक्यावदत् रथनेमिः— 'कस्मात् भीता भवसि सुन्दरि ! अहमस्मि भवत्याः सौन्दर्यस्य रक्षकः । देवांगनादुर्लभं तव यौवनम्, अनुपमेयञ्च तव रूपम् । अहमस्मि युवा, आकांक्षामि यौवन-सुखम् । त्वमपि युवती, अतः यौवनसुखमाकांक्ष । कथं यौवनं दहसि तपस्याग्निना ? संयम-पालनं तु वार्धक्ये पालयिष्यामः ?

वस्त्रै शरीरमावृत्य राजीमती, तपोभ्रष्टं तं रथनेमिमवदत्—'पथभ्रष्ट ! धिक् त्वां, यतो हि वान्तमिव परित्यक्तान्भोगान् पुनः अभिलषसि, अस्मात् घृणितजीवनात् वरं ते मरणम्। न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति, यथेन्धनम् लब्ध्वा अग्निः संवर्धते तथैव कामः संवर्धते भोगान् संलभ्य। क्रोधादिकान् सर्वान् कषायान् जित्वा स्वीकृतं संयमं सरक्ष।

राजीमत्याः उपदेशेन प्रबुद्धमानसः रथनेमिः क्षमायाचनां कृत्वा तस्या चरणयोः न्यपतत्। राजीमती तं संक्षस्य निर्जनं गत्वा कष्टसाध्य तपः तप्त्वा कैवल्यमध्यगच्छत्। रथनेमिः अपि अन्धकारं भित्वोदित सूर्य इव तपोऽतपत, तेन च केवली अभवत्।

धन्या देवी राजीमती पुण्यचरिता

अभ्यास—

(क) (१) राजीमती रथनेमिं किमवदत्।

(२) किमुक्तं रथनेमिना राजीमतीं दृष्ट्वा।

(ख) सन्धिच्छेद कीजिए।

कृष्णस्यानुमत्या, खादत्यत्र, महर्द्धिकः, वस्त्राण्याप्लावितान्यभवन्।

(ग) राजीमती का कथानक हिन्दी मे लिखिए।



चत्वारिंशः पाठः

कृत्–प्रत्यय (क्त और क्तवतु)

क्रिया भेद—क्रिया के मुख्यतः दो रूप है—सकर्मक और अकर्मक।

सकर्मक—उन क्रियाओ को सकर्मक क्रिया कहा जाता है जिनका प्रयोग कर्म सहित होता है। जे--राम पुस्तक पढता है (रामः पुस्तकं पठति) इस वाक्य मे पठ् धातु सकर्मक है, क्योकि उसके साथ पुस्तक रूप कर्म का प्रयोग होता है।

यदि यह कहा जाय कि 'रामः पठति' तब स्वभावतः यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या पढता है ? इस प्रश्न के उत्तर

के रूप में जो कुछ कहा जायगा वही कर्म होगा। यथा-
'**राम पठति किं पठति**' पुस्तक। यहाँ **किं पठति** का उत्तर
है **पुस्तकम्** अतः **पुस्तकम्** कर्म है। इसलिए **पठ धातु** से बने
वाक्य में कर्म-वाचक शब्द न होने पर भी **पठ धातु सकर्मक**
ही होगी।

अकर्मक- कुछ ऐसी क्रियाएं है जिनका फल कर्ता को ही प्राप्त होता है, अतः उनमें कर्म नही होता. ऐसी कर्म-रहित धातुओं को अकर्मक कहा जाता है। जैसे- '**रामः भवति**' इस वाक्य मे भू धातु के साथ कर्म नही और न ही कर्म को जानने की उत्कण्ठा ही जागृत होती है, अतः यह **अकर्मक** धातु है। प्रायः जिन धातुओ के निम्नलिखित अर्थ होते है वे **अकर्मक** ही होती है-**लज्जा** (शर्माना) **सत्ता** (होना), **स्थिति** (ठहरना) **जागरण** (जागना), **वृद्धि** (बढना), **क्षय** (नष्ट होना), **भय** (डरना) **जीवित** (जीना), **मरण** (मरना) **शयन** (सोना) **क्रीडा** (खेलना), **दीप्ति** (चमकना), **रुचि** (अच्छा लगना)।

कृत् प्रयय क्त और क्तवतु

जब हमे किसी कार्य की समाप्ति का बोध कराना होता है तब हम धातु के अन्त मे त (क्त) अथवा तवत् (क्तवतु) प्रत्यय लगा देते है।

यथा-**पठ्+ त= पठितः, गम्+त= गतः, भू+त = भूतः, पठ+तवत्= पठितवान्, गम्+तवत्= गतवान्. भू +तवत् = भूतवान्।**

विशेष- कर्ता की विभक्ति का परिवर्तन-

(१) सकर्मक धातु के साथ जब क्त प्रत्यय लगाया जाता है, तब उसे कर्मवाच्य कहा जाता है। जिसका अभिप्राय यह है कि क्त प्रत्यय वाला क्रिया रूप कर्म का विशेषण बनेगा और उसी के अनुसार उसका लिंग और सातों विभक्तियों के वचन होंगे।

(२) कर्मवाच्य क्रिया का कर्त्ता का रूप प्रथमा विभक्ति वाला न होकर तृतीय विभक्ति वाला हो जाता है। जैसे–

(१) रामेण पुस्तकं पठितम् (राम ने पुस्तक पढी।)

रामेण गीता पठिता (राम ने गीता पढी।)

रामेण ग्रन्थौ पठितौ (राम ने ग्रन्थ पढे)

रामेण शास्त्राणि पठितानि (राम ने शास्त्र पढे)

रामेण कृतेषु कार्येषु अस्ति आस्माकं रुचिः

(राम के द्वारा किए गये कार्यो में हमारी रुचि है)।

यदि क्रिया अकर्मक होती है तो अकर्मक धातु के साथ क्त प्रत्यय लगने पर उसे भाववाच्य कहा जाता है, जिसका अभिप्राय होता है कि क्त प्रत्यय वाले शब्द के लिग, विभक्ति और वचन कर्ता के अनुसार होगे क्योकि वह कर्ता का विशेषण बन जाता है। यथा–

(२) रामः सुप्तः (राम सो गया)

कृष्णः भूतः (कृष्ण हो गया)

छात्रः स्थितः (छात्र ठहरा)

स्थितेन छात्रेण उक्तम् (ठहरे हुए छात्र ने कहा)

पाठशालायां स्थितेषु छात्रेषु रामोऽपि अस्ति।

(ठहरे हुए छात्रों में राम भी है)

विशेष--तवत् प्रत्यय और उसका प्रयोग–

तवत् प्रत्यय वाले शब्द कर्ता के ही विशेषण होते है, अतः उनके लिग वचन आदि कर्ता के अनुसार ही रखे जाते है।

यथाः– छात्रः पुस्तकं पठितवान्।

छात्रौ पुस्तकानि पठितवन्तौ।

छात्राः पुस्तकानि पठितवन्तः।

नीचे प्रसिद्ध धातुओ के क्त प्रत्ययान्त रूप दिये जा रहे हैं, इनका छात्रों को अभ्यास कर लेना चाहिएः–

क्त प्रत्ययान्त

	पुंलिंग		नपुं०	स्त्रीलिंग
पठ्—	पठितः	(सकर्मक)	पठितम्	पठिता
गम्—	गतः	(अकर्मक परन्तु [illegible])	गतम्	गता
त्यज्—	त्यक्तः	(सकर्मक)	त्यक्तम्	त्यक्ता
भू—	भूतः	(अकर्मक)	भूतम्	भूता
नी—	नीतः	(सकर्मक)	नीतम्	नीता
कृ—	कृतः	(सकर्मक)	कृतम्	कृता
पा—	पीतः	(सकर्मक)	पीतम्	पीता
प्रच्छ्—	पृष्टः	(सकर्मक)	पृष्टम्	पृष्टा
श्रु—	श्रुतः	(सकर्मक)	श्रुतम्	श्रुता
छिद्—	छिन्नः	(सकर्मक)	छिन्नम्	छिन्ना
ग्रह्—	गृहीतः	(सकर्मक)	गृहीतम्	गृहीता
दा—	दत्तः	(सकर्मक)	दत्तम्	दत्ता
स्ना	स्नातः	(अकर्मक)	स्नातम्	स्नाता
जि—	जितः	(सकर्मक)	जितम्	जिता
ज्ञा—	ज्ञातः	(सकर्मक)	ज्ञातम्	ज्ञाता
वद्—	उदितः	(सकर्मक)	उदितम्	उदिता
कथ्	कथितः	(सकर्मक)	कथितम्	कथिता
पूज्—	पूजितः	([illegible])	पूजितम्	पूजिता
ध्यै—	ध्यातः	(सकर्मक)	ध्यातम्	ध्याता
स्था—	स्थितः	(अकर्मक)	स्थितम्	स्थिता
दृश्—	दृष्टः	(सकर्मक)	दृष्टम्	दृष्टा
[illegible]	[illegible]	([illegible])	[illegible]आतम्	[illegible]ाता
[illegible]	[illegible]	([illegible])	[illegible]	[illegible]

घ्रा–	घ्रातः	(सकर्मक)	घ्रातम्	घ्राता
दृश्–	दृष्टः	(सकर्मक)	दृष्टम्	दृष्टा
पत्–	पतितः	(सकर्मक)	पतितम्	पतिता
हृञ्–	हृतः	(सकर्मक)	हृतम्	हृता
नम्–	नतः	(सकर्मक भाववाच्य)	नतम्	नता
रक्ष्–	रक्षितः	(सकर्मक)	रक्षितम्	रक्षिता
स्था–	स्थितः	(अकर्मक)	स्थितम्	स्थिता
स्मृ–	स्मृतः	(सकर्मक)	स्मृतम्	स्मृता

रूप–रचना-पुल्लिग में राम शब्द के समान, नपुंसक लिंग में ज्ञान शब्द के समान और स्त्रीलिंग मे रमा शब्द के समान रूप–रचना कीजिए:–

१) सस्कृत से हिन्दी में अनुवाद कीजिए:–

(१) रावणेन सीता हृता ।

(२) रावणेन हृतायाः सीतायाः दर्शनार्थं हनुमान् लंकां गतः ।

(३) कपिना दग्धा लंका ।

(४) कपिना दग्धायां लंकायां हाहाकारो भूतः ।

(५) अस्माभिः सर्वाणि शास्त्राणि पठितानि ।

(६) मुनिभिः पूजितः आचार्यः इत्यवदत् ।

(७) आचार्येण पृष्टैः छात्रैः कथितम् ।

(८) तापसः सर्वं परित्यज्य गहनं वनं गतः ।

(९) रामेण लंकायाः राज्यं बिभीषणाय दत्तम् ।

(१०) सर्वैः श्रावकैः मुनिः प्रशंसितः ।

(११) नष्टो मोहः स्मृतिः लब्धा, तव प्रसादात् मया गुरो ।

(२) हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो–

(१) श्रमण ने पूछा ।

(२) साध्वी ने जल पिया ।

(३) उसका मोह नष्ट हो गया।

(४) मैंने ज्ञान प्राप्त किया।

(५) क्या तूने उसे पकडा था।

(३) नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) उपदिष्टः, (ख) उत्थितः, (ग) समुत्थितः

(घ) संजातः, (ङ) भीतः (च) सुप्तः

(छ) जागृतः, (ज) आगता, (झ) समागता

(क) उपदेश किया, (ख) उठा, (ग) अच्छी तरह उठा

(घ) उत्पन्न हुआ, (ङ) डर गया, (च) सो गया

(छ) जाग गया, (ज) आ गई, (झ) आ गई



एकचत्वारिंशः पाठः

वासुदेवः श्रीकृष्ण

श्रीकृष्णस्य जन्म मथुरायामभवत् द्वापरे युगे। श्रीकृष्णस्य पिता वसुदेवः माता च देवकी आसीत्। वसुदेवस्य गृहे जन्मधारणात् श्रीकृष्णः वासुदेवः इति नाम्ना प्रसिद्धोऽस्ति। देवकी मथुराधिपस्य कंसस्य भगिनी आसीत्।

कंसेन महर्षेः नारदात् श्रुतं यत् देवक्याः अष्टमः पुत्रः एव तस्य घातकः भविष्यति, अतः तेन देवक्या सह वसुदेवः कारागारे निक्षिप्तः। तत्रैव श्रीकृष्णस्योत्पत्तिः अभवत्।

श्रीकृष्णस्य जन्मनि भूते देवमायया सर्वे कारागार-रक्षकाः प्रसुप्ताः। वसुदेवः यमुनामुल्लंघ्य बालं श्रीकृष्णं गृहीत्वा गोकुलं गतः। तस्मिन्नेव दिने वसुदेवस्य मित्रस्य नन्दस्य गृहे एका कन्या जाता। वसुदेवेन सा कन्या गृहीता पुत्रस्य तत्र स्थापितः। कन्यां गृहीत्वा सः पुनः कारागारमागतः सा च कन्या कंसेन हता।

श्रीकृष्णेन कंस-प्रेषिताः राक्षसाः लीलयैव हताः, तेन कंसस्य मानसं भृशं आकुलञ्चाभवत् ।

श्रीकृष्णस्य प्रियतरं खाद्यमासीत् गोरसम्-दुग्ध, दधि, तक्रं नवनीतञ्च । यदि कापि गोकुलवासिनी नवनीत, दधि, दुग्धञ्च मथुरायां विक्रयार्थं नयति तर्हि श्रीकृष्णः मित्रैः सह तस्याः भाण्डानि भिनत्ति, येन हि राक्षसाः नवनीतं भुक्त्वा दुग्धञ्च पीत्वा परिपुष्टा न भवेयुः ।

श्रीकृष्णस्य वेणुवादनं सर्वेषां प्रियमासीत् । वेणुनादेन मुग्धाभिः गोपबालाभिः गृहाणि अपि त्यक्तानि, कार्याणि च विस्मृतानि । पशवः खगाश्च वेणुनादेन मुग्धाः संभूताः ।

श्रीकृष्णेन दुष्टो भूपतिः कंसो हतः, जननीजनकौ च कारागारात् बहिः आनीतौ । मातृमहायोग्रसेनाय राज्यं प्रदाय श्रीकृष्ण द्वारिकामगच्छत् ।

श्रीकृष्णस्यैव काले पाण्डवानां कौरवैः सह युद्धोऽभवत् । तस्मिन् युद्धे श्रीकृष्णः स्वमित्रस्य अर्जुनस्य रथचालकः आसीत् ।

अर्जुनः युद्धे स्वजनान् दृष्ट्वा मोहमुपागतः । सः सशरं चापं भूमौ निक्षिप्य रथे तूष्णीं स्थितः । मोहपाशेन बद्धं अर्जुनं संपश्य श्रीकृष्णेनेदमुक्तम्—

पार्थ ! मोहं त्यज ! अधिकारप्राप्तिः मनुष्यस्य धर्मः । अधिकारप्राप्त्यै यत्नशीलो भव । आत्मा अजरः अमरः, न हन्यते हन्यमाने शरीरे कर्मबन्धेन मनुष्याः स्वर्गं नरकञ्च यान्ति । कर्मबन्धन मुक्ताः मानवाः मोक्षं गच्छन्ति । श्रीकृष्णस्योपदेशः गीतायां संग्रहीतः अस्ति ।

श्रीकृष्णस्योपदेशेन अर्जुनः युद्धे प्रवृत्तः, परन्तु तेन युद्धेन पाण्डवानां मनः व्याकुलोऽभूत् अतः युद्धे कृतायाः हिंसायाः प्रायश्चित्तार्थं हिमालयं गताः, तत्र च तपस्यया आत्मशुद्धेः प्रयासं अकुर्वन् ।

श्रीकृष्णोऽपि द्वारिकां गतः, तत्र च यादव-विनाशं दृष्ट्वा परलोकं गतः

(वैष्णवसम्प्रदायानुसारिणीयं गाथा)

अभ्यास–

१ (क) कः आसीत् कंसः ?

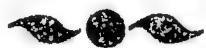
(ख) श्रीकृष्णः कस्मात् गोपिकानां गोरस-भाण्डानि अभिन्दत् ।

२ श्रीकृष्णेन गीतायां किमुक्तम् ।

३ श्रीकृष्ण का संक्षिप्त जीवन हिन्दी मे लिखिए ।

४ सन्धिच्छेद कीजिए–

तत्रैव, श्रीकृष्णस्योत्पत्तिः, श्रीकृष्णेनेदमुक्तम् श्रीकृष्णस्योपदेशेन श्रीकृष्णोऽपि ।



द्विचत्वारिंशः पाठः

वाग्व्यवहारः (मुहावरे)

१ इन्द्रोऽपिलघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैः गुणैः–इन्द्र भी अपने गुण
(अपने मुंह मिया मिट्ठू) कहने से छोटा हो जाता है ।

२ कष्टः खलु पराश्रयः–पराधीनता कष्ट दायक है
(पराधीन सपनेहु सुख नाही)

३ बह्वारम्भे लघुक्रिया–बडा आरम्भ और छोटा फल ।
(खोदा पहाड निकली चूहिया)

४ जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः– बूंद बूंद गिरने से घडा
(बूंद बूंद से घट भरे) भरता है ।

५ वीरभोग्या वसुन्धरा–पृथ्वी वीरो के द्वारा ही भोगी जाती है ।
(जिसकी लाठी उसकी भैंस)

६ दूरस्थाः पर्वताः रम्याः– दूर से पर्वत सुन्दर लगते हैं ।
(दूर के ढोल सुहावने)

७ न मुनिः पुनरायातो न चासौ वर्धते गिरिः–न मुनि फिर आये न
(न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी) पर्वत बढा ।

८ गतस्य शोचनं नास्ति–बीते हुए की चिन्ता नही ।
(बीती ताहि बिसारदे, आगे की सुध लेय)

९ एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा– एक काम दो फल देने वाला प्रसिद्ध है ।
(एक पथ दो काज)

१० परोपदेशे पाण्डित्यं–दूसरों को उपदेश देने मे ही विद्वत्ता है ।
(पर उपदेश कुशल बहुतेरे)

११ विषकुम्भं पयो मुखम्–जहर का घडा, ऊपर दूध ।
(मुह मे राम बगल मे छुरी)

१२ चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च–दुख और सुख चक्र के समान आते जाते रहते हैं ।
(चार दिनों की चाँदनी फिर अंधेरी रत)

१३ सर्वनाशे समुत्पन्ने ह्यर्धं त्यजति पण्डितः–सब कुछ जाता देखकर विद्वान् कुछ का त्याग कर देता है ।
(भागते चोर की लंगोटी ही भली)

१४ सहवासी विजानाति चरित्रं सहवासिनः–साथी का हाल साथी ही जानता है ।
(घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय)

१५ न विडालो भवेद् यत्र तत्र नृत्यन्ति मूषकाः–जहां बिल्ली नहीं वहीं चूहे नाचते हैं ।
(घर वाला घर नही, हमे किसी का डर नही)

१६ शुभस्य शीघ्रम्–शुभ कार्य शीघ्र ही करना चाहिये ।
(तुरंत दान महा कल्याण)



त्रयश्चत्वारिंशः पाठः

सिद्धार्थः बुद्धः

आसीत् पुरा कपिलवस्तुनाम्नः नगरस्य राजा शुद्धोदनः । तस्य च धर्मशीला भार्या महामाया आसीत् । सा चैकदा रथमारुह्य लुम्बनीवनं गता । तत्रैव रथे तस्याः पुत्रः जातः, यः प्राक् 'सिद्धार्थः' इति नाम्ना प्रसिद्धः । सिद्धार्थस्य जनन्याः महा–

मातायाः सिद्धार्थस्य जन्मनः सप्तमे दिने निधनं भूतम् । बालकस्य पोषणं तस्य मातृष्वस्रा (मौसी तुलीया) गौतम्या कृतं ।

सिद्धार्थः प्रकृत्यैव दयाशीलः सत्यभाषी संसारात् उदासीनश्च आसीत् । यदा कुमारः अष्टादशवर्षीयो जातः तदा तस्य यशोधराख्यया कन्यया सह विवाहः सम्पन्नः । लोकाचारेण बद्धः सिद्धार्थः गृहे आसीत्, किन्तु तस्य चित्तेन तत्र सुखं नानुभूतम् ।

एकदा सिद्धार्थेन एको वृद्धः दृष्टः, यः दण्ड गृहीत्वा नमितकटिः चलतिस्म । मुण्डं पलितं, तुण्डं दशनविहीनं चासीत् । सिद्धार्थोऽचिन्तयत् 'एषापि मनुष्यस्य गतिः ।'

एकदा सः एकं वेदनाविह्वलं रुग्णमपश्यत्, तं दृष्ट्वा कुमारोऽवदत् 'रोगैरावृतमपिजीवनम् ।'

एकदा च कुमारः एकं शवं अपश्यत्—तदा तस्य मुखात् श्रुतं जनैः-'मरणाक्रान्तञ्च जीवितम् ।'

आभिः घटनाभिः कुमारस्य मनसि वैराग्यस्योदयोऽभवत् । एकदा निशीथे पत्नीं पुत्रं च परित्यज्य रथमारुह्य स वनं प्रस्थितः—मार्गे च रथवाहकं छन्दकं रथं च परावृत्य सः गहनं वनं प्राप्तः । तत्र च तेन दुष्करा तपस्या कृता । तया तपस्यया तेन बुद्धत्वं-(पूर्ण बोधि) उपलब्धम् । तेनैव सः बुद्धः इति प्रसिद्धः ।

बुद्धः सारनाथमागत्य पंचवर्गीयेभ्यः भिक्षुभ्यः उपदेशमयच्छत् । सः भिक्षार्थं स्वगृहमपि गतः—तत्र च यशोधरा अपि पतिमनुकृत्य भिक्षुणी अभवत्, बुद्धस्य पुत्रेण राहुलेनापि प्रव्रज्या गृहीता ।

सारिपुत्रः मौद्गलायनश्च बुद्धस्य प्रमुखौ शिष्यौ आस्ताम् । बुद्धस्य धर्ममार्गः मध्यममार्गः । बुध्द इत्युपादिशत् सम्यक्समयाचारः, सम्यक्विचारः, सम्यक् भाषणं, सम्यक् चरित्रम्,

सम्यक् जीवनम्, सम्यक् प्रयत्नं, सम्यक् चिन्तनम्, सम्यक् ध्यानञ्च-एतानि अष्टौ साधनानि मोक्षसाधकानि सन्ति ।

बौध्दधर्मस्य प्रचारः चीने, जापाने, ब्रह्मदेशे, श्यामे वालिद्वीपे, सिंहलद्वीपे, मंगोलियादेशे, थाइलैण्ड प्रदेशे च अद्यापि अस्ति । तेषां कृते भारतः धर्मगुरुः । नमन्ति ते बुध्दजन्म-प्रदातारं भारतम् ।

अभ्यास-

(१) कुमारस्य हृदये कथं वैराग्यस्योदयः जातः ?

(२) बुद्धः किमुपदिशत् ?

(३) कस्मात् कारणात् बुद्धः बुद्ध इति नाम्ना प्रसिद्धः ?

(४) बुद्धस्य मते कानि मोक्षसाधनानि सन्ति ?



चतुश्चत्वारिंशः पाठः

ऋकारान्त पितृ शब्द (पुल्लिंग) पिता

कर्ता-	पिता	पितरौ	पितरः
कर्म-	पितरम्	,,	पितॄन्
करण-	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
सम्प्रदान-	पित्रे	,,	पितृभ्यः
अपादान-	पितुः	,,	,,
सम्बन्ध-	,,	पित्रोः	पितॄणाम्
अधिकरण-	पितरि	,,	पितृषु
सम्बोधन-	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

इसी प्रकार-भ्रातृ (भाई) जामातृ (जवाई) देवृ (देवर) शब्दों की रूप रचना कीजिए ।

विशेष-सम्बन्धवाचक ऋकारान्त शब्दों में शब्द की अन्तिम ऋ को प्रथमा द्विवचन से लेकर द्वितीया द्विवचन तक अर् आदेश हो जाता है। शेष में आर् होता है।

ऋकारान्त कर्तृ शब्द (पुंल्लिग)

(काम करने वाला या निर्माता)

कर्ता—	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
कर्म—	कर्तारम्	,,	कर्तॄन्
करण	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
सम्प्रदान—	कर्त्रे	,,	कर्तृभ्यः
अपादान—	कर्तुः	,,	,,
सम्बन्ध—	,,	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्
अधिकरण—	कर्तरि	,,	कर्तृषु
सम्वोधन—	हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः

इसी प्रकार—दातृ (देनेवाला) श्रोतृ (सुननेवाला) गन्तृ (जानेवाला) नेतृ (ले जानेवाला) सवितृ (सूर्य) द्रष्टृ (देखनेवाला) वक्तृ (बोलनेवाला) धातृ (ब्रह्मा) उपदेष्टृ (उपदेशक) इन शब्दों की भी कर्तृ शब्द के समान रूप रचना कीजिए।

ऋकारान्त मातृ शब्द (स्त्रीलिंग)—माता

कर्ता	माता	मातरौ	मातरः
कर्म -	मातरम्	,,	मातॄः
करण—	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
सम्प्रदान—	मात्रे	,,	मातृभ्यः
अपादान—	मातुः	,,	,,
सम्बन्ध—	,,	मात्रोः	मातॄणाम्
अधिकरण—	मातरि	,,	मातृषु
सम्बोधन—	हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः

लभ् (प्राप्त करना) भ्वादि आत्मनेपदी

विशेष—धातुओं के दो रूप है—परस्मैपदी, आत्मनेपदी। प्राचीन काल मे इनके प्रयोग मे कुछ भेद माना गया था, परन्तु अब केवल रूपरचना में भेद है प्रयोग में नहीं। आत्मनेपदी धातुओं के साथ सभी लकारो में प्रत्यय लभ् धातु के समान ही लगाए जाते है।

लट्

लभते	लभेते	लभन्ते
लभसे	लभेथे	लभध्वे
लभे	लभावहे	लभामहे

लङ्

अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट्

लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट्

लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ्

लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
लभेय	लभेवहि	लभेमहि

अभ्यास—

(१) नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) राम पिता की आज्ञा से वन में गए थे।

(ख) महावीर अपनी इच्छा से वन मे गए थे।

(ग) बुद्ध भी अपनी इच्छा से तप करने गए थे।

(घ) मै पिताजी को नमस्कार करता हूँ।

(ङ) वह माता जी को नमस्कार करता है।

(२) नीचे लिखे संवाद का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

पर्युपासना—फलम्

गौतम— भगवन् ! श्रमणस्य माहनस्य सेवायाः किं फलम् लभते जनः ?

महावीर— गौतम ! श्रमणस्य माहनस्य सेवया धर्मश्रवणं लभते जनः ।

गौतम— भगवन् ! धर्म श्रवणेन किं फलं जनः लभते ?

महावीर— गौतम ! धर्म—श्रवणेन ज्ञानं लभते ।

गौतम—भगवन् ! किं लभते जनः ज्ञानेन ?

महावीर— गौतम ! ज्ञानेन लभते जनः विज्ञानम् ।

गौतम—भगवन् ! विज्ञानेन किं लभते साधकः ?

महावीर— गौतम ! विज्ञानेन प्रत्याख्यानं (त्यागवृत्ति) जनः लभते ।

गौतम— भगवन् ! प्रत्याख्यानेन किं फलं लभते ?

महावीर— गौतम ! प्रत्याख्यानेन संयमात्मक फलं लभते साधकः ।

गौतम— भगवन् ! संयमेन किं फलं लभते जनः ?

महावीर— गौतम ! संयमेनावरुद्धो भवति कर्मप्रवाहस्तेन जीवः अनास्रवी भवति ।

गौतम— भगवन् ! अनास्रवत्वेन किं फलं लभते जन. ?

महावीर— गौतम ! अनास्रवत्वेन तपः लभते साधकः ।

गौतम— भगवन् ! तपसा कि फलं लभते साधकः ?

महावीर—गौतम ! तपसा कर्मक्षयः भवति साधकस्य ।

गौतम— भगवन् ! कर्मक्षयेन किं फलं लभते जनः ?

महावीर— गौतम ! कर्मक्षयेन जीवः अक्रियो भवति ।

गौतम— भगवन् ! अक्रियत्वेन किं लभते साधकः ।

महावीर— गौतम ! अक्रियत्वेन सिद्धि लभते जनः ।

श्रमणस्य माहनस्य पर्युपासनायाः चरमं फलं सिद्धिः एव अस्ति गौतम् !

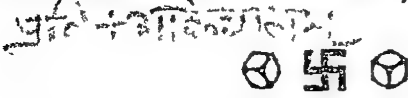
गौतम— धन्योऽस्मि देव ! भवता प्रदत्तेनज्ञानेन ! (भगवती—सूत्र)

अभ्यास—

(१) श्रमण की सेवा का सबसे बडा लाभ क्या है ?

(२) निम्नलिखित शब्दों की विभक्तियाँ और वचन बताइए—

प्रत्याख्यानम्, अलास्रवत्वेन, कर्मक्षयः पर्युपासनायाः ।



卐

पंचचत्वारिंशः पाठः

उकारान्त साधु शब्द (पुल्लिंग)

कर्ता—	साधुः	साधू	साधवः
कर्म -	साधुम्	,,	साधून्
करण—	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
सम्प्रदान—	साधवे	,,	साधुभ्यः
अपादान—	साधोः	,,	,,
सम्वन्ध—	,,	साध्वोः	साधूनाम्
अधिकरण—	साधौ	,,	साधुषु
सम्बोधन—	हे साधो	हे साधू	हे साधवः

इसी प्रकार— गुरु, रिपु, शत्रु, विष्णु, शम्भु, वायु, मृत्यु, प्रभु, विधु (चन्द्र), उरु (जांघ), कृशानु (अग्नि) आदि शब्दों की रूप-रचना कीजिए ।

विशेष—जिन शब्दों में र् ष हों उन शब्दों के तृतीया के एकवचन में 'न' को 'ण' हो जाता है । इसी प्रकार षष्ठी के बहुवचन में 'नाम्' को 'णाम्' हो जाता है । जैसे—गुरुणा, गुरुणाम् ।

सन्धि-ज्ञान—यदि प्रथम शब्द के अन्त मे 'तवर्ग' हो और सामने आने वाले शब्द के आरम्भ में 'ल' हो तो 'त वर्ग' को भी 'ल्' हो जाता है और वह 'ल्' सामने के 'ल्' के साथ मिल जाता है ।

यथा– तत्+लीनः– तल् लीनः = तल्लीनः (उस में लीन)

उद्+लेखः– उल् लेखः = उल्लेखः (लिखा जाना)

उद्+लंघनम्– उल् लंघनम् = उल्लंघनम् (लांघना)

सत्+लक्षणम्– सल् लक्षणम् = सल्लक्षणम् (अच्छे लक्षण)

व्याकरण–ज्ञान- जिस क्रिया के लिये कोई अन्य क्रिया की जाती है, उस क्रिया के साथ तुम् (तुमुन्) लगाकर उसका, के लिय अर्थ प्रकट किया जाता है। यथा–**गन्तुम्** (जाने के लिये) **द्रष्टुम्** (देखने के लिये)।

विशेष-(१) जिस क्रिया के लिये कोई क्रिया की जाती है–उन दोनो क्रियाओ का कर्ता एक ही होना चाहिए।

(२) 'तुम्' जिसके अन्त मे हो वह अव्यय हो जाता है–अतः उसका रूप सदा एक सा रहता है।

अर्चितुम्–	पूजा करने के लिये	**जेतुम्**–	जीतने के लिये
अध्येतुम्–	पढने के लिये	**हर्तुम्**–	हरण के लिये
कर्तुम्–	करने के लिये	**यष्टुम्**–	यज्ञ करने के लिये
क्रेतुम्–	खरीदने के लिये	**ज्ञातुम्**–	जानने के लिये
त्यक्तुम्–	छोडने के लिये	**आरोढुम्**–	चढने के लिये
द्रष्टुम्–	देखने के लिये	**लब्धुम्**–	प्राप्त करने के लिये
प्रणन्तुम्–	नमस्कार करने के लिये	**नेतुम्**–	ले जाने के लिये
धावितुम्–	दौडने के लिये	**गन्तुम्**–	जाने के लिये
पक्तुम्–	पकाने के लिये	**मोक्तुम्**	छोडने के लिये
प्रष्टुम्–	पूछने के लिये	**श्रोतुम्**–	सुनने के लिये
वक्तुम्–	बोलने के लिये	**सेवितुम्**–	सेवा करने के लिये
स्तोतुम्–	स्तुति करने के लिये	**पातुम्**–	पीने के लिये
स्थातुम्–	ठहरने के लिये	**हन्तुम्**–	मारने के लिये
स्नातुम्–	स्नान करने के लिये	**स्मर्तुम्**–	स्मरण करने के लिये

दातुम्–	देने के लिये	शोचितुम्–	सोचने के लिये
स्प्रष्टुम्–	छूने के लिये	सोढुम्–	सहन करने के लिये
ग्रहीतुम्–	लेने के लिये	चिन्तयितुम्–	सोचने के लिये
भक्षयितुम्–	खाने के लिये	ज्ञापयितुम्–	सुचित करने के लिये

अभ्यास–

नीचे लिखे संवाद का हिन्दी मे अनुवाद कीजिए:–

रमेश–सुरेश ! त्वं कुत्र गन्तुमुद्यत: असि ?

सुरेश–मित्र ! अहं स्थानकं गच्छामि।

रमेश–किं कर्तुंतत्र गच्छसि ।

सुरेश–तत्रास्ति वार्षिकोत्सव, तं द्रष्टुम् गच्छामि।

रमेश–किं भविष्यति तत्रोत्सवे ?

सुरेश–साधूनामुपदेशा, तान् श्रोतुमेव गच्छामि।

रमेश–किं भविष्यत्युपदेश–श्रवणेन ?

सुरेश–उपदेश–श्रवणेन चित्तं शान्तिं लभते, यदा साधवः उपदिशन्ति तदा तत्र सर्वे दत्त–चित्ताः भवन्ति।

रमेश–अहमपि गन्तुमिच्छामि त्वया सह ?

सुरेश–आगच्छ मित्र ! आवां द्वौ एव तत्र गच्छावः।

卐 ✕ 卐

षट्चत्वारिंशः पाठः

देवी रोहिणी

आसीद् वैशाली नगरे 'धन्नाजी' इति नाम्ना प्रसिद्धः श्रेष्ठी, तस्य चासन् चत्वारः पुत्रः– धनपालः, धनदेवः धनगोपः, धनरक्षितश्च।

एषां श्रेष्ठिपुत्राणामासन् चतस्रः भार्याः, ताभिश्च भृशं सन्तुष्ट–श्चासीच्छ्रेष्ठी, किन्तु कस्यै वध्वै गृहरक्षा-दायित्वं प्रदाय निश्चिन्तो भवामीति चिन्तया नितरां व्याकुलमासीत्तस्य चित्तम्।

आसीच्छ्रेष्ठी कुशलबुद्धिः, अतस्तेन परीक्षार्थं चतसृभ्यो वधूभ्यः पञ्च पञ्च तण्डुलानि प्रदायेति कथितम्– 'अलभ्यान्येतानि खलु तण्डुलानि भवतीभिः स्वान्तिके निधाय रक्षितव्यानि यदाहं याचयिष्यामि तदा मह्यं प्रयच्छत यूयम् । तण्डुलानि वधूभ्यः दत्त्वा गतः श्रेष्ठी ।

गते श्रेष्ठिनि ज्येष्ठा वधूः अचिन्तयत्– 'भ्रष्टा खलु बुद्धिः वार्धक्येन श्वशुरस्य, किमलभ्यतैषां तण्डुलानां, तण्डुलानि तण्डुलान्येव सन्ति, न सन्ति स्वर्णमुद्राः । संचिन्त्येति प्रक्षिप्तानि तानि तण्डुलानि तया वीथ्याम् ।

द्वितीयया वध्वेति संचिन्त्य भक्षितानि तण्डुलानि–एतानि तण्डुलान्यलभ्यः प्रसादः श्वसुरस्य, सफलमनोरथा भविष्याम्यनेन प्रसाद-भक्षणेन

तीतृयया वध्वा स्वर्णमञ्जूषायां निधाय सुरक्षितानि तानि तण्डुलानि ।

कनिष्ठया चतुर्थया वध्वा तानि तण्डुलानि पितृगृहे प्रेषितानि, अयं सन्देशश्च प्रेषितः–'इमानि तण्डुलानि सुक्षेत्रे वपेयुः । तस्याः पितापि तानि तण्डुलानि सुक्षेत्रेऽवपत्, तेन च तानि अर्धशतसंख्यकान्यभवन् ।

तस्यः जनकः सार्धशतसंख्यकानि तानि तण्डुलानि पुनः अवपत् तेन च तानि सपादशतसेरप्रमाणानि अभवन् । पुनः वपनेन चतुर्थे खलु वर्षे तानि तण्डुलानि पंचशताधिकद्वादशसहस्रसेरप्रमाणानि अभवन् । इत्थमेव पञ्चमे वर्षे तेषां मानं सार्धशतद्वयोत्तरुकत्रिशत्सहस्र मनप्रमाणं जातं ।

व्यतीतेषु पञ्चसु वर्षेषु यदा श्रेष्ठी सर्वान् पुत्रानाहूय तेषां पुरतः वधूभ्यस्तण्डुलान्ययाचत्, तदा ज्येष्ठा वधू अवदत्–तुच्छानि तानि तण्डुलानि मया तु तदैव वीथ्यां क्षिप्तानि, सन्त्यन्नागारे बहूनि तादृशानि तण्डुलानि तेभ्यः पञ्च गृह्णातु भवान् ।"

तस्याः अनेनोत्तरेण रुष्टः श्रेष्ठी, अतः तेन सा गृहमार्जने, पात्र-शुद्धौ, अन्नप्रेषणे च नियुक्ता, उज्झिता च तस्याः नाम कृतम् ।

प्रसादं मत्वा या चाभक्षत्तानि तण्डुलानि सा च वधू तेन पाक-शालायां पाककर्मणि नियुक्ता 'भोगवती' इति च तस्याः नाम कृतम् ।

यया च वध्वा तानि कनकमञ्जूषायां स्थापितानि सा च तेन धनागारे नियुक्ता, रक्षिता च तस्याः नाम कृतम् ।

श्वसुरेण पृष्टया कनिष्ठया वध्वोक्तम्– पितः ! तानि तण्डुलानि मया तदैव पितृगृहे प्रेषितानि साम्प्रतञ्च तानि प्रभूतानि जातानि, अतः तेषामानयनाय प्रेष्यन्तु अनेकान् शकटान् मम पितृगृहे ।

श्रेष्ठि-प्रेषिताः शकटाः तण्डुलभारप्रपूरिताः यदा, वैशालीं प्रत्यागताः, तदा तान् दृष्ट्वा नितरां मुदितोऽभवत् श्रेष्ठी । कनिष्ठायाः वध्याः प्रज्ञया सन्तुष्टेन श्रेष्ठिना तस्याः नाम 'रोहिणी' इति कृतम् । तस्यै एव तेन गृहरक्षा दायित्वमपि प्रदत्तम् ।

सर्वे बान्धवास्तस्याः पत्या सह तामशंसन् । सैव नारी प्रशंसनीयाभिनन्दनीया च भवति या वंशधराणां समादरं करोति, तेषामाज्ञाञ्च पालयति, या च विचार्यैव कर्म करोति ।

अभ्यास–

(१) नीचे लिखे शब्दों का अर्थ सहित अभ्यास कीजिए:–

श्रेष्ठिन् (सेठ), दायित्वम् (भार, जिम्मेवारी), तण्डुलम् (चावल), स्वान्तिके (अपने पास), निधाय (रखकर), वार्धक्यम् (बुढापा), वीथी (गली), स्वर्ण मञ्जूषा (सोने की डिबीया) सार्धशतम् (एक सौ पचास–१५०), सपादशतसेरप्रमाणानि (सवा सौ सेर वजन के), पंच-शताधिकद्वादशसहस्र सेर प्रमाणानि (१२५०० सेर वजन वाले), सार्धशतद्वयोत्तरैकत्रिंशत् – सहस्रमनप्रमाणम् (३१२५० मन वजन वाले) गृहमार्जने (घर में झाडू लगाने के काम पर), पात्रशुद्धौ (बर्तन मांजने के काम पर), अन्नपेषणे (अनाज पीसने के काम पर) मत्वा (मानकर), प्रभूतम् (प्रभूतानि) (बहुत अधिक), शकटः (बैलगाडी), वंशधरः (कुल के बडे बूढे लोग) ।

(२) निम्नलिखित शब्दों में सन्धिच्छेद करते हुए उनका वाक्यों मे प्रयोग कीजिए:–

सन्तुष्टश्चासीच्छ्रेष्ठी (सन्तुष्टः+च+आसीत्+श्रेष्ठी ।)

अलभ्यान्येतानि अलभ्यानि+एतानि ।

सन्त्यन्नागारे (सन्ति+अन्न+आगारे ।

(३) देवी रोहिणी की कथा हिन्दी मे लिखिए ?

(४) रोहिणी पर श्रेष्ठी क्यों प्रसन्न हुआ ? उसके गुणों का परिचय दीजिए ?

卐 ※ 卐

सप्तचत्वारिंशः पाठः

नमस्कार–मन्त्रम्

शिष्यः–भगवन् ! नमस्कारमन्त्रं ज्ञातुमिच्छामि, उपदिशतु भवान् ?

गुरुः–वत्स ! श्रेष्ठा हि नूनं तव जिज्ञासा, वदामि नमस्कार–मन्त्रम्–दत्तचित्तो भूत्वा शृणु–

णमो अरिहन्ताणं (नमः अरिहन्तेभ्यः)

णमो सिद्धाणं (नमः सिद्धेभ्यः)

णमो आयरियाणं (नमः आचार्येभ्यः)

णमो उवज्झायाणं (नमः उपाध्यायेभ्यः)

णमो लोए सव्वसाहूणं (नमः लोके सर्वसाधुभ्यः)

शिष्यः–देव ! प्राकृतभाषायामस्ति एतत् नमस्कारमन्त्रम्, प्राकृत–भाषयै–वैषामुच्चारणं करणीयम् ?

गुरुः– ओम् वत्स ! स्वाभाविकी खल्वियं भाषा, यतो हि सृष्टया आरम्भे मनुष्यस्य हृदयात्स्वाभाविकेन रूपेण निस्सृतेयं भाषा। नमस्कार–क्रियापि स्वाभाविकी नतु कृत्रिमा, स्वाभाविकं पुण्यं कार्यं स्वाभाविकया पुण्यभाषयैव करणीयम्, अतः प्राकृतभाष–यैवैषां मन्त्राणामुच्चारणमुचितम्।

शिष्याः–के हि खलु अरिहन्ताः भगवन् ! कोऽर्थः अरिहन्तेति शब्दस्य।

गुरुः– रागद्वेषादयः एव मानवस्य यथार्थेन शत्रवः, तान् शत्रून् ये घातयन्ति ते एव अरिहन्ताः, तीर्थङ्कराः देवाः कैवल्यं गताश्चा–त्मानः अरिहन्ताः, तेभ्यः नमस्कुर्मो वयम्।

शिष्यः–के हि खलु सिद्धाः भगवन् ! कोऽर्थः सिद्धशब्दस्य ?

गुरुः– नष्टानि खलु यैः पुण्यशीलैः तपोनिरतैः लोके नरके स्वर्गे च जन्म–मृत्युप्रदानि कर्माणि, यैश्च खलु प्राप्तात्मसिद्धिः, एवं भूताः सिद्धशिलाञ्च प्राप्ताः मुक्तात्मानः एव सिद्धाः । तेषां नमस्कारेण सर्वेषु कार्येषु वयमपि सिद्धिं लभामहे ।

शिष्यः–मयि कृपां कृत्वा आचार्य शब्दस्यार्थमपि प्रकाशयन्तु भवन्तः ।

गुरुः– चतुर्विधस्य श्रीसंघस्य ये हि खलु पथप्रदर्शकाः, ज्ञान–दर्शनचारित्र–तपोवीर्यरूपमाचारं ये आचरन्ति श्रमणान् श्रावकांश्च आचारपालनार्थं प्रेरयन्ति, एवं भूताः संघ–नायकाः श्रमणश्रेष्ठाः आचार्याः । तान् नमस्कृत्य वयं तान् प्रति स्वकीयां श्रद्धां प्रकाशयामः ।

शिष्यः–उपाध्यायमपि ज्ञातुमिच्छामि, कृपां कृत्वा कथयन्तु भवन्तः ?

गुरुः– अधीतानि येन हि खलु आगमानि, संघस्थान् श्रमणान् श्रावकांश्च यः पाठयति शास्त्राणि सः उपाध्यायः । उप–कुर्वन्त्यस्मान् विद्यादानेन खलु उपाध्यायाः, अतः तेऽपि नमस्कारयोग्याः । नमेम नमस्करणीयान् इत्यस्माकं धर्मः ।

शिष्यः–कथयतु साधु' शब्दस्यापि अर्थम्, कृपास्ति यदि ते मयि?

गुरुः– साधनाशीलाः ये खलु श्रमणाः, अहिंसासत्यास्तेयापरि–ग्रहब्रह्मचर्य रूपान् पञ्च महाव्रतान् च ये निष्ठया परि–पालयन्ति तेहि साधवः । वयं साधूनपि श्रद्धया नमामः । वत्स ! उदारः खलु जैनधर्मः, अतः जैनधर्मावलम्बिनः नहि जैनाचार्यान् नहि जैनोपाध्यायान् नहि च जैन–साधून्नेव नमन्ति तेहि खलु उदारेण भावेन् सर्वान् आचार्यान्, सर्वान् उपाध्यायान् सर्वान् साधून् नमन्ति इत्येवास्ति जैनधर्मस्यौदार्यम् ।

शिष्य:—किं फलं लभतेऽनेन नमस्कारेण मानवः—

गुरुः— उक्तमस्य फलं भगवता महावीरेण प्राकृतभाषायामेव—

एसो पंच णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलम् ॥

एषः पञ्चरूपात्मकः नमस्कारः सर्वेषां पापकर्मणां विनाशकः सर्वेषु मङ्गलविधायकेषु नमस्कार—मन्त्रेषु उत्तमं नमस्कारमन्त्रम्, अस्य हि श्रद्धयोच्चारणमात्रेण सर्वे जनाः मङ्गलं लभन्ते ।

शिष्यः—कृतार्थोऽस्मि देव ! ज्ञान—प्रदानरूपानुग्रहेण !
नमः गुरुभ्यः ।

अभ्यास—

(१) किं फलम् नमस्कारमन्त्रस्य ?
(२) कोऽर्थः अरिहन्त शब्दस्य ?
(३) किमस्ति जैनधर्मस्यौदार्यम् ?



अष्टचत्वारिंशः पाठः

देवदत्तस्य—आपणः

(व्यापारिक शब्द-राशिः)

दिल्लीनगरेऽस्ति एकः विपणिः, यो हि 'खारी बावली' नाम्ना प्रसिद्धः । तस्मिन्विपणौ अस्ति देवदत्तस्य पंजीकृतः आपणः, देवदत्तः प्रसिद्धः खलु आपणिकः । कोटिप्रमाणेन मूलधनेन तेन व्यापारः आरब्धः, साम्प्रतम् अस्ति तस्य आपणस्य शतकोटिप्रमाणं अनुमानितं मूल्यम् ।

देवदत्तस्यास्ति अन्नस्य अभिकरणम्, सः गोधूमानां वस्त्राणाञ्च मुख्यः अभिकर्ता अस्ति ।

सः अधमर्णेभ्यः ऋणमपि यच्छति तस्य च कुसीदम् गृह्णाति ।

देवदत्तस्य संग्रहणे गोधूमस्य शणपुटीनां अस्ति महान् राशिः। अपरे संग्रहणे शणपुटैः बद्धानि नानाविधानि पाश्चत्येभ्यो देशेभ्यो आयातितानि वस्त्राणि सन्ति। सः गोधूमानां निर्यातमपि करोति।

सः तदा पण्यानां संग्रह करोति यदा पण्यानां अर्घापचितिः भवति। अर्घापचितौ सः पण्यानि विक्रीणाति, तेन सः लाभं अधिगच्छति।

सः ग्राहकेभ्यः ऋणत्वेनापि पण्यानि यच्छति मौद्रिकत्वेनापि च। सः ऋणत्वेन दीयमानानां पण्यानां विवरणं मूल्यञ्च मौद्रिकपत्रं लिखित्वा ग्राहकेभ्यः यच्छति, ते च सद्यः एव वस्तुमूल्यं मुद्राभिः मुद्रापत्रैश्च तस्मै प्रयच्छन्ति।

ऋणत्वेन दीयमानानां पण्यानां विवरणं मूल्यञ्च ऋणपत्रे संलिखति, तत् च ग्राहकः हस्ताक्षरेण प्रमाणीकरोति, तदा सः तस्य प्रतिलिपि ग्राहकाय यच्छति। सः कालान्तरे मूल्यं प्रेष्यति।

अल्पं पण्यं ग्राहकाः स्वयमेव नयन्ति, ईषदधिकं भारवाहकैः नयन्ति, अधिकं लघुशकटैः, शकटैः, अश्वशकटैः, आश्वकैः ट्रकयानैश्च नयन्ति।

एकदा देवदत्तस्य पण्यानि करशालिकेन करशालिकायां अवरुद्धानि, तदा देवदत्तस्य कर्मचारी तत्र गतः, करं च दत्त्वा पण्यानि आनयत्। करस्य प्राप्तिपत्रं च तेन आनीतम् देवदत्तस्यावलोकनाय।

देवदत्तः आयकरं, विक्रयकरं, आयातशुल्कं, निर्यातशुल्कञ्च राज्याय प्रयच्छति। आयकर-निर्धारणं आयकरस्य उच्चाधिकारी ताभिः पंजिकाभिः करोति, यासु देवदत्तस्य लेखाकारः आय-व्यय विवरणं लिखति।

देवदत्तस्य सन्ति अनेके कर्मचारिणः वैतनिकाः दैनिकादेयाश्च। तेषामस्ति उपस्थितिपंजिकापि, यस्यां कर्मचारिणामुपस्थित्यनुपस्थित्यौ अङ्किते भवतः। तेनैव तेभ्यः देयस्य धनस्य गणनाकरोति लेखाकारः।

अनेके व्यापारिणः दूरभाषेनैव देवदत्ताय आदेशं यच्छन्ति, सोऽपि आदेशानुकूलानि पण्यानि वैवरणिकम् च तेभ्यः प्रेष्यति।

देवदत्तस्य भ्राता अस्ति आदायजीवकः सः आदेयं गृहीत्वा पण्यानि विक्रीणाति। सः सर्वेषां विश्वस्तः अस्ति यतो हि सः नास्ति कैतवी।

पुरतः याः काष्ठिकाः सन्ति, तासु चान्द्रलौहेषु च भारितानि सन्ति नानाविधानि द्रव्याणि, यानि व्यापारार्थं तत्र स्थापितानि सन्ति ।

देवदत्तस्य तस्यानुजस्य स व्यापार. अस्ति उत्तरोत्तर-संवृद्धः ।

अभ्यास—इस पाठ में व्यापार में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का ज्ञान कराया गया है, उनके अर्थ याद कीजिए :—

विपणिः	बाजार	निर्यातम्	एक्सपोर्ट (बाहर भेजना)
पंजीकृतः	रजिस्टर्ड	पण्यानां	बेचने की वस्तुओं का
आपणः	दुकान	अर्घापचितिः	मन्दी
आपणिकः	दुकानदार	अर्घापच्चितिः	तेजी
मूलधनम्	मूलधन	ऋणत्वेन	उधार
अनुमानितं मूल्यम्	वैल्यू	मौद्रिकत्वेन	कैश
अभिकरणम्	एजेन्सी	मौद्रिकपत्रम्	कैशमेमो
अधिकर्ता	एजेन्ट	मुद्राभिः	करेन्सी के द्वारा
गोधूमानां	गेहूं का	मुद्रापत्रैः	नोटों के द्वारा
अधमर्णः	कर्जा लेनेवाला	विवरणम्	खुलासा (पर्टिकुलर्स)
कुसीदम्	ब्याज-सूद	प्रमाणीकरोति	तसदीक करता है
सङ्ग्रहण	स्टोर	प्रतिलिपि	डुप्लीकेट कापी
शणपुटी	बोरी	प्रेष्यति	भेजता है
शणपुट	बोरा	अल्पं	थोडा
आयातितानि (विदेश से मंगाया हुआ)	इम्पोर्टेड	ईषदधिकम्	थोडा-बहुत
		अधिकम्	ज्यादा
लघुशकटम्	हाथ रेहडी	आयकरः	इन्कम टैक्स
शकटम्	बैलगाडी	विक्रयकरः	सेल टैक्स
अश्वशकटम्	घोडे वाला रेहडा	आयात शुल्कम्	लाने की चुंगी

आश्विकम्	तांगा	निर्यात शुल्कम्	बाहर भेजने की चुंगी
ट्रकयानम्	ट्रक	आयकर निर्वारणम्	टैक्स निश्चित करना
करशालिकाः	चुंगी अधिकारी	उच्चाधिकारी	ऑफिसर
करशालिका	चुंगी	पञ्जिका	रजिस्टर
प्राप्तिपत्रम्	पहुँच (रसीद)	लेखकारः	मुनीम
आय-व्यय-विवरणम्	लेखा-जोखा	वैतनिकः	वेतन पर काम करने वाला
उपस्थिति-पञ्जिका	हाजिरी रजिस्टर	दैनिकादेयः	रोज की मजदूरी पर काम करने वाला
दूरभाषः	टेलीफोन	आदेशः	आर्डर
वैवरणिकम्	विल	आदाय जीवकः	कमीशन एजेन्ट
विश्वस्तः	विश्वासपात्र (ईमानदार)	आयदेम्	कमीशन
कैतवी	बेईमान	काष्ठिकाः	लकडी की पेटियाँ
चान्द्रलौहम्	कनस्तर	भरितानि	भरे हुए
उत्तरोत्तर-संवृद्ध	प्रतिदिन वढता हुआ		

कुछ अन्य व्यापारिक शब्द

तुला	तराजू	आदेशपत्रम्	आर्डर फार्म
तोलकम्	कांटा	उपहारः	भेट
साक्षिकः,प्रतिभूः	गवाह	धनराशिः	रकम
दण्डः	जुर्माना	वणिक् पंजिका	बही
तोलनम्	तोलना	नीलिका	नीली स्याही
मूल्यम्, शुल्कम्	दाम	रक्तिका	लाल स्याही
तुलामानम्	बाट	धारालेखनी	फाउन्टेन पेन



नवचत्वारिंशः पाठः

(जातिवाचक-शब्दाः)

कोऽस्त्ययम् ?

अयं अस्ति तक्षकः । सः क्रकचेन काष्ठं कृन्तति, आविधेन काष्ठं छिद्रं करोति, तक्षण्या च काष्ठं तक्षति ।

कोऽस्त्ययम् ?

अयमस्ति कुलालः । स आपाके घटान्, इष्टकाः, शरावकान् च संपचति । चक्रे मृत्पिण्डं च स्थापयित्वा यथाभिलषितानि पात्राणि रचयति ।

कोऽस्त्ययम् ?

अयमस्ति सौचिकः, यः सीवनयन्त्रेण वस्त्राणि सीव्यति सूचिकया च सूत्रशिल्पमपि करोति । सूचिकर्म एव अस्य वृत्तिः ।

कोऽस्त्ययम् ?

अयमस्ति चर्मकारः, यः चर्मणा पदत्राणानि रचयति, मम श्यामे उपानहौ अनेनैव रचिते ।

कोऽस्त्ययम् ?

अयं स्थपतिः । एषः इष्टकाभिः आश्मिकेन च भवनानि रचयति । अस्माकं भवनं अनेनैव रचितम् । कुशलोऽयं स्थपतिः ।

कोऽस्त्ययम् ?

अयमस्ति तैलिकः । अयं तैलयन्त्रेण तिलेभ्यः तैलम् स्त्रावयति । पुष्पाणि तैलञ्च युगपदेव पक्त्वा सुगन्धतैलं च आविष्करोति ।

कोऽस्त्ययम् ?

अयमस्ति लौहकारः, अयं लौहेन, क्रकचानि हलानि च

रचयति । आदौ लौहं अग्निना तापयति, तप्तं लौहं अयोघनेन पुनः पुनः ताडयति तेन यथाभिलषितानि वस्तूनि रचयति : अयं परशुः अयं कटाहश्च, अनेनैव निर्मितः ।

कोऽस्त्ययम् ?

अयमस्ति नापितः । अयं क्षुरेण केशान् मुण्डयति, कर्तन्या च केशान् कर्तित्वा केशश्रृंगारं रचयति । एषः केशकर्तनयन्त्रेणापि केशान् कृन्तति । केशप्रसाधनानि कृत्वा एषः मुकुरं दर्शयति, मुकुरे स्वकीयं केशश्रृंगारं दृष्ट्वा जनाः प्रमुदिताः भवन्ति ।

अन्य शब्द—

क्षुरकम्- ब्लेड	ऐन्द्रजालिकः—मदारी	शौण्डिकः—कलाल
उपक्षुरम्- सेफ्टी रेजर	अहितुण्डिक—सपेरा	कारुकः—कारीगर
रजकः- रगरेज	मालाकारः—माली	कृषकः—किसान.
तन्तुवायः- जुलाहा	नाविकः—केवट	क्षेत्रम्, केदारः—खेत
समार्जकः- मेहतर	अरित्रम्—चप्पू	खनित्रम्-फावडा
मार्जनी- झाडू	नौका-नाव	वृश्चनः—छेनी
कण्डोलः- टोकरी	जलवाहः-कहार	द्रावकः—मोम
रजकः- धोबी	चित्रकारः—चित्रकार	व्यंगचित्रम्-कार्टून

पाठ में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ—

तक्षकः (प्र०)—बढई	तैलिकः— (प्र०)—तेली
क्रकचेन (तृ०)—आरे से	तैलयन्त्रेण (तृ०)—कोल्हू से
आविधेन (आविधम् तृ०)—वरमे से	युगपदेव (अव्य०)—एक साथ ही
तक्षण्या—(तक्षणी तृ०)—वसूले से	लौहकारः (प्र०)—लुहार
तक्षति—छीलता है	अयोघनेन (तृ०)—हथोडे से
कुलालः (प्र०)—कुम्हार	परशु. (प्र०)—कुल्हाडा
आपाके (स०)—आवे में	कटाहः (प्र०)—कडाहा

इष्टकाः (द्वि०)–ईंटें
शरावकान् (द्वि०)–सकोरे
सौचिकः (प्र०)–दर्जी
सीवन–यन्त्रेण (तृ०)–दर्जी की मशीन
सूत्र–शिल्यम् (तृ०)–कढाई
सूचिकया (द्वि०)–सुई से
वृत्तिः (प्र०)–रोजी
पदत्राणानि (द्वि०)–जूते
स्थपतिः (प्र०)–राज
आश्मिकेन (तृ०)–सीमेंट से

नापितः (प्र०)–नाई
क्षुरेण (तृ०)–उस्तरे से
कर्तन्या (तृ०)–कैंची से
केशकर्तनयन्त्रेण (तृ०) बाल काटने की मशीन
मुकुरं (द्वि०) शीशा
सूचीकर्म (प्र०)–सिलाई
चर्मकारः (प्र०)–चमार
उपानहौ (द्वि०)-बूटों की जोडी
इष्टकाभिः (तृ०)–इंटों से

सम्बन्ध–सूचक शब्द

प्रपितामहः	परदादा	श्वसुरः	ससुर
प्रपितामही	परदादी	श्वश्रूः	सास
पितामहः	दादा	देवरः	देवर
पितामही	दादी	ननन्दा	ननद
जनकः, पिता	पिता	जामाता	जवाई
जननी, माता	माता	आवुत्तः	बहनोई
पितृव्यः	चाचा	श्यालः	साला
पितृव्या	चाची	श्याला	साली
पितृव्यः	ताया	भागिनेयः	भानजा
पितृव्या	ताई	भागिनेयी	भानजी
अग्रजः	बडा भाई	पितृष्वसा	बूआ
भ्रातृजाया	भाभी	पितृष्वसृपतिः	फूफा

अनुजः	छोटा भाई	मातृष्वसृपतिः	मौसा
अग्रजा	बडी बहिन	मातृष्वसा	मौसी
अनुजा	छोटी बहिन	दौहित्रः	दोहता
भ्रातृजा	भतीजी	मातृष्वस्त्रीयः	मौसी का बेटा
भ्रात्रीयः	भतीजा	मातुलः	मामा
पुत्रः, सुतः	बेटा	मातुली	मामी
पुत्री, सुता	बेटी	मातामहः	नाना
पौत्रः	पोता	मातामही	नानी
पौत्री	पोती	भार्या, अर्धांगिनी	पत्नी

शृंगार प्रसाधनों के लिये शब्द

दर्पणः, मुकुरः	आयना	गन्धतैलम्	इत्र
कंकतिका, प्रसाधनिका	कंघी	कज्जलम्	काजल
शृंगार-पीठम्	ड्रेसिंग टेबल	शृंगाराधानम्	सिंगारदान
रोममार्जक	ब्रुश	दन्तमार्जकम्	दांत का ब्रुश
स्नेह्यम्	क्रीम	हैमम्	स्नो
फेनिलम्	साबुन	सौन्दर्य-बिन्दुः	ब्यूटी स्पॉट
मञ्जनम्	मंजन	नखरंजिका	नेल पालिश
ओष्ठरंजिका	लिपस्टिक	गान्धिकम्	पाउडर
तिलकम्	बिन्दी	कपोलरंजनम्	लाली

आफिस के लिये शब्द

कार्यालयः	आफिस	प्रतिहारी	अर्दली
प्रबन्धकः	मैनेजर	भृत्यः	चपरासी
लेखापालः	कैशियर	पंजिका	रजिस्टर
भृत्यः	नौकर	मसिपात्रम्	दवात
वेतनम्	वेतन	आसन्दिका	कुर्सी

वैतनिकः	वेतन पर काम करने वाला	दैनिकदेयः	रोज की मजदूरी पर काम करने वाला
कृतपीठम्	टेबल	धारालेखनी	फाउन्टेन पेन
दैनन्दिनी	डायरी	दूरभाषः	टेलीफोन
पदयानम	साइकिल	लिपिकः	क्लर्क
पदयानिकः	साइकिलिस्ट	प्रधानलिपिकः	हेड क्लर्क
पुस्तकाधानम्	बुकरैक	उपस्करः	फर्नीचर
कोषिका	फाइल	संवेश	स्टूल

विद्यालय में प्रयुक्त शब्द

आचार्यः	प्रिंसिपल	प्रबन्धकः	मैनेजर
उपाचार्यः	वाइस-प्रिंसिपल	कुलपतिः	चांसलर
अध्यापकः	टीचर	प्राध्यापकः	प्रोफेसर
छात्रः (पु०)	स्टुडेंट	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	हायर सेकेन्ड्री स्कूल
छात्रा (स्त्री०)	,,		
पाठशाला	स्कूल	प्रावरणम्	जिल्द
विद्यालयः	हाईस्कूल	यशदिका	पेंसिल
महाविद्यालयः	कालेज	लेखनी	कलम
विश्वविद्यालयः	यूनिवर्सिटी	मसिः	स्याही
पाठ्यपुस्तकम्	कोर्सबुक	धारालेखनी	फाउन्टेन पैन
लिपिकः	क्लर्क	संचिका	कापी
प्रधान लिपिकः	हैड क्लर्क	अश्मिका	स्लेट
पंजिका	रजिस्टर	अवकाशवेला	छुट्टी का समय
उपस्थिति-पंजिका	हाजिरी रजिस्टर	दैनन्दिनी	डायरी
समय-सारिणी	टाइम टेबल	अनुशासनम्	डिसीप्लिन
कक्षा	क्लास	कागदम्	कागज

सहपाठी, सतीर्थ्य:	क्लासफैलो	मार्जक:	रबड
वेष्टनम्	बस्ता	महासन्दिका	बेंच
आसन्दिका	कुर्सी	लेखपीठम्	डेस्क
संवेश:	स्टूल	कृतपीठम्	मेज
उपस्कर:	फर्नीचर	पुस्तकाधानम्	बुकरैक
काष्ठाधानम्	अलमारी	प्रमार्जक:	डस्टर
श्वेतिका	चाक	कोषिका	फाइल
श्यामपट्ट:	ब्लैक,बोर्ड	मसिपात्रम्	दवात
लेखनीमुखम्	निब	अंका:	नम्बर
पृष्ठम्	पेज	अवकाश:	छुट्टी
उपस्थिति:	हाजिरी	अनुपस्थिति:	गैरहाजिरी

पात्राणि

हसन्ती	अंगीठी	कंस:	गिलास
चुल्ली	चूल्हा	काचकंस:	कांच का गिलास
धिषणा	परात	कटोरकम्	कटोरा
ऋजीषम्	तवा	कटोरिका	कटोरी
दर्वी	कडछी	चषक:	प्याली
स्थाली	पतीली	स्थालिका	थाली
स्वेदनी	कडाही	शराव:	प्लेट
सन्दंश:	चिमटा	निष्कलंकआयस-पात्रम्	स्टेनलैस स्टील के बर्तन
करक:	लोटा		
द्रोणक:	टब	महाचषक:	जग
धावनी	चिलमची	कुम्भ:	घडा
उदञ्चनम्	बाल्टी	उद्ध्मानम्	स्टोव
चमस:	चम्मच		

खाद्य–भोज्यानि

महानसम्	रसोई घर	गोधूमः	गेहूं
पाकशाला	रसोई घर	यवः	जौ
ईन्धनम्	ईंधन	चणकः	चने
अंगारकम्	अंगारे	आलुः (पु०)	आलू
दारुः	लकडी	शस्यम्	मकई
अंगारकीयम्	कोयला	चणकीयः	बेसन
लवणम्	नमक	गोधूमीयः	आटा
मरीचम्	मिर्च	कृशरा	खिचडी
हरिद्रा	हल्दी	गोभिका	गोभी
व्यंजनम्	मसाला	सौरभम्	गर्म मसाला
हिंगु	हींग	प्रियङ्गुः	बाजरा
पूगीफलम्	सुपारी	माषः	उडंद
एलाफलम्	इलायची	मुद्ग	मूंग
जीरकम्	जीरा	गृंजनम्	गाजर
दारुत्वचम्	दालचीनी	पलाण्डुः	प्याज़
पक्वान्नम्	पका अन्न	दुग्धम्	दूध
आमान्नम्	कच्चा अन्न	दधि	दही
जालिनी	तोरडी	नवनीतम्	मक्खन
ताम्बूलम्	पान	तक्रम्	लस्सी
वास्तुकम्	बथुवा	पालकी	पालक
अलाबुः	कद्दू	वृन्तम्	डंठल
पायसम्	खीर	अपूपिका	पूडी
रोटिका, पोलिका	रोटी	अपूपः	पूडा
आर्द्रकम्	अदरक	जम्बीरः	नींबू

सन्धानम्	अचार	लशुनम्	लहसन
आढकीदलम्	अरहर-दाल	टिंडिशः	टिंडा
कूष्माण्डम्	पेठा	कारवेल्लम्	करेला
कर्कटी	ककडी	तुम्बी	घीया
चर्मटी	खीरा	वृन्ताकम्	बैंगन
भिण्डिका	भिंडी	रक्तालुः	टमाटर
मूलिका	मूली	श्वेतकन्दम्	शलजम
पर्णम्	पत्ते	गोधूमपाकः	हलवा
ओदनम्	भात		

शरीर के अंग

शीर्षम्	सिर	कर्णः, श्रुतिः	कान
केशाः	बाल	ग्रीवा, कण्ठः	गर्दन
ललाटम्	माथा	कपोलः	गाल
कटिः श्रोणिः	कमर	पृष्ठम्	पीठ
भ्रूः (स्त्री०)	भौंहें	वक्षस्थलम्	छाती
लोचनम्, नेत्रम्	नेत्र	भुजा	बाहें
पक्ष्म (नपुं०)	पलक	करः, पाणिः	हाथ
पक्ष्मरोम (नपुं०)	पलक-रोम	अंगुलिः	अंगुली
नासिका	नाक	अंगुष्ठः	अगूठा
मुखम्, आस्यम्	मुख	तर्जनी	अंगूठे के साथ की अंगुली
दन्ताः, दशनाः	दांत	मध्यमा	बीज की अंगुली
ओष्ठः, अधरः	ओठ	अनामिका	बीच के साथ की
चिबुकः,	ठोडी	कनिष्ठिका	छोटी अंगुली
जिह्वा, रसना	जीभ	करतलम्	हथेली

नाक्तिकम्	नाइटड्रेस	तिरस्करिणी	परदा
तूलसन्तरणम्	गद्दा	कम्बलः	कम्बल

सेना—सम्बन्धी शब्द

आहवः, संगरः	युद्ध	जलपोतः	पानी का जहाज
परमाण्वस्त्रम्	एटम बम	वाष्पपरमाण्वस्त्रम्	हाईड्रोजन बम
खड्गः, करवालः	तलवार	भुशुंडिः	बन्दूक
भुशुंडिका	पिस्तौल	शतघ्नी	तोप
गुलिका, सीसिका	गोली	लौहिकम्	गोला
लक्ष्यम्	निशाना	आयुधम्, शस्त्रास्त्रम्	हथियार
जलान्तरितपोत	पनडुब्बी	आग्नेयास्त्रम्	बम
जीपयानम्	जीप	कवचयानम्	बखतरबंद गाडी
पटगृहम्	तम्बू, टैंट	अतन्त्रभाषिन्	वायरलेस
युद्धपोतः	लडाकू जहाज	वायुयानः	हवाई जहाज
वायवीयाक्रमणम्	हवाई हमला	आक्रमणम्	हमला
वैजयन्ती	झंडा	व्यूह-रचना	मोर्चाबन्दी
सैनिकः	फौजी	सैन्यवेषः	वर्दी
शिरस्त्राणम्	लोहे का टोप	संवेषः	यूनिफार्म
शवः	लाश	आग्नेयचूर्णम्	बारूद
करलौहिकम्	हथगोला	सीसिकावर्षिणी	मशीनगन
प्रक्षेपास्त्रम्	मिसाइल	आकाशवाणिकः	रेडियो
शिविर	छावनी	आयुधागारम्	बारूदखाना
स्थलसेनाध्यक्षः	पैदल सेना का सेनापति	वायुसेनाध्यक्षः	हवाई सेना का सेनापति
जलसेनाध्यक्षः	जलसेना का सेनापति	सेनारक्षिन्	मिलिट्री पुलिस

स्वचालितम्	आटोमैटिक	सेनापतिः	मेजर
उपसेनापतिः	कैप्टन	पदातिः	पैदल सैनिक
अश्वारोहः	घुडसवार	आक्रमणसूचकः	राडार
वायुयानघ्नी	विमानभेदी तोप	शल्यम्	बरछी
गुप्तचरः	जासूस	पदाभिधानम्	रैंक

सामान्य प्रयोग के शब्द

पुलिस ●

आरक्षण-विभागः	पुलिस
आरक्षी (आरक्षिन्)	सिपाही
आरक्षणसंस्थानम्	थाना
आरक्षणाधिपः	थानेदार
कारावासः	कैद
दण्डः	जुर्माना
अश्रुस्राविकम्	टीयर गैस
कारा	जेल
कारागारः	जेलखाना
उत्कोचः	रिश्वत

● संसदीय

संसद्	पार्लियामेंट
राज्य-सभा	राज्य-सभा
लोक-सभा	लोक-सभा
विधान-सभा	विधान-सभा
सदस्यः	मेम्बर
प्रमुखमन्त्री	प्राइममिनिस्टर
प्रधान सचिव	चीफ मिनिस्टर

● यात्रा-सम्बन्धी

रेलयानम्, वाष्पयानम्	रेल
आयसिका	लाइन
शृंखलकम्	सिगनल
यात्रापत्रम्	टिकट
पारपत्रम्	पासपोर्ट
संस्थानम्	स्टेशन
मोटरयानम्	मोटर

कार्पोरेशन ●

नगरम्	शहर
नगर-निगमः	कार्पोरेशन
निगमाध्यक्षः	मेयर
विद्युद्विभागः	बिजली-विभाग

विद्युत्संस्थानम्	इलैक्ट्रिक स्टेशन	मोटर-यानिका	मोटर साईकल
उपविद्युत्संस्थानम्	सबइलैक्ट्रिक स्टेशन	पदयानम्	साइकिल
निगम-पार्षदः	कार्पोरेशन मेम्बर	चालकः	ड्राइवर

डाकखाने के लिये उपयोगी शब्द

पत्रालयः	पोस्ट ऑफिस	विद्युत्सन्देशः	तार
पत्रालयाध्यक्षः	पोस्ट मास्टर	धनादेशः	मनिआर्डर
अन्तः-पत्रम्	लिफाफा	आदायादेशः	वी. पी.
पत्रम्	पोस्ट कार्ड	पत्राचारः	पत्र-व्यवहार
अन्तर्देशीय पत्रम्	इन्लैण्ड लैटर	पत्रमंजूषिका	लैटर बक्स
पञ्जीकृतम्	रजिस्टर्ड	पत्रवाहकः	पोस्ट-मैन
पञ्जीकरणम्	रजिस्ट्रेशन	त्वरीयपत्रम्	एक्सप्रेस
मुद्रीयम्	टिकट (स्टैम्प)	वायवीयपत्रम्	हवाई डाक
मुद्राङ्कितम्	स्टैम्प्ड		

